राजस्थानी निबंध-माळा

(जागती जोत रो निबन्ध-अङ्क)

●

सम्पादक

डा० मनोहर शर्मा

●

प्रकाशक

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक—

धनञ्जय वर्मा
सहायक सचिव
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर (राजस्थान)

सम्पादक—

डा० मनोहर शर्मा

संस्करण— ५०० प्रतियां, सन् १९७७ ई०

मोल—आठ रुपया

मुद्रक—

माहेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस
बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशकीय

लारलै तीस-चाळीस बरसां में प्राचीन राजस्थानी साहित्य री सोध खोज, लोक-साहित्य रै संग्रह-सम्पादन अर नवीन साहित्य रै निर्माण री दिशा में मोकळो काम हुयो है अर अब भी औ काम सतत गति सूं उत्साह सार्थ चालू है।

आज राजस्थानी भाषा में पद्य सार्थ गद्य री विविध विधावां में भी अनेक उपयोगी अर महत्त्वपूर्ण रचनावां प्रकाशित हुय रैयी है पण हाल-ताई निबंध री प्रगति संतोषजनक नीं है अर आ कमी खटकै है।

सार्थ ई ध्यान राखणो चाईजै कै राजस्थानी में अनेक समर्थ निबंध-लेखक मौजूद है पण वां री रचनावां रै प्रकाशन री समुचित व्यवस्था नी हुवण रै कारण वै उत्साहित नी हुय रैया है।

ईं सारी स्थिति नै ध्यान में राखर राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) री ओर सूं 'राजस्थानी निबंध-माळा' रै रूप में औ संग्रह साहित्य-प्रेमियां री सेवा में प्रस्तुत कर्‌यो गयो है। आशा है, ईं प्रकाशन सूं राजस्थानी री निबंध-विधा गतिशील हुयर आगै वधसी।

ईं संग्रह में राजस्थानी रा २२ महत्त्वपूर्ण निबंध संकलित है अर वै विषय तथा शैली रै विचार सूं विविध प्रकार रा है।

प्रस्तुत प्रकाशन खातर सम्पादक अर लेखकां रो पूरो सहयोग मिल्यो, आ चीज राजस्थानी साहित्य री प्रगति रो शुभ लक्षण है। संगम री तरफ सूं वां सगळां रो हार्दिक आभार स्वीकार करयो जावै है।

धनंजय वर्मा
सहायक सचिव
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर (राजस्थान)

आधुनिक राजस्थानी में पद्य सार्थे गद्य री विविध विधावा में भी तीव्र गति सूं रचनावां त्यार हुय रैई है पण नाटक अर निबंध री कमी घणी अखरै है। नाटक री कमी तो किणी अंश में फेर भी एकांकिया सूं पूरी हुय रैई है पण निबंधां री तो नितान्त ही कमी है। लेख तो मोकळा लिख्या जावै है पण निबंध तो कदे-कदे ही किणी पत्रिका में नजर आवै।

यथार्थ है कै साहित्यकार री कसोटी गद्य है तो गद्य-लेखक री कसोटी निबंध है। निबंध में कई इसी खूबियां हुवणी जरूरी है, जिकी किणी साधारण लेखक रै बस री बात कोनी। राजस्थानी में समर्थ निबंध-लेखक अनेक है पण प्रकाशन-सुविधा री कमी रै कारण वां री लेखनी रो प्रसाद साहित्य-जगत नै सुलभ नी हुय रैयो है।

'राजस्थानी भाषा साहित्य संगम' बीकानेर ई कमी नै अनुभव करी अर एक राजस्थानी निबंध-संग्रह प्रकाशित करणे रो महत्त्वपूर्ण निर्णय लियो। इण सूं पहली भी अकादमी री ओर सूं एक राजस्थानी निबंध-संग्रह प्रकाशित हुय चुक्यो है पण इतरै बरसां में तो राजस्थानी भौत घणी आगै बध चुकी है अर गद्य री दूजी-दूजी विधावा सार्थे निबंध भी प्रगति करी है।

प्रस्तुत संग्रह में बाईस राजस्थानी निबंध प्रकाशित कर्या गया है। ये निबंध न्यारी-न्यारी शैलिया में है अर अनेक प्रकार रा है। लेखक रो व्यक्तिगत अनुभव अर उण रै प्रस्तुतीकरण री शैली निबंध री खास विशेषतावां हुवै। संकलन रै प्रायः सगळै ई निबंधां में ये खूबियां मिलसी। फेर भी संग्रह रा कुछेक निबंध इसा भी हुय सकै है जिका लेख रूप सा प्रतीत हुवै। ये निबन्ध विषय री विविधता रै विचार सूं ई संग्रह में सामिल कर्या गया है। लारला दो निबन्ध अंग्रेजी (*El Dorado*). तथा गुजराती (युगधर्म-मैत्रीसाधना) रा अनुवाद है।

संग्रह रा सगळा ही निबन्ध समर्थ लेखकां रा लिख्योड़ा है अर राजस्थानी निबन्ध री प्रगति रा सूचक हैं। फेर भी ई संग्रह रै महत्त्व रो निर्णय तो सुविज्ञ समीक्षक ही करसी।

प्रस्तुत निबंध-संग्रह रै सम्पादन में विद्वान् लेखकां रो सराहनीय सहयोग प्राप्त हुयो। मूळ रूप में यो लेखकां री कृपा रो ई सुफळ है। आशा है, ई प्रकाशन सूं राजस्थानी-निबंध ओर भी आगै बधसी अर नया-नया लेखक प्रकाश में आयर राजस्थानी रै साहित्य री श्रीवृद्धि करसी।

मनोहर शर्मा

टीप

भल लूआं बाजो फिती

मरु-भोम – म्हारी आ मायड भोम, जुगा-जुगां सू बिसराइजती रैयी है। खासकर साहित्य में तो आ सदा ही दु:ख, निराशा अर सूनेपण रै प्रतीक रूप ही मांण्डीजती रैयी है। मरु-भोम अथवा रेगिस्तान रो नाव सुणतां ही लोगा रा मुंह किरकिरा हुय ज्यावै, बारी दीठ में रेत रो समन्दर पसर ज्यावै अर बांरी कल्पना मे तिरण लागै है— कुदरत रो एक लूखो अर भूण्डो सो चित्राम।

ऐड़ी हालत में अठै रै कुदरती फुटरापै री बात करणी लोगा नै अपरोगी लागैली, पण के साचै अठै रै कुदरती फुटरापै री बात करणी अणुतो कळाप करणो हुवैला? के मरु-भोम—म्हारी आ मायड़ भोम, इसो लूखो अर होण है कै ईं पर चरचा करता ही सरमीजा? के अठै रा लोगां री जिदगानी भी इत्ती ही लूखी-सूखी अर उछाव सूं सुनी है? के खैंखांट करती आंध्यां, बळबळती लूआं अर आभै सूं बतळा करता घड़ी-घड़ी उठणिया बभूळिया ही ईं प्रदेस रो साच है? जद हूं आं अर आ जिसी दूजी सगळी बातां माथै बिचारूं तो म्हनै की दूजी ही साच निजर आवै।

च्यारूं मेर पसरयोड़ा ऊजळ-निरमळ रेत आळा धोरा विरानगी रो नी, पवित्रता अर निरमळता रो अहसास करावै। समन्दरी छोळा सा पसरयोड़ा आं धोरां पर कुदरत पून रै हळवा हाथा नित नूंवा चित्राम मांडै। कुदरत री आ हरकत देख'र यूं लखावै जाणै कुदरत दुनियां रै बीजा भागा मे जका फूटरा सूं फूटरा चित्राम मांडै, बारो पूर्वाभ्यास बा अठै करै। धोरा रो ओ स्वच्छ कैनवास बींरो खातर कोरी स्लैट रो काम करै जिण माथै बा भांत-भांत रा चित्राम माण्डै अर मिटावै। ईं दौरान जिका रूप बी नै दाय आवै, बानै बा फाइनल रूप मे दूजी-दूजी ठोडा मांडै। कुदरत रो ओ व्यापार किणी गुणी कलाकार री सृजन-प्रक्रिया रो अहसास करावै।

म्हारी ऊपरली बातां शायद कई जणा नै अणूती कल्पनावा लागैली अथवा कोरी भावुकता लखावैलो। पण न अै अणूती कल्पनावा है अर न ही आ कोरी भावुकता

है। आ वा दीठ है, जको कै मायड़ भोम रै प्रति गाढ़ै हेत सूं ऊपजै। भ्रं ई भावनावां रै जड़ी आपरी धरती री धूड़ में रम्यां-बस्यां जनमै। भ्रो बो हेत है, जको'क आपरी धरती री एक एक धड़कण अर एक-एक सांस रो लेखो-जोखो राख्यां चालै। भ्रो बो समर्पण भाव है, जठै—'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी' री बात भली-भांत साच लखावै। इसी मनगत में डूब'र कोई कवि गा उठै तो बेजा कांई—

आ तो सुरगां नै सरमावै
ई पर देव रमण नै आवै
ई रो जस नर नारी गावै।
धरती धोरां री

सूरज कण-कण नै चमकावै
चन्दो इमरत रस बरसावै
तारा निरछावळ वर ज्यावै
धरती धोरां री।

आ अनुभूति किणी एक ही कवि री हुवै, सो भी बात नीं है। अठै तो जुगां जुगां सूं अलेखूं कवियां नै मायड़ भोम रै इणी हेत में आपाद-मस्तक भीजतां देखां। जूनां अर नूंवां सगळा कवियां री रचनावां में मायड़-भोम रो भ्रो हेत खरै रूप में प्रगट्यो है। आज सूं कोई पांच सईकां पैलां रो कवि भी इणी हेत में डूब'र लिख्यो हो—

बाजरियां हरयाळियां, बिच-बिच बेला फूल।
जइ भर वूठउ भादवउ, (तउ) मारू देस अमूल॥

मारू देस रो भ्रो अमोलक रूप खाली कवि-कलाकारां रै दिल में ही बसै, सो भी बात नी है। अठै तो जणो-जणो ई अमोलक रूप पर रीझतो निजर आवै। भ्रोर तो भ्रोर, हजारूं कोस आन्तरै बैठ्या धन-लोभी कईजणिया प्रवासी राजस्थानी भी आपनैं ई भोम खातर झूरता निजर आवैला। ईं धरती री भ्रोळ्यूं मे आमण दूमणा बैठ्या वां प्रवास्यां नै सगळी भौतिक सुविधावां भी कठै बिलमा सकै? जणै तो एयरकंडीशण्ड बगलां में भी वां रो जी कसमसावै अर बठै भी वां नै ऊजळ बेकळू मे गट्टा माटी खावण रा सुपना आवै। मीठा मतीरां री याद मे वानै दाख अर दाड़िम रा भोग भी फीका लागै, मिट्टा रै मीठै मोरण आगै बासमती चावळ भी बेस्वादा लखावै अर काचर, बोरा री हूर मे सेव अर अंगूर भी अणखावणा लागै। इण रो रहस्य कांई है? भ्रो ई धरती अर ईं धरती री कूख सूं नीपजी वस्तुवां रो जबरो आकर्षण ही तो है, भ्रो ईं धरती रै लूंठै हेत रो प्रमाण ही तो हैं।

हुय सकै, म्हारी मैं बातां आपनैं दाय नी आ रैयी हुवै । आप मन-ही-मन सोचता हुवो'कै ओ तो मगूतो ही मोदीजै है । मोडाणी भूंई आठै माथै पळपळाट करतो पितळपानो धेयड़'र तरारयोड़ी संवमरमरी मूरती सूं ओनै इयको बतावै है । आप कैवोला कै ईयां लाम्बी चोडी बातां वधार्यां के मरूभोम री नीरसता सरसता में बदळ जासी ? भळै आप पूछोला'कै जे ई धरती में इत्ता ही गुण हूँवता तो अठै रो कवि ही आ बात क्यूं कैवतो—

जिण भुंइ पुन्नग पींयणा, कयर कंटाळा रूंख ।
आकै फोगे छांहडी, हूंछा भाजै भूख ।।

ओं भोम माथै हरियाळी रै नाम पर कटीला कैर, आकड़ा अर फोगड़ा ही लाधै अर जठै पेट भरण खातर भुरट रा कांटा तकात खावणा पडै, काई पड्यो है, वीं धरती मे । ई धरती रो इत्तो गुमान, जिणरै घातक सूं छोर्यां मारवाड में ब्याहीजण रो ठोड आखी ऊमर कवारी रैवणो कबूलै—

बाबा म देई मारूवां, वर कुआरि रहेसि ।
हाथ कचोळो, सिर घड़ो, सींचतो य मरेसि ।।

साची ही बात है ! भला इसो भोम मे रैवण सूं भो काई लाभ, जठै पाणी खातर आधी रात नैं प्रीतम छोड़णो पड़ै -

बाळुं बाबा देसड़ो, पाणी सदी ताति ।
पाणी केरै कारणै प्री छडै अध राति ।।

अब आप ही सोचो, इसी भोम वास्तै मोदीजणो गूंगोपणो नी, तो ओर कांई है ? पलेक तो विचारो'कै जठै हिमाच्छादित पर्वत-श्रृंखलावा नीं, जठै कसमसातो छोळा आळो समंदर नी, जठै इठळाती-बळखाती नदियां नीं अर जठै केसर क्यार्यां अर केवडै री बाड़्यां नीं वीं भोम रो मिनख जे आप रै कुदरती-फुटरापै वास्तै मोदीजै तो ई सूं बेसी निसरमाई कांई हुसी ?

मारूं कै कसमीर री घाट्या मे ठोड-ठोड पसरयोड़ै फुटरापै नै, कन्याकुमारी रै लोलै समन्दर में भाखर मान उछाळती-गिरती छोळां रै मनभावतै नजारै नैं अर हिमाळै री आभै सूं बाता करती विराट हिमाच्छादित सिखरां री ओपती आभा नै निरखण रो मोको म्हानैं कोनी मिलै । कुदरती फुटरापै रो ओ राशि-राशि वैभव अठै ही बिखर्योड़ो है पण के बीरै अभाव मे म्हे अठै रै सुरगै सावण नै अण देख्यो कर देवां ? के उन्हाळै री ढळती रात में चाल'ती सोळी-मधरी पून रै आणन्द नै भूल ज्यावां ? के चोमासै मे उमड़-घुमड़ आवती कळायण नै देखर मोद में नाचता मोरियां साथै नाचणो

बन्द कर द्यां ? नां हुवो श्राभै सूं बतळावता हिमाच्छादित सिखर, नां हुवो धीठ रै पसार सूं आवं ताईं फैल्योड़ो लीलो समन्दर, ना हुवो फुटरापै में न्हावती पहाड़ी घाट्यां। म्हे तो म्हारी कुदरत री श्रा छवि ही निरख'र मस्त हां। म्हांरै ईं गैलेपण पर जे कोई हांसै तो भलां ही हांसो। कोई मोटो काव्य शास्त्री म्हारी ईं मनगत पर ब्यंग्य करै तो भलाई करो। म्हे भला थारी पाल्यौ मन रै सहळ उछाव नैं क्यूं रोकल्यां ? किणरी ही विराटता श्रर किण रै ही विस्तार सूं काई होड ? ईं अवसर पर तो मनैं अपभ्रंश रै नामी कवि श्रब्दुर्रहमान री श्रा उकती याद श्राय रैयी है—

जइ बहुल दुद्ध समीलिया य उल्ललई तंदुला खीरी।

ता कण कुक्कु समाहू श्रा रब्बडिया या दडब्बडह ॥

(जे मोक्ळै दूधआळो चावळां री खीर ऊबळै है तो काईं कठा भूसी आळी राबड़ी नीं दडबडावै ?)

जर भरह भाव छन्दे णच्चई णवरंग चंगिमा तरुणी।

ता कि गाय गहिल्लो ताळी सद्दे ण वच्चेई ॥

(जे भरत मुनि द्वारा निर्दिष्ट भावा श्रर छन्दा रै मुजब नूंवै जोबन रै फूटरापै सूं भरपूर तरुणी नाचै तो काई गांव री गहली ताळी बजा'र नी नाचै ?)

काईं हुयो जे ईं धरती री कूख सूं केसर, केवड़ा श्रर चम्पा री मैंक नीं फूटै ? इणा खातर म्हे खुद नै हीण क्यूं समझां ? म्हारी मां री कूख सूं तो जका सन्त, सूरमा श्रर सतिया जलम लियौ है, वारै तप तेज श्रर त्याग री मैंक जुगां-जुगां सूं पून-पाणी में समायोड़ी है। श्रा वा मैंक है,जकी कदै बगत परवाणै मोळी नीं पड़ै। श्रा वा मैंक है, जिणरी गन्ध सूं आज भी मतवाळा मोट्यारां मे मायड भोम खातर होडा-होडी मचै। श्रा वा मैंक है, जकी कर्नल टॉड जिस्या श्रनेकूं परदेस्यां रै मन प्राणां में बसगी। श्रा वा ही गंध है, जकी टैस्सीटोरी जिस्या विद्वानां नैं बिलमा लिया। श्रा वा ही गंध है, जकी बंगला श्रर गुजराती साहित्य नैं सुवासित कर रैयी है। कठै ताईं बखाण करां, ईं धरती री ईं मैंक रो कठै ताईं वखाण करां ईं धरती रै मायलै फुटरापै रो। जे थानै साच्याणी ईं धरती रै मायलै फुटरापै रा दरसण करणा हुवै, जे थे साच्याणी ईं धरती री भरसता नैं देखणी चावो तो घडी एक सगळा पूर्वाग्रहां नैं अळघा राख'र पछै देखो।

फुटरापो ही देखणो हुवै तो ईं धरती रै रैवास्या रो जीवण देखो। कोमलता देखणी हुवै तो वारै हिरदै नैं देखो निरमळता श्रर पवित्रता देखणी हुवै तो बारै श्राचरण नैं देखो। ज्यूं-ज्यूं आप रेगिस्तान रैं मांयलै नैं मांयलै भाग मे बढता जावोला, आपनैं बठै कूवां री ऊंडाई रै अनुपात मे ही मिनखा मे गहराई श्रर गम्भीरता नजर आवैली। ऊडा

कूवां रै मीठै पाणी रै अनुमान ही बांरो स्वभाव अर बरताव मीठो लागैलो । इसा धीरा, मधरा, मिठबोला अर सरल हिरदै आळा लोग आपनै और कठै साधैला ?

कुदरार्ण रै बाद अब रंगी बात सरसता री तो बीरी भी अठै कमी कोनी । आपनै अठै रो लोक-सस्कृति अर लोक-साहित्य मे रस रो अटूट धारा बैंवती निजर आवैली । अर गीतां री तान, बातां रा ठसका, अर नाच-ख्यालां री मोहकता सहजां ही मन नै बिलमा लेवै । मोझळ रात रा भीणा सुर में गूंजता मिसरी-सा मीठा गीत सुण-नियै नै रसमग्न कर देवै । सीयाळै री धुंइ पर रमता 'बातां' रा बोल बात ही बात में कल्पना री रंगीन दुनिया में पुगा देवै । खुला मंचां पर खेलीजता भांत-भांत रा ख्याल हजारूं-हजारूं दिलां री धड़कण नै आपरी मुठ्यां में बान्ध लेवै । अठै रा भांत-भांत रा नाच देख'र तो मन ही नी, तन भी नाचण लागै ।

हुय सकै है'कै अठै आप म्हनै अठै टोको । आप शायद पूछोला कै कुदरती फुटरापे रो अर त्याग-तप रो अथवा लोक सस्कृति रो कोई ताळ मेळ ? ईं सूं बेसी म्हारी बातां सूं भाखता हुय'र आप अठै ताई कैय सको हो कै आं थोथी बातां मे काईं पड़यो है? साच तो ओ है कै निरभागिया अर होणपुण्या मिनख ही ईं धरती पर जलमैं । पूरबला पुन्न ओछा पड़णै रै कारण ही कोई ई मरावोजयोडी जमीं (अभिशप्त भूमि, रो मूंडो देखै अर आखो उमर कुदरत री करडी मार झेलै । दाणै-दाणै ताईं कलाप करणो अर पाणी री एक-एक बूंद खातर थाठूं पोर चोबीप घड़ी बळ बळती लूवां मे भचीड़ा खावणो कुदरत री क्रूर दृष्टि रो परिचायक नी तो और काईं है ?

साच है, आप री बात सोळा आना साच है, पण म्हारी भी एक बात रो जबाब आप तो देवोला । काईं आप बतावोला'कै कुदरत कीं नै बखसै भी है, काईं? ऊंचा-ऊंचा पहाड़ी इलाका मे रैंवणियां के कुदरत री कडी मीट सूं बचै अथवा मैदानां में बसणियां माथै कुदरत री मीट सदा ही भोळी ही रैवै के समन्दर रै नेड़ा रैवणियां नै कुदरत री करारी मार नी झेलणी पड़ै ? भाखरा मे भूस्खलन हुवै जणा बसत्यां री बसत्यां हेटै दब ज्यावै । मैदानी इलाकां में माम-सवाई प्रळयकारी बाढ आवै, जणा लारै काईं रैवै ? अर समन्दरी छोळां ऊफणै जणै तो कोसां तांई मानखै रो तो बात ही कांई कीड़ी तकाद रा खड़-खोज ही ढूंढ्या को लाधै नी । सामूहिक मौत रो इसो तांडव नाच तो मरु-भोम रो मानखो आपरी जिनगानी मे शायद हो कदे देखै । अब तो मानोला कै कुदरत री रीझ अर खीझरी आपरी ऊपरली व्याख्या कूड़ी है।मोको लाग्यां कुदरत बखसै कीनै ही कोनी । जणै फेर खाली मरुभोम रै ही कुदरती क्रिया-कलापां नै क्यूं बखाणो ?

देवण नैं म्हारी ऊपरली बातां रो भो पड़ूत्तर दियो जा सकै है । बात सू बात तो निकळती ही रैवै, बीं रो कोई निवेड़ो आवै ? पण हूं अब घणी बातां नी बंकर

बस एक बात ओर कैवणी चावूं । जका कुदरत री सोवणी गोद मे जनम रो गरब करै, जका आपरै इलाकै रै कुदरती फुटरापै रो बखाण करता नी धापै, वां नै म्हैं एक सुवाल तो पूछां कै थ्रो कुदरती फुटरापो थारै जीवण नै किता'क सजावै-सवारै ? कुदरती फुटरापै रो मेळ पाय'र थांरो जीवण कित्तोक ऊंचो उठग्यो ? के थांरो अन्तर-बाह्य जीवण मरु-भोम रै मानखै री तुलना मे घणो सरस अर सुरंगो बण्यो है ? जद म्हां आ बातां माथै विचार करां तो निराश ही हुवणो पड़ै । लूट-पाट, चोरी डकैती, हत्यावां अर बलात्कारां री जिती वारदातां कुदरत री सोवणी गोद में बस्योड़ा आं मैदानी अंचळां मे हुवै अर मिनख रो जिसो कुत्सित अर काळूंठो रूप बठै देखण नैं मिलै, बींनै देखतां तो मरुभोम रो मानखो घणो सावळ । बींरै अन्तर रै फुटरापै री अर बीं रै हिरदै री उदात्तता री कांईं बात, जको खुद विखो भोग'र भी दूजां रै सुख री कामना करै—

> जिण दिस नर कंवळाठिया, मतना कीज्यो वास ।
> थानै मुरधर झेलसी, थो अर देवो तास ॥

कवि री आ वाणी आखै मरुभोम रै मानखै रै अन्तर रो उजास है इणी खातर हेकड कवि रै सुरां में सुर मिला'र एकर मळै कैस्यां—

> जीवण दाता बादळ्यां, या सूं जीवण पाय ।
> मल लूआं बाजो किती, मुरधर सहसी लाय ॥

अभिनन्दन-ग्रंथ री वेदना

अभिनन्दन भाव-प्रधान प्रक्रिया है अर उण री जलम मन रै मांयलै खण में हुयोड़ो है पण आज बो बारणैं आयर पोथी रै रूप में तन धारण कर लियो।

अभिनन्दन करणो जुग-जुगान्तर सूं चालतो आय रैयो है। या नुवैं जमानै री कोई नुई चेतना कोनी, जी नै दस-बीस जणा त्यार हुयर करणैं सारू खड्या हुवै। 'मन मे जागी अर तन मे लागी' हाळी बात अभिनन्दन री पुराणी परम्परा में कोनी। जद सू मिनख जाग्यो, ग्यान जाग्यो, बूढै-बडेरां रै मान सनमान रो भाव जाग्यो, उण रै साथै ही अभिनन्दन रो जलम हुयो।

जूनै जमानै मे भी अभिनन्दन हुवता रैया है। लोग बडेरां रो मान-सनमान करता आया है पण बी जमानै री एक विशेषता ही कै अभिनन्दन मन सार्थ मुख सूं हुवतो। उण मे तन री पुळक अर मन री मुळक समायोड़ी रैवती। पुराणै जमानै मे अभिनन्दन जीवण मे एक रच्यो-पच्यो भाव हो। जद अभिनन्दन शुद्ध अभिनन्दन ही हो। उण सूं करणिए अर करावणियै रै तन-मन रा तार गूंजता।

राजा-बादसावां रै जमानै रा लाखपसाव अर कोड़ पसाव अभिनन्दन रा ही रूप हा। महाराजा कविराजा नै पालखी मे बिठायर मान-सनमान सूं पलक पांवड़ा बिछावता। गाव रै गौरवै सूं राज-दरबार ताई कविराजा रो अभिनन्दन हुवतो। सारी जनता देखती। बो अभिनन्दन पोथी रूप मे कोनी हो, मांयलै मन रो हो। जणांई बो पक्को अर प्रभावी हो।

आज रो अभिनन्दन तो दो घड़ी री चेळ है। फेर जिया चिड़िया मे माठो पड़ज्या, ज्यूं न अभिनन्दन करणियां रो अतो-पतो लागै अर न करावणिए नैं कोई पूछै-ताछै। आज सारो काम भाड़ै पर करवाल्यो। करणिया घणां ई चक्कर काटता, टोह लगावता फिरै है। धन कमायर धन सूं अभिनन्दन कर द्यो पण मन अर मान कठै? मन बिना अभिनन्दन एक नाटक मात्र हुवै अर बा ही बात आज प्रायः देखणैं में आवै है।

आज अभिनन्दन करावणियं रो कोनी, करणियं रो प्रचार मात्र है। आज पोथ्यां रो अभिनन्दन पोथ्यां मे ही बन्द हुयो पड़यो रवै। एक बर घणी धूम धाम मार्च, लोग भेळा हुवै। छोटा-बडा नेता भेळा हुवै, भावण झाड़ ऊंची ऊंची बातां करै पण ओ नाटक पूरो हुयो अर मेल खतम। आप आप रो हिसाब कर सग्ळा आप-आप रै टिल्लै लागै।

अभिनन्दन करणियां नै छोडो। कई-कई अभिनन्दन करावणियां भी भीतरी रूपमें घणा सक्रिय रवै अर चावै कै म्हारो अभिनन्दन हुवै। ग्रंथ छपै भारी भरकम। बाजा बाजै बडा बडा लोग भेळा हुवै। मन्त्री सूं कम रैंक रो ओहदैदार अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट न करयो तो कांई अभिनन्दन हुयो ?

या गत है, आज रै अभिनन्दन री लोग पोथ्यां पर पोथी छाप रैया है अर लोगां नै धड़ाधड़ भेंट कर रैया है। आज यो भी एक धन्धो बणगो या बणा लियो गयो, कुण जाणै ? पण अभिनन्दन ग्रन्थां री भीड भेळी हुयरी है, ईं मे सदेह कोनी।

ईं बात रो मनै नेडै सूं अनुभव है। मैं शोध रो विषय लियो 'अभिनन्दन ग्रन्थां री उपयोगितां' अर शोध-खोज में तन, मन अर धन सूं लाग्यो। ई विषय री 'सामग्री सकलन' तांई मैं जगां-जगा घूम्यो भटक्यो अर लूठां-लूठां साहित्यकारां सूं मिल्यो सैंकडो अभिनन्दन ग्रन्था नै निजर मांय सू निकाळर वा पर 'नोट्स' लिया। दो-च्यार हस्तलिखित अभिनन्दन ग्रन्थ भी मेरै देखणै मे आया। बै घणा पुराणा हा। वां रो कलेवर आज रै ग्रन्था सूं एकदम अळगो हो।

एक दिन ईं काम तांई मैं एक नगर रै लूंठै अर पुराणै पुस्तकालय मे गयो। बठै शोध-खोज-हाळा खातर रैवणै, सोवणै अर पढणै रो प्रबन्ध हो। पुस्तकालय मे अभिनन्दन-ग्रन्थां री एक न्यारी ढाणी सी बस रैई ही। अभिनन्दन ग्रन्थ बठै विश्राम करै हा।

मैं वानै बारी-बारी सूं देखण लाग्यो। कई ग्रन्थ तो एक ई सम्पादक द्वारा सम्पादित करयोडा हा। कई ग्रन्थ एक ही लिखारै रा लिख्योड़ा हा। अनेक ग्रन्थ इसा हा, जिणां पर दरजणां सम्पादका रा नाम एक साथै मडयोडा हा पण प्रधान सम्पादक एक ही हो। ईं ग्रन्था नै देखर मेरी पैंली धारणा तो या बणी कै यो भी खूब व्योपार है ! बस, करणियो चलतो-पुरजो हुवणो चाहिजै।

ग्रन्थां नै पढता-पढतां बेरो पड़यो कै कई ग्रन्थ तो अठै आयां पछै खुल्या ही कोनी। चिप्योड़ा पानां ईं बात रा सबूत हा। कइयां री कमर करड़ी हुयोड़ी ही, बै इब तांई मुखड़ो बन्द करयां ई पड़या हा। 'ईस्यू' रजिस्टर देख्यो तो एक भी ग्रंथ आयां पछै बारै कोनी निकळयो।

ग्रन्थां में भी कई श्रेणियां रा हा, भारी भरकम अर माडा मरियल पण किलो आध किलो वजन सूं हळको एक भी कोनी हो। कई शानदार आवरण सूं सज्या-धज्या

हा तो कई ढील-उपाड़ा निरधनिया। मिनख रै तन मन अर धन री छायां इणां पर पड़ी साफ दीखै ही। संसार में काम तो सगळां रा ही सरै, पण ढोल साफ।

ग्रन्थां री विषय-सामग्री री उपयोगिता खोजण सांगो मैं बां में डूब्यो तो पढ़तां-पढ़तां ई नींद आयगी। नींद में उणीज अभिनन्दन-ग्रन्थां री भीड़ सांमै आई। भीड़ मांय सूं एक ग्रन्थ आगै आयर बोल्यो, 'मैं अठै आवणियै ग्रंथां में सब सूं जूनो हूं। मनै अठै परवेस करयां एक बीसी सूं ज्यादा हुयगी। मैं जलम्यो जणां घणा बाजा बाज्या। लोग खूब खुसियां मनाई। देस रै लूंठै नामी बड़ै ओदेदार अफसर रै धनभागी हाथां सूं मैं सूरज री किरणां रा पैल-पोत दरसण करया अर धणभागी रै हाथां में भेंट करयो गयो। लोग मनै देखर घणा हरखाया, मुळकया अर ताळियां बजाई। उचक-उचक'र मेरो मुखड़ो जोयो। मेरै मन रा तार-तार नाचै हा। इसड़ो धनभाग स्यात भगती-जुग रै संतां री लूंठी धार्मिक पोथ्यां नै भी नीं मिल्यो हुसी। पण भेंट रै दिन तो धूमधाम रैई अर पछै लोगां रो मिलणो बंद हुयग्यो। आज तो मैं ताळै मांय बंद हूं। कोई पूछै ई कोनी। कांई बेरो, तेरै मन मे म्हानै देखण री सनक कैयां चेतगी? मेरो मन घणो दुखी है।

ई रै समर्थन मे सगळा ग्रंथ बोल पड़या। कम अर बेसी, सगळा ग्रंथ आपरा दुखड़ा एक ई राग मे रोया। पुराणिया क्यूं बेसी दुखी हा अर नुवोड़ा जमानै री हवा मे ई जलम्योड़ा हा। ईं कारण बै रोवै नीं हा, रोळो करै हा।

मेरी नींद टूटी कोनी। सुपनो बदळगो। इयकै ग्रंथां रा लेखक अर सम्पादक भेळा हुयर आया अर बोलण लाग्या, 'देख भाया, तूं भी साहित्यकार है अर म्हे भी साहित्यकार हां। आपणो धंधो एक ई है। जे म्हारी पोल खोलो अर पेट पर लात मारो तो म्हे तेरो काम पार कोनी पड़ण देवांगा। जे क्यूं लिखै तो म्हारी बड़ाया लिख अर अभिनंदन ग्रन्थां री उपयोगिता दिखा, नहीं तो यो मैदान छोड़ दे। जे म्हारो कैवणो नीं मान्यो तो पछै देखियै म्हारो भी चमत्कार।

मैं ईं धमकी सूं चिमक्यो अर इत्तै पुस्तकालय री खिड़की रा किंवाड़ हवा सूं 'फट' दे बन्द हुया। खुड़को सुण'र मेरी नींद टूटगी। मैं हड़ बड़ायर उठ्यो। आंख्यां आगै सुपनै री रीलां सी घूमै ही। मैं विचार मे पड़ग्यो कै यो कांई जंजाळ आयो?

मैं बठै सूं सठर सीधो मेरै गाइड कनै आयो अर विषय बदळणै री अरदास करी। मेरी हैरानी देखर गाइड गंभीर हुया अर दूजै दिन फुरसत में मिलणै री सलाह देई।

मेरो सोच मिट्यो कोनी। मैं बैठ्यो-बैठ्यो सोचूं हूं कै आज रा अभिनन्दन ग्रन्थ इयां ही धड़ल्लै सूं धमाधम करता आवता रैया तो बानै पुस्तकालय में धरण नै ठोड़ कठा सूं मिलसी! पण जमानै री हवा नै कुण रोकै?

चाटू

घणा लोग चाटू नैं कोरो लाकड़ी रो टुकड़ो, [illegible] डूंठियो, खाती रा रंदा सूं रांद, काटियोडो रसोवड़ा रो राछ, सरकारी-तींवण रो रमतियो, हांडी रो हम्मीर, चूला रो चांद नैं बांठ बोझा सेवड़ी फेर रो जळमियो-जायो हीज मानैं । वणरा आपांण करमां नैं नीं ओळखैं, जद ही चाटू रा चमत्कारां सूं अण-जांण घणा अकल रा उजीर, बुध रा वेदव्यास, ग्यान रा गुणेश गोबर-गुणेश बणिया थका आपरी आबड़दा पूरी कर नांखैं, रोही रा तिसा मिरगला ज्यूं पद-पांणी रा खोज काढता भंभाभोळी खावता फिरैं । फेर भी उणां एक हिरणियां री हक तिसा नीं बुझै । उणा री हूकां रा बादळा बणैं नैं थोथा सळूसळा मिट जावैं । सियाळा रा सीकोट री भांत प्रभात रा वर्ण नैं दोपैर रा गळ जावैं, काचा-फळवा ज्यूं छाऊं म्याऊं व्है जावैं ।

भोळा मिनख कांई जाणै चाटू कांई है ! चाटू किण भांत संसार रा आखा सुख मांणैं । बिना चून लूण री रोटी पोवैं नैं सुख सूं खूंटी ताण सोवैं । चाटू रै धकै ठग री ठगाई, बाजीगर री हाथ सफाई, झगड़ायतां मे संप करावणियां री रखाई री विद्या नैं मड़कसी री आजार मिटाई, मेळ मिळाई सघळी, बातां पाणी भरै । चाटू जीभ री लडाई री कमाई खावैं । उण री जीभ री करामात आगैं मोटा-मोटा माणसां री सकळाई री बाजती झालरा ठम जावैं । किस्तूरी री सौरम नैं हींग उडा नाखैं । कपूर री सुबास लसण रै सामैं न्हास जावैं, उणी रीत चाटू रै आगैं सघळां री अकल रा पैडा जाम व्है जावैं ।

सीधा स्याणां मिनख मा जांणैं कै चाटू खाली माटी री हांडी रो मांटी हीज हुवैं, रधीण रो राईवर हीज हुवैं, भाजी-भुगती रो भरतार हीज हुवैं, खीचड़ी रो खावद हीज हुवैं, राबड़ी रो रसियो हीज हुवैं पण इत्तो हीज बात नी है । चाटू रसोवड़ा रो मोटो ताजदार ताजीमी उमराव हुवैं । उणरै आगैं देस-दीवाण ऊभा दांत तिड़कावैं, पच हजारी पग पपोळैं । चाटू री ओळग चाकरी मे, टैल-बदगी मे ठाडा-ठाडा ठाकर

ऊभा यड़ी करै । चाटू री चाकरी में बिना पेलै-टक्कै घणा सवळा-निवळा लखटकिया, मँफलिया, वातां रा बालम, खटपटिया खुमाण, फंफोड़ मूंढांरा मांटी, मटैड़ा रै चाक रै घापा रै बणगार रा आदमी अठ पौर ऊभा रैवै.

चाटू नीं चाकी चलावै, नीं खेत कमावण जावै, नीं मांटी भरी काठड़ी उठावै, नी पाळी पग उठावै, नीं लूखी खावै । सारै दिन काम रै नांव सूं फळी ईंज नीं फोड़ै । बस वाता रा बिणज बिणजै नै लाखां रा बारा न्यारा करै । मोटा मिनखां री पळी पर जा मुजरी करै । सांच नै कूड़, कूड़ नै सांच कैय नै वणा रा मन भरमावै । बस, फेर छत्तीस बिजनां रा भोग भोगै, नचीत मल्हार गावै ।

पण आ करामत कांई कम हुवै । इण रा बळ सूं तो सूंठां-सूंठां री धूंवौ काढ नांखै । उणा नै चाटू नीं घर रा छोडै, नीं घाट रा । जिण बखत चाटू पहनै चाकरी पर चालै, उण बखत धरा धूजै, मेघ धड़कै, देवराज री सिंघासण डुलै । कुण जांणै चाटू किण समै कांई कुबध कर नांखै ! कांई बात किण बखत पैरासूट कर दै ! किण भोळा भूतनाथ रा चित्त नै चकरी चढा देवै !

चाटू परवार री धणी हुवै । चाटू री जुवराज चमची, रायकंवरी चमची, परधान पलटी, कोटवाळ कुड़छी, फौजदार झारी प्रांत-पाळ टीपरियौ, तन-दीवांण मिरियौ, पौसाकी पळी, खवास खुरचणी नै तोवची ताकळी हुवै । चाटू चालै जद औ सारा रांण-खुंमाण उणनै विदा करै । औ सारा अेक खादा री माटी रा बासण हुवै अर समै पड़ै चाटू री बात मैं हेठै नीं पडवा देवै, ऊपर री ऊपर झेल लेवै । औ पांणी पैली पाळ बांधै, उळझी-सुळझी नै सांधै । चाटू जद आपरा लवाजमा रै साथ चाकरी माथै वहीर हुवै, जणा जांणै पाख आयोड़ी कीड़ी ज्यूं चढती लखावै । गुरड री गति, भूत री माया, नै बादळ री छाया ज्यूं छिण-पलक में झबकी नांखनै अलोप व्है जावै ।

चमची तो चाटू सूं भी दोय पग आघा काढै । टणका-टणका मारीखम बुध रा भाखर गिणीजणियां नै हांडी री खुरचण ज्यूं खुरच नै ठोड़-ठांणै लगा देवै । चमची राजपुरखां रै असवाड़ै-पसवाड़ै ईयां बुवै, जियां दीवटियां रै साथै-साथै अंधेरी चालै । चमचा रै मूंढै में ओम इण रीत पलेटा मारै जांणै हुळाबोळ रै कढाव में पलटी पलेटा खावै, हरी दूब कानी हिरणी मांल्है, भाखर री ढळांत कानी बरसाळा री वाहळौ-चालै, कराडा चढी नदी रो नीर चालै, डूंगरां रा खाळां बकै धूड़ चालै, अैड़ी चाटू री असवारी चालै ।

लोग कैवै चाटू री कोई मिनख जमारा मे जमारौ है ! चाटू री पूठ पाछै समळा उण री चहर्ष-पेहर्ष करै पण मूंढागै सैग उण सूं डरै । इण मे इ८-अंग

काई बात है । ऊंदरा रो जायो तो बिल हीज खोदसी । पछै चाटू भापरी, जादूगिरी सूं टाबर-टीगरां नै 'संटपाल' मे भणावै तो किणी रो हुकमांक पेट क्यूं दूखै । भाप, भाप री करामत नै भाप आप रा कार है । चाटू रो मन्धो चाटूगिरी । चमचा रो कार चमचागिरी। पण, चमचागिरी सूं हीज चमचम मिल जावै तो सगळा ही चमचा नीं बण जावै । चोंच तो कबूतर ही चलावै पण भाव भगत कोयल री बाणी री हीज हुवै । कोरी जीभा री लपालोळ सूं हीज पार नीं पड़ै । चाटू री भणाई बी० एड०, एम० एड० नै भाई० सो० भैस० सूं भी मुंहगी पड़ै है । चमचा री पोसाळ न्यारी हीज हुवै। चमचा री मुहारणी नै भोखियां हीज काम नी सधै । खाली बारहखडी रा बारह कक्का नै लहडो कु, बडो कू रटबा सूं हीज कारज सिध नी हुवै । रटायोड़ो सूवटो गोविंद गोपाल नारायण तो बोल लै पण काई वो गोविंद नारायण रा चरित्र नै तोल लै, गीता रा ग्यान री घुळ गांठा खोल लै ।

बोलबा मे तो पखेरुवां में कागलो हीज कका बोलै, मोल्यो हीज किक्की कंवै, कूकडो हीज कूकड कूं चवै, कोयल हीज कोवकउ बोलै, तूती हीज तूंई तूंई भणै भनै, घणा जानवर कुंई नै कूंई भाखर घुर बोलै हीज है पण इण सूं काई ? उण नै कदे लाख-पसाव मिळतो दीठो है ! चाटू री भणाई री पोसाळ बीभी हीज हुवै । चाटू रो 'कोर्स' न्यारो हीज हुवै । चाटू री 'डिग्री' चाटू हीज नै मिळै । चाटू री पढाई में विख री बीजगणित भणाईजै । ससार रै सनेह री खोगाळ नै विणास रा बीज चाटू री बचन विदग्धता हुवै । बासग नाग रो फण, भाग री भाळ हीज चाटू रो सुभाव हुवै । बोलण में गुंदगिरी रा सांटा जेड़ो मीठो हुवै पण करतूतां में पीळिया गोयरा नै परै बैठावै । भैडो डंक मारै के भागलो पाणी हीज नी मांगै । जमराज रा डंडिया सूं डंडिया गेहर रमणो नै चाटू सूं भ्रड़कमो करणो बरोबर । चाटू सूं तो डंडियो मिळायो राखै सो हीज भलो । जिण री भकल उधारो लियोड़ी हुवै, वो हीज चाटू रो वात नै उथेलै । नातर तो उण काळ-जीभा सूं होठाजोड़ी कुण करै !

चाटू नै चाटू कंवणो नै ऊजड बंवणो बरोबर । भ्रंवळी री सवळी नै सवळी री भ्रंवळी करणा चाटू रै डांवळै हाथ रो खेल गिणीजै । कोई चाटू री करणी मार्थ रीसां बळै तो लाख बळो, भो तो चाटू रो सुभाव है कै इण तरफ रा भाखर उण तरफ, नै उण तरफ रा डूंगर इण तरफ धर देवणा ।

चाटू रो कोई बंधी-बधाई पगार नी हुवै । उणरी पैदा ऊपर-छाळा री हुवै । कणा महीना री हजार ही पटक लेवै नै कणाई सो दोय सै माथै हीज सरमोल लेवणो पड़ै । चाटू री चाकरी नै घणां लोग हिकारत री भाख सूं जोवै । पण इण जुग री भोवा-जूंण मे धणकढ दूध सारखो साव निरमल कूण है ? चांद नै इम्रत-बरसो

कंवै है । इदर नै धरा-पत कंवै है । सकार नै महादेव कंवै है पण उणा नै कळंकी,
रुळंट नै मसाणियो भी तो कंवै है । मूंडकी-मूंडकी री मत न्यारी हुवै । जितरा मूंडा,
उतरी बात । लोग-बागां रा मूंडा रैं छींकी थोडी ई जडीजै । पछै चाट्ट नै चमचो
चमचागिरी नीं करसी तो कांई खेत मे हळ हाकसी, ऊंट लादसी, कमठां माथै काठड़ी
नांखसी, रेवाडा री मींगणियां सोरसी, भाभरी रा भाटा भागसी ! अैड़ा काम धन्धा
करसी जणा ईतो मण-गुण नै कांई कियो । कांई जुबान री जबा-जोडी, बात बणावणी
काम नी गिणीजै । भवोलां री मोती दाणां-सी जंवार पडी रैवै अर समै माथै बोलै
उणा रा बूं भळा सरै बजार धोळै दिन छैं पसेरी री ठौड़ दो रिपियां कीलो विकै । पराया
पेट में आपरै हित री वात उतार देवणो, आगळ्यां धरम करणो कांई ल्होड़ी कळा
गिणीजै ! ससि कळा सी सुपेत, सख सी धवळ, हिमसी धमळ, नै दूध सी धोळी हार रैं
मणका री भात पोयोड़ी साव सही, मेह रा जळ री भात कूड धूड़ सूं, आंधो-भरड़ा री सेह
सूं अछूती वात नै लुहार रैं आरण रा लियाळा बणावण रो करामात हुवैं जणा चाट्ट-
गिरी करीजै है । सनीदेव री साढसाती सूं डरनै हीज छायादान करैं । जे डर नीं
लागै तो रगत्या भैंरू तांई बकरा रा कान कुंण काटै ! कोरी जीभा री लपालोळ सूं
हीज नाको नी झळै । जीभ री करामात रैं साथे चौसठ घडी पगां पर थड़ी सी
करणी पडै ।

चाट्ट रैं डर सूं लूंठा-लूंठा धीग धज धारी इण भात धूजै जिण भात
थोडीसीक पवन रैं हिलोर सूं पीपळ रो पत्तो कांपै । चाट्ट रैं आगै मोटा-मोटा गजगात
गजपतिया नै सीयो चढ जावै । चाट्ट री बात रो असर तीजारा रा डोढिया, धतूरा रा
रस, कपिल रा कोप, नै रावण रा रढ सूं घणो ज्यादा हुवै ।

चाट्ट जिण रात जळमियो,, जिण पुळ घडीजियो वा पुळ बाहुड़ नै पाछी नीं
आई । चाट्ट रैं पाग राजनीत, समाज, नीत, साहित्य नीत संग नीतियां पुळै । जिकी
जीभ गुलांचिया कबूतरा री भात जठा-कठी नै लुळती रैवै, वो हीज खरो चाट्ट कहीजै ।
लोटण कबूतरां री रीत आपरा हील नै नी मोड़ सकै, वो साच रा लाख टका कोथळी मे
घालियां फिरै,, उण नै पूछणै-बतलावणै खातर बोळखो बगत किण कनै पड़ियो है अर
कुण लोभ री लाय मे बळता आज रा इण दौडता-भागता जुग मे दुहागण रा गुणवान
डावडा नै दुचकारण रो, हिमळास सूं वतळावण रो साहस कर आप रो नाव "ब्लैक
लिस्ट" मे मडावैं !

चाट्ट रैं भस्मी कडा सूं सकार खुद हीज डरतो लुकतो फिरयो, सो चाट्ट सूं
डरणै मे हीज खेमकुसळ है । आंख ऊघाड नै चाट्ट री आरती उतारो, इणी मे है सघळा
रो निस्तारो ।

अड़वड़ पंच

दुनियां में मिनख चार भांत रा होवैं। पैला 'टपक-टणका,' दूजा 'टणक-पोचा,' तीजा 'पोच-टणका,' नै चोथा 'पोच-पोचा।' इण च्यारां माही 'पोच-पोचा' री महिमा तो सगळा सूं ही न्यारी है। भगवान घड़वा नै तो यानै घड़ दिया पण ग्रब कदेई मूल'र या रै पानै पड़ जावे तो वांनै भी आपरो चमत्कार दिखायाँ बगैर ये रैवै कोनी। अड़वड़-पंच (अथवा फदड़ पंच) इण चौथी किसम रा सांचा प्रतिनिधि है।

पंचां री महिमा प्राचीन काळ सूं ही मशहूर है। वेदां अर उपनिषदां तक में पंचां रो जिकर आवै है। पंचां नैं परमात्मा री उपाधि तक दी जावै अर 'पंच परमेसर,' 'पंच माई बाप' अै ओखाणा गांव-गांव वाळां री जबान सूं सुणीजै। पण ये 'अड़वड़-पंच' तो सब सूं ही न्यारा। दूजा कई पंच तो चुनाव लड़े अर जनता वांरो चुनाव करै पण यांनै नीं तो चुनाव री जरूरत है अर नीं पंचायत री। ये तो खुदोखुद थिरपियोड़ा, आपरी जबान री चतुराई और करतब री करामात सूं लोगां री छाती पर मूंग दळण-वाळा है। थांरै पूछो भले ही मत पूछो पण ये तो 'मान न मान मैं थारो मेहमान' ओखाणां नै सांचो करणिया मोटा मिनख है। ओरं दूजा कई पंच पूछो तो राय देवै, बुलावो तो आवै, न्याव करावो तो करै, पण ये तो बिना बुलायां ग्राय धमकण-वाळा, बिना पूछिया राय थोपण-वाळा अर लापसी मे लूण भेळण वाळा है। दुनिया वाळा भले ही यानै कई भी समझै, अै तो आपरा प्रवचन परखावण नै रात-दिन वहोपल त्यार रेवै। मोको अै कदेई चूकै नीं। 'टीलो आयो टप्प, नै बात चलाई चप्प।' दुनिया यानै कईं केवै, इणरी यांनै रत्ती भर भी परवाह कोनी। अै तो आपरो माजणो पैलो सूं पेटी में पधरायर आवै। कैणात है कै नकटा री नाक कटै तो सवा गज बढ़ै, पण यारै तो नाक राखण सूं सात-जलम में भी सम्बन्ध कोनी। न तो देवा री यानै जरूरत नही, बुलावण रा व्योहार में यांरो विश्वास नहीं। सादी-सगपण, मोत-मादगी, दायजो-बालीडो कोई भी कामकाज होवै तो अै आपरी अणखावणी सूरत अर चरपराट करनी जबान

सूं हरदम ऊभा त्यार रेवै । आप यांनै देखर कतरावो, यां सूं आंख्यां चुरावो, यांनै टाळबा रो लाख जतन करो तो भी आपरी टांग अड़ायां वगैर यांनै जक पड़ै कोनी ।

आगला भव रै पापोदय सूं कदे ही आपनै यांरो पाड़ोस मिल जावे तो बस समझो के आपरा खोटा करम उदय होय गया है । आप या सूं आपरा घर री बात छिपावा री लाख कोसीस करो, अै आपरा पेट में उतर नै बात काढ हीज लेवेला । फेर मोका पर मुळकता-मुळकता दळबळ साथै आ धमकेला—

"कोठारीजी सा, आपतो म्हांनै याद कोनी कीधा पिण मोका पर हाजर नीं होऊं तो आपरा पडोसी होवण रो फरज कैयां-कर निभाऊं ! आज परभात ही खबर लागी कै आपरै बाबू री सगाई रो नारेळ आय रियो है । क्यूं, म्हांसूं कई नाराजगी है ? आप तो म्हांनै खबर ही कोनी कीधी । खैर कोई बात नहीं । सगाई-सगपण री सोभा तो मिनखां सूं हीज होवै । घर जाणर आपरा भाभी अर टाबरां नै भी लेतो आयो हूं । अब बताओ, किण-किण नै बुलाया है ? कई इन्तजाम कर्यो है ? आप उण खुम्यां ढोली नै मत बुलाइजो ! साळो बेईमान आपरी पूठ-पाछै आपनै कसी-कसी गाळियां देवै है । मै उण नै नट आयो हूं अर गोमां ने आवण रो कह दियो है । बाजावाळा नै भी आपरी तरफ सूं बुला लिया है । सब इन्तजाम पक्को कर दियो है । अब कोई भी बात री चिन्ता करो मती । सब काम म्हारै जिम्मै ।"

अब बिचारा कोठारी जी कईं कर सकै ? यानै कईं कह देवै तो भगवान जांणे इण मोका माथै अै कई-कई उतपात खडो नीं कर देवै । बापडा मन मसोस नै सारो काम ज्यूं कैवै ज्यूं करै । पण यांचो घालण री आदत सूं अै बाज थोडा ही आवै । लड़की वाळा जद दस्तूर करवाने आवे तो वानै देखतां पांण पंचजी छिपर आपरी कारस्तानी सरू कर देवै ।

"कोठारी जी ! आप कईं देखनै ओ सगपण मंजूर कीधो । इण भण्डारी री सात पीढी नै मैं जांणू । इणरा बाप कनै खाबा री भी मगवट कोनी ही । आज दो पईसा कई हो गिया है. बस अकडतो हीज फिरै । आपरा चाद सिरखा बापू नै तो आप डुबो हीज दियो । अब भो आ। चाओ तो पचीस सगपण मैं कराय देऊं ।"

वठीनै चुपचाप भण्डारी जी कनै जाय नै कैवै, "भण्डारी जी, थें तो भोळा हीज रह गिया । इण कोठारी रा छोरा सू थें थारी लिछमी सिरखी बेटी रो सगपण कईं देखनै कीधो ? मैं इणरो पाडोसी हूं । इणरी अर इणरा छोरा री हालत मैं सगळी जांणू । आप तो भोळी भळी छोरी नै डुबो होज दी । खैर, हाल भी कईं देर नी हुई है । आप तो नारेळ पाछो फेर लो । आपरी बायां रा पचास सगपण मैं कराय देऊं ।"

अबै रग मे भग कर नै अै मजो लेवै । ज़मालो लाय लगाय नै तमासो

देखें, ज्यूं श्रं मन ही मन मुळकता तमासो देखें । वो तो भलो होवें मानकचन्दजी रो, जो सारी बातां नें संभाळ श्रर किणी तरह सूं सगपण रो सारो काम सार लीधो ।

श्रर कुंवारियां रो गमनो, बांरो तो कहणो ही कईं ? डोवटी रो कुरतो नें कोरपाण रो धोवत्यो । देसी पगरखी नें माथा पर बाकडो पेटो । दो कूंचा दाढी नें हाथ में हुक्को । कोई बुलावें नी, बतळावें नी, कोई जाणें नी पिछाणें नी, तो भी मैं लाडा री भुवा । भांडां री भेंस सोटां री सेवा । गांव रें सुधार री बात होवें कें समाज सुधार री स्कूल खोलण री बात होवें कें इस्पताल खोलण री, श्रे सगळां पेंली टाग श्रडावें—

'इण सुधारां बुधारां रा चक्कर में मत श्राइज्यो नी तो सगळी जमी-जायदाद गमा बेंठोला । इस्कूल खुलगी तो टाबर बिगड़ नें धूळ हो जावेंला । थें कोनी जाणो इण में उण मोवन्या सरपंच री गहरी चाल है । थांरा घर लूट नें श्रापरो घर भरणो चालू कियो है।'

'यूं हीज सगळा कामा में दखलंदाजी करें बिना यानें जक कोनी पडे । सगाई-सगपण, ब्याव-सादी, मुगता-नाका रा कामां री बाता बणावण में यानें घणो श्रानंद श्रावें । भोमाजी बाप रो किरियावर कोनी कीधो तो जाणें गमनोजी नें तो बाता रा ब्याळू नें तिलां रा सोगरा रो श्रानन्द श्रा गियो । दस-पाच लोगां नें भेळा कीधा श्रर भोमाजी नें श्रडवंड कंवण लागा —

"यांरो बाप तो खेजडी पर ऊभो है नें श्रें लटक-मटक चालें । कईं जमानो श्रायो है ! बाप तो रासोडा मे लोटें नें बेटो गुलछर्रा उडावें । सरम लाज तो श्रें खूंटी माथें मेल दी है !"

बापडो भोमोजी कई बोले । टुकर-टुकर सगळा कानी नाळें पिण कोई गमनोजी रे मूंडामूंड बोलण री हिम्मत कोनी करें । श्रो तो भलो होवें चिमनोजी रो, जो श्रचाणचक बठीनें श्रा गिया नें गमनोजी रो माजनो सगळा सामें घूड़ कर मेल दियो । पिण माजनो होवें तो जावें । माजना री परवा करें तो श्रडवड़ पच कैयां हो सकें ? उठें सूं गिया तो दूजी ठोरा जाय नें श्रापरी कारस्तानी सरु करदी । श्रब यानें कुण सम-भावें कें क्यूं जागा-जागा लाय लगावो श्रर पराया घर बाळर खुद हाथ सेको ?

सुरग में तो एक हीज नारद जी है जिणरो परचो देवता ही नही, भगवान नें भी भली भांत मिल गियो पिण इण संसार रो कईं हाल होवें जठें गळी-गळी में, घर-घर में, कईं पुरखा श्रर कई लुगायां मे, कई जवाना मे श्रर कईं बूढां में, कईं भणिया में श्रर कईं श्रणभणियां मे, कईं गावां मे श्रर कई सहरां में, जागा-जागा नारद-जी रा श्रें श्रवतार श्रड़वड पच श्रापरी करतूना सूं लोगा री शान्ति में आटूं पोर थांचो घालबा नें दाळ-भात में मूसळचन्द ज्यू हरदम त्यार रेवें । श्राप लाख कोसीसा करो यांरो सुभाव तो छुटण सूं रेयो—

नीम न मीठो होय, सींचो गुड घीव सूं ।
ज्यारां पड्या सुभाव, क जासी जीव सूं ॥

रंगरेलो

सामान्य रूप में राजस्थानी साहित्य नैं लोग वीर रस रो ईज साहित्य समझै पण इसी बात कोनी कै राजस्थानी साहित्य में विविधता नीं हुवै । राजस्थानी साहित्य में भांत-भांत रा रंग है अर वै आपरै ढंग रा अनूठा है । ईं सम्बन्ध में रंगरेलै रो नांव सहजां ई लियो जा सकै है । चारण कवि वीरदास रो लोक-प्रसिद्ध विरुद रंगरेलो अर्थात् 'रसधारा रो प्रवाह' है अर वो इणी नाव सूं याद करयो जावै है ।

वीरदास चारणां री रोहड़िया शाखा में बीठू गोत रो वारठ हो । वींरो जलम जैसलमेर इलाकै रै गांव सांगड में हुयो, जको आज तहसील सिव (बाड़मेर) में है ।

वीरदास रै जीवण री प्रामाणिक जाणकारी प्राप्त कोनी पण [illegible] सतरहवीं सदी है अर वो जैसलमेर रै रावळ हरराज (वि० स० १६१८–१६३४) तथा बीकानेर रै महाराजा रायसिंह (शासन वि० स० १६३०–१६६८) रो समकालीन हो ।

रंगरेलै आपरी घणकरी कवितावां में प्रकृति, देस तथा राजावां रै राज री हालत रो वर्णन करयो है । फुटकर कवितावां रै अलावा [illegible] 'ऋतु रो छन्द', 'मेवाड़ महिमा' अर 'जैसलमेर रो जस' नाम री रचनावां [illegible] है । राजावां रै वर्णन में उण री कविता में बड़ो तीखो व्यंग है ।

रंगरेलो मस्त अर मन-मौजी [illegible] निकळगो अर घणै दिनां तांई [illegible] भ्रमण करणै तांई चाल पड़यो ।

इसो है कै जिकी चीजां सूरज, इन्द्र अर कुवेर कनै भी नी है, बै सगळो चीजां तेरै कनै है।"

रावळजी या कविता सुण'र घणा राजी हुया कै मनै तो यो कवि सूरज, इन्द्र तथा कुबेर सूं भी बडो बतायो है। पण दूजा विद्वानां कैयो कै ई कविता में आपरी बडाई नीं है, घणो निंदा है। अर वा इण तरां के सूरज कनै उजास है अर अन्धेरो कोनीं, जिको आप कनै है। इणी भांत इन्द्र कनै जळ है, जिको धिरती पर बरसायर धन-धान सूं लोकां नै निहाल करै पण आप कनै अनावृष्टि अर्थात् कंजूसी है। कुबेर कनै धन है अर उण कनै नी हूंणवाळो चीज रो नांव है, दरिद्रता। आप कनै वा (दरिद्रता) है।

ई पर रावळ हररराज नाराज हुयर चारण-कवि नै कैदखानै में गेर दियो अर पछै जद बीकानेर रा महाराजा रायसिंह जैसलमेर आपरो ब्याव करण नै गया तो कवि नै कैद सूं छुडा'र आपरै सागै बीकानेर ले आया।

ई मुक्ति री बाबत यो किस्सो कैयो जावै है के जद रायसिंहजी तोरण पर पूंच्या तो ढोली वांरी तारीफ में गीत गाय रैयो हो अर गीत में बार-बार "लाख बरी-सणहार" सबद बोल रैयो हो। यो गीत सुणर कनैई बुर्ज में कैद कवि जोर सूं एक दूहो कैयो, जींरो अर्थ हो —"अरै ढोली, तूं झूठो भण रैयो है। महाराजा रायसिंहजी तो लाख हो क्यूं, 'कोड बरीसणहार' है। यो विरद सुणर महाराजा आपरै हाथी नै थाम लियो अर पुछवायो कै यो कुण है अर कठै सूं बोल रैयो है ?

रावळजी रै आदमियां ई बात नै टाळणी चाही पण महाराजा वींरो पूरो पतो लगायां बिनां आगै नी हाल्या। जद वांनै या बात मालम हुई कै यो वीरदास सोहू है अर रावळजी री कैद में बन्द है तो महाराजा फरमायो कै जद तांई चारण नै नीं छोडयो जासी, हूं तोरण नी वंदूं।

आखर रावळजी नै मजबूर हुयर कवि नै कैद सूं काढणो पड़्यो अर ब्याव सूं पूठा आवता महाराजा उणनै आपरै सागै बीकानेर ले आया।

महाराजा रायसिंहजी बडा दानी हा। वांरी दानसीलता सूं वीरदास कवि घणो प्रभावित हुयो अर रायसिंहजी री तारीफ रा कई गीत कैया। उण गीतां मे एक गीत विख्यात है जीं में दरिद्रता स्वयं भगवान नै इण भांत अरज करै है—

"पाताळ तठै बलि रहण न पाऊ,
रिध माडे सग करण रहै।
मो म्रितलोक रायसी मारै,
कठै रेऊं हरि दळद कहै ॥१॥

वीरोचन-सुत महिपुर वारै,
रवि-सुत तणो अमरपुर राज ।
निध-दातार कलाउत भरपुर,
अनंत रोर-गत केही आज ॥२॥

रयण दियण पाताळ न राखै,
कनक श्रवण रूघो कविळास ।
महि पुडि गज दातार ज मारै,
बिसन किसै पुड़ि मांहू वास ॥३॥

नाग अमर नर भुवण निरखतां,
हेक ठोड छै कहै हरी ।
घर अरि रायसिंघ घातिया,
कुरिघ तठै जाइ वास करी ॥४॥

लोग कैवै है कै जद कवि बीरदास बीकानेर हो तो एक दिन महाराजा रायसिंहजी मजाक में आयर उण सूं जैसलमेर पर कैयोड़ी उणरी कविता सुण रैया हा । महाराणी भटियाणी जी भी कविता सुणै हा । महाराणीजी नै वा कविता घणी अखरी । ई कारण एक रात आपरै आदमियां सूं कवि नै माचै समेत कूवै में नखवा दियो । तकदीर सूं कवि मरयो कोनी पर जीवतो निकळ आयो ।

पछै कवि मारवाड़ कानी गयो अर फिरतो-फिरतो एक दिन जालोर आ पूग्यो । उण दिनां बठै बिहारी पठाणां रो राज हो ।

एक दिन कवि बीरदास तळाव में न्हायर आपरा कपड़ा धोवै हो । उणीज बखत नवाब सिकार खेलर आवड्यो अर तळाब में आपरो घोड़ो पाणी प्यावण ढुकायो । कवि रै कपड़ै सूं छांटा उछळ्या तो नवाब रीस मे आयर बोल्यो—"हट बे कुट्टण (धोबो). घोड़े के पाणी के छींटे लगते हैं ।" कवि सवार कानीं देख्यां बिना ई कपड़ा धोवतै-धोवतै जबाब दियो—"कुट्टण तेरा बाप ।" इत्तो सबद मुंह सूं निकळ्यो ई हो कै कवि ऊपर नै देख्यो तो नवाब ! पछै तो कवि आपरी जबान झट बदळी अर बोल्यो—

कुट्टण तेरा बाप, जिकै सीरोही कुट्टी ।
कुट्टण तेरा बाब, जिकै लाहोरी लुट्टी ॥
कुट्टण तेरा बाप, जिकै बायडगढ बोया ।
कुट्टण तेरा बाप, जिकै धूंमड़ा धवोया ॥

कूटिया प्रसण रागा किता' मूंभै अर सांकै घरा ।
मो कुट्टण न कह कमालरा, सूं कुट्टण किणियागरा ।।

ईं कविता सूं नवाब घणो राजी हुयो घर कवि वीरदास बीठू नें 'रंगरेलो' नांव दियो । पछै घणै घरमैं ताईं रंगरेलो जालोर नवाब कनैं सनमान सार्थं रैयो ।

रंगरेलै री सगळी रचनावां एक जगां नीं मिळ पाई है अर वै बिखरयोड़ी है । उण री कविता रा कीं नमूना मिळ्या है, जिका आगै दिया जावै है । ये कवि वचन घणा रोचक है अर जन-साधारण में खूब लोक-प्रिय भी है—

जैसलमेर सम्बन्धी

दूहो

घोड़ो हुवैज काठ रो, पिंड कीजै पाखाण ।
लोह तणा हुय लूगड़ा, जोइजै जेसांण ।।

गीत

मैं दीठा जादम जेसलमेर ।
पुराणा आलड़ बांधै पूठ ।
अणूता चूचा हांकै ऊंठ ।।
मबासर पासै घोळा माळ ।
दुरब्बळ भाटी देस दुकाळ ।।
हुवैरा तालर घावै हेर ।
मैं दीठा जादम जेसलमेर ।।१।।

राती रिड़ धोहर मध्यम रूंख ।
जमी दिगपाळ मरता भूख ।।
टिकायत राणी गदघा टोळ ।
हेकलो लावत मोर हिलोळ ।।
मुलक्क मंझार न बोलै मोर ।
जरक्खां, सेहां, घोहा जोर ।।
फाटोड़ो जाजम ब्यारू' फेर ।
घोडां ढिग लाख बुगां रा ढेर ।।
मैं दीठा जादम जेसलमेर ।।२।।

हेकै गढ ऊपर तीन हजार ।
कोडीधज अवकज साहूकार ।।

दिनां ही तेय मरै दस-दस ।
विणज्जै खांफण ले सरवस्स ॥
ढबूरो बारठ डीसी लाग ।
टहक्कै दोनूं खोडो टांग ॥
गळपोड़ी जाजम .मइफ बणार ।
जुड़ै जहं रावळ रो दरबार ॥
मैं दीठा जादम जेसलमेर ॥ ३ ॥
बुडाणा नाई ताजो बप्प ।
मसाजा भाव रखदा मप्प ॥
तवां को बारोबार तनाह ।
मुलां हिक होई छट्ट मनाह ॥
कनोनै गेडियै माडै कथ ।
बळद्धां जोतण राम न वथ ॥
मैं दीठा जादम जेसलमेर ॥ ४ ॥

उमरकोट (सिंध) सम्बन्धी—

धिनो घर-घाट धिनो घर-घाट ।
पदम्मण पाणी लावण जात ।
रुळती भावत पाधी रात ॥
विलखत टाबर जोवै वाट ।
धिनो घर-घाट, धिनो घर घाट ॥
श्ररोगै नीर गयो सिर प्रांण ।
सगपस देस घरा सोढांण ॥
कवीसर पारख ठा'ठ न कोय ।
हसती भैस बरोबर होय ॥
धिनो घर घाट धिनो घर घाट ॥२॥
पसोडै बासी मूंहै छास ।
परस्या ऊन बरोबर पाट ।
धिनो घर घाट धिनो घर घाट ॥ ३ ॥

गोडवाड गो वर्णन—

दूहो

सर लांबा आंबा गहर, नदियां-जळ अप्रमाण ।
कोयल दिये टहूकड़ा भाई घर गोडाण ॥

ढूंढाड़ रो बरणन

गाजर मेवो कांस रूळ, पुरस न पूनं उघाड ।
ऊधै ओझर इस्तरी, प्राहिज घर ढूंढाड ।।

सैराड रो बरणंन

बोफा टाकर रेत बड,
पग पड़ा भाड़ पहाड ।
नित भाटा भगड़ा करं,
भइयो घर सैराड ।।

एक बार रगरेलो घूमतो-फिरतो सिरोही गयो । वा दिनां राव सुरताण दुरसे प्राढै नै प्रापरी पोळपात बणा'र लाख पसाव दे दियो हो । जद रंगरेलो राव रै दरबार में पूंच्यो तो राव सुरताण उठ'र रंगरेलै नै आव-भगत कोनी दी । निर्भीक अर मस्त कवि सूं नीं रहयो गयो भ्रौर वी बखत ई भ्रो दूहो कह दियो—

'कोड़ दई अन्नत कढे, पिंड में रहयो न पांण ।
दुरसै बीजू डंकियो, बैस रहयो सुरतांण ।।'

म्रा काव्य-बानगी परगट करै है के रंगरेलो जलम सूं ई मस्त-मोजी रैयो । व्यग्य-वाणी में रंगरेलो सिद्धि-प्राप्त हो । जिण भांत उणरी कविता रोचक है उणीज भांति उणरै जीवण री घटनावां भी चित्ता-कर्षक है अर प्रवाद-रूप में लोक-प्रचलित है ।

●

लाखपसाव

आज भारत मे कवि-लेखकां नैं बरस मे एक बर लाख रिपियां री भेंट दी जावै है, जिण ऊपरां सागे देस गौरव करै है पण राजस्थान में तो इसा अणगिणत 'लाखपसाव' दिया गया है अर चर्चा तो 'कोड़पसाव' री भी सुणी जावै है। 'लाखपसाव' राजस्थानी-साहित्य रै इतिहास री एक प्रकाशमयी परम्परा है, जिण रो पूरो लेखो-जोखो भी आज तांई कोई इतिहास-लेखक नीं कर पायो है।

जद भी किणी कवि नैं कोई राजा 'लाखपसाव' भेंट करतो तो खास तौर सूं बडो दरबार करयो जावतो, जिण मांय बडा-छोटा सगळा दरबारी अर साथै ई नगर रा मातबर लोग भी भेळा हुवता। ई बडै दरबार मांय कविराजा नैं ऊंचो आसण मिळतो अर सोनै रै थाळ मे 'सिरोपाव', गहणां अर म्होरां सजोयर भेंट दी जावती। साथै ई स्थायी-सम्पति रै रूप मे गावां रो 'पट्टो' भी दियो जावतो, जिण रो नांव है— 'सासण'। ई अवसर पर कवीसर नैं हाथी घोड़ा भी भेंट करया जावता। उण जमानै मे या चीज असाधारण रूप सूं बडी मानी जावती अर भोत घणैं सम्मान री सूचक ही।

कवि-सम्मान रो यो राजसी उच्छव सम्पन्न हुयां पाछै, पालखी में अथवा हाथी रै होदै पर कविराजा री सवारी निकळती अर वां पर चवर ढुळतां। इसै सम्मान सूं कविराजा नैं आपरी हवेली अथवा डेरै पुगाया जावता। राजाजी आप घोड़ै पर अथवा पाळा ई जुलूस मे साथै चालता। कविराजा री जय जयकार हुवती। कई बर तो एक साथै ई अनेक कवीसरां नैं यो सनमान दियो गयो है, जिण रै वरणन सूं 'ख्याता' रा पानां दीपै है।

इण भांत 'लाखपसाव' पुराणै जमानै रो रंगरूडो अर गुण-पूरो अभिनन्दन-समारोह है। यो मान-सम्मान साथै घणै आणद रो भी उच्छव रैयो है। यो हीज, कारण है कै जन-साधारण में भी 'लाखपसाव' री सौरम व्यास हुई अर विशेष आणद

रै अवसर पर ई रो प्रयोग लोक-प्रचलित हुयगो । ई संदर्भ में विरहिणी नायिका रो यो दूहो देखो—

जिणि देसे सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ ।
उवां लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाखपसाउ ।।

सारो देश राजस्थान रै इतिहास रा गुण गावै है अर उण पर गौरव अनुभव करै है पण ई इतिहास रै महाप्राण नर-नारियां रो निर्माण तो अठै रै साहित्य सू ई हुयो। जे राजस्थानी रो ओज-तेज सू परिपूरण साहित्य नीं हुवतो तो पछै वण लोगां नै नामी कामा री प्रेरणा कठा सू मिलती अर वै किण भांत प्रकाश में आवता ? ई मरम नै राजस्थान भली भांत समझ्यो अर लोक-प्रमुख राजावां रै हाथां सू या फळवती परम्परा चालू राखी ।

लोग कैवै है के राजस्थान सदा सू शक्ति रो पुजारी है, सो तो सही, पण साथै ई यो वीरलोक सरस्वती रो उपासक भी तो रैयो है । शक्ति रै लारै लक्ष्मी-आवै पण राजस्थान रा शक्तिपुत्र आपरी लक्ष्मी नै खजानै री कैद मे काठी नी राखर उण नै सरस्वती-पूजा री भेंट चढावता रैया, जिण री निशाणी अठै रा बडा-बडा अणगिणत कमठाण, अर साहित्य, संगीत तथा चित्रकळा री उन्नति है ।

अनोखी बात या है कै राजस्थान रै 'चारण' गे एक नांव 'शक्तिपुत्र' भी है, जिण री वाणी रै वरदान सु राजस्थानी साहित्य महिमामय बण्यो । ई रूप मे 'लाखपसाव' एक शक्तिपुत्र री दूजै शक्तिपुत्र नै सादर भेंट है ।

राजस्थानी कवि मान पर मिटणिये वीरां रा गुण गायर शौर्यभक्ति' रो नयो रूप उपस्थित करयो । ई अनुपम भक्ति-तत्व सू शौर्य अर त्याग मांगळिक अर पुन्न सू भरया पूरा बण्या । आत्मबलिदान रै मारग पर चालतै वीरां रो व्यवहार देखणै जोग है— 'पछै सिनांन-संपाडो करि पाघ बाधी । तुळछीदळ पाघ मांहे मेल्यो । काया श्रीनारायण प्रति सकळपी । अब सारो साथ हथियार बांधै छै ।" (राजस्थानी बातां पृष्ठ १७०)

ई उदधरण मांय भक्ति अर शक्ति रो अनोखो सगम है । जुद्ध मे जावणिया वीर आपरी काया श्रीनारायण नै पहलो ई भेंट कर देवै है । वै आपरी पगडी में तुळसी रो पान मेल लेवै है । पछै वां नै रणखेत मे भय किण बात रो ?

शौर्य अर भक्ति रो यो समन्वित रूप युद्ध नै भी सात्विकता प्रदान कर दीनो । इसी चीज राजस्थानी साहित्य मे ई मिलसी ।

वीरता रो यो तत्व राजस्थानी साहित्य मे प्रारम्भ सू लेयर आज तांणी रम्योड़ो है । ई कारण राजस्थानी साहित्य रै इतिहास रो काल-विभाग भी नये रूप

में ई कारण-जोग है । राजस्थानी साहित्य में 'रीतिकाल' जिसी तो कोई चीज ई कोनी। अठै राजस्थानी रा स्वतन्त्र रीतिग्रन्थ बण्या है पण वां में 'उदाहरण' परम प्रशस्त रामकथा सूं दिया गया है । अठै इसा अनेक कवि हुया है, जिका भगत रूप मे विख्यात है पण साथै ई वै वीरकवि भी हा । वै हाथा सू 'हरिरस' बांट्यो है तो वाणी सूं वीर गीत भी गाया है । राजस्थानी कवियां रो कृष्ण 'राधा रो प्रेमी' न हुयर रुकमणी रो उद्धारक, भारतवीर है ।

पहलो राजस्थान मांय लक्ष्मी रो बडप्पण नीं रैयो, शक्ति अर सरस्वती रो गौरव रैयो । यो ई कारण है कै अठै जनजीवन में 'त्याग अर दान' री ऊंची महिमा है । राजस्थान रो मिनख मात्र के तो वीर बणनै री चाहना करी है अर के दानी । अठै 'त्याग' रो अर्थ ई सम्पत्ति दान चाल पडयो । छोटे-छोटे गांवा मांय भी अठै इसा-इसा बडा आदमी हुया है, कै वां रै दान री 'बातां' चालै है । पछै राजा-महाराजा लाखपसाव भेंट करता रैया तो ईं चीज में अचरज ई कांई ?

राजस्थान 'लाखपसाव' री धरती है पण ईं धरती रो साहित्य लाखपसाव रो साहित्य नीं है । राजस्थान रै कवि लक्ष्मी रै लोभ सूं कविता नीं करी । उण नै राजदरबार में ऊंचो सम्मान मिल्यो पण फेर भी बो 'दरबारी कवि' नीं बण्यो । बो तो स्वाभाविक रूप सू आप रै मन री मौज में काव्य रचना करी । बो विलासी राजावां री कल्पित कीरत कथा-रा दिन में तारा चिमकायर बकसीस नीं लीनी । बो अकरम-करणिये राजावां पर इसा 'विसहर' कैया है कै वै आप री काळजो पकड़ लियो अर कई बर कविराजा पर नाराज भी हुआ । पण कवीसर इसी नाराजी री कद परवाह करी अर कद आपरो सुभाव छोडयो ? राजाजी आपरो 'लाखपसाव' काठो राखो । कवीसर आपरै कवि-धरम री मरजाद सू नीं डिग्या ।

महामति नैणसी आपरी अमर 'ख्यात' में ईं विषय मे एक भोत ही महत्वपूर्ण प्रसंग प्रस्तुत करयो है, जिको नैणसी रै शब्दा में ई सुणणं जोग है :—

"वांसै फूल मूंवो । दा राणी धण वांसै चली । लाखो उठै, सु लाखा नूं आ वात कोई कहै नहीं । वांसै धरती सूनी । लाखो मामा रै । सु लाखो कहै — किण ही कह्यो फूल मूंबो तो उण री जीभ वढाऊं । तरै वीहतो कोई कहै नही । तरै देस रा सिगळा कामदार महाजन, सिगळा भेला हुयनै कह्यो—लाखो आवै नहीं । धरती सूनी । कोइक उपाव करो ज्युं लाखो आवै । तरै कह्यो—जीभ वढावण कुण जावै ? तरै सिगळा भेळा हुयनै कह्यो—"डाही ढूंमणी मूं मेलो । आ आय कहसी ।' तरै डाही नूं लाखा कनै मेली । आ उठै गई । लाखो उठै वैठो थो, सु अपूठो हुइनै बैठो नै डाही नूं लाखपसाव दियो । सु जिकूं थो, सु सारो एके दरहे नांखियो नै इण बीण

रवाब जिकूं वतीसू जंत्र तयार करनै ओ दूहो गायो—

> फूल सुगंधी वाढियो माटी देख सिवांण ।
> तो विण सूनी सिघड़ो, वळ लाखा महराण ।।

ओ दूहो इण कह्यो । तरै लाखो फिर नै साम्हो बैठ कह्यो—'फूल मूं वो ?' तरै इण कह्यो—'ये याहरै मुंहडै कहो छो ।' तरै लाखै कह्यो—'हिमैं म्हारो जीभ कटावो ।' मैं आ वात कही ।' तरै रूडै मांणसै कह्यो—'आ वात कुं हुवै ?' तरै सोना री जीभ सात वेळा करनै काटी । इण भांत सासत कियो । पछै डाही नूं ? बीडो नाखै दियो, तिको माथै चाढ लियो । तरै लाखो कहै— "कुण वास्तै ?" तरै हूमणी कह्यो—

> लख लाखा द्रह जाय, जो दीजै मुख वांकडै ।
> पान कुटक्कै रहि कहै, जो लाभै सो भाय ।।

हूमणी डाही कह्यो —'पहली तो लाख दियो अपूठै मुंहडै, सु कुण काम ? नै बीडो सांम्हो फिर दियो, सु लाख सरीखो ।"

यो प्रसग राजस्थानी साहित्य रै इतिहास रो एक ऊजळो नमूनो है । डाही लुगाई री जात है, हूमणी है, पण गजबरो बुद्धिमनी है अर साथै ई असाधारण रूप सु स्वाभिमानवनी भी है । वा 'डूमा आडो डोकरी' कहावत नैं तो चरितार्थ करै है पण साथै ई कळाकारां नै वा एक दिव्य सदेश भी देवै है —"लख लाखा, द्रह जाय, जो दीजै मुख वांकडै ।'

राजस्थानी-साहित्य मे *'विडद-बखाण'* भी है पण ई विड़द-बखाण रो असली भेद दूसरो ई है । राजस्थानी कवि जठै भी वीरता, धीरता, त्याग अर दूजै किणी भी खास गुण रो उठाव देख्यो तो उण रा गीत दिल खोलर गाया । वो उण निरमळ भावना नै स्थायी राखण-सारू आप री वाणी रो उपयोग करयो, जिण सूं समाज मे गुण री पूजा हुवती रैवै अर लोग साच रै मारग नै कदे नीं भूलै । इसी काव्य-रचना सूं जे कवि नैं एक 'कामळ' भी मिली तो वो उण नै लाखपसाव सूं भी ऊचा इज्जत मानी । इसा लाखपसाव देवणिये 'सूरा अर सतवादिया' रा नांव भावू ख्याता' में नीं चमक्या हुवै पण कवि-वाणी रै प्रताप सूं आज भी जन-साधारण रै हिरदा मे वै मंड्योड़ा है अर कदे भी मिट कोनी सकै ।

इण भात राजस्थान रै कवि सत री नींव नै पुखता करी अर 'कीरत रै कमठाण' नै डिगवा नी दियो । राजस्थान रा बडा-बडा भगत कवि भी इसै 'प्राकृत-जना' री महिमा गाई है, जिका ऊपर सूं भला ई 'प्राकृतजन' हुवो पण गुण-कर्म सू वै महापुरुषा री महिमा सू सम्पन्न हा ।

राजस्थानी कवि भारतीय जीवन-दर्शन रै सारतत्व नै पिछाण्यो अर गुण्यो। वो जनसाधारण नै इण भांत जीवन-सदेश दियो—

घर जातां, ध्रम पलटतां, त्रिया पडतां ताव ।
तीन दिहाड़ा मरण रा, कहा रंक, कहा राव ।।

जे आपरी धरती किणी दूजै रै अधिकार मे जावती हुवै, जे कोई शक्ति-प्रयोग सूं आपरो धरम छुटावै, जे महिलावां पर कोई जोर जणावै तो ये तीनूं दिन (अवसर) राजा तथा रंक सगळां खातर प्राण-विसर्जन रा है । राजस्थानी कवि ईं एक ई छोटै सै छद मांय सम्मानित जीवन अर सार्थक मृत्यु रो सार-संदेश दियो है । जीव मात्र नै आपरा प्राण प्यारा लागै पण मिनख-जूण में मौत रो पुण्यपर्व भी आवै, मरण भी महोच्छव रो रूप धारण करै ।

जूंझार अर सती रै समन्वित धर्म रो ऊजळो रूप 'जोहर' (यमगृह । राजस्थान रो अनुपम व्रत रैयो है । राजस्थान रा 'साका' विख्यात है जद मानधणी वीर, वैरियां सूं घिर जावता अर विजय रो उपाय नीं दीखतो तो वै सारी सामग्री विनाश कर देवता अर सारा ई रणखेत में कट मरता । वां री महिलावां धधकती चिता में कूदर आपो समेट लेवती । पछै जीत'र भी वैरियां रै हाथ क्यूं ई नी आवतो अर मरणियै वीरां रो 'जस' अमिट हुयर जनसाधारण नै प्रेरणा देवण रो चीज बण जावतो । राजस्थानी साहित्य रो मूळतत्व ईं जस री 'सोरम' है । ईं रो बणाव नाना रूपां में हुयो है पण भार चोज सगळो ठोड समान ई है ।

ध्यान राखणो चाहिजै कै जीवण रो सार-सदेश भारतीय प्रजा री पुराणी परम्परा सूं चाल्यो आवै है । राजस्थान रो गौरव है कै अठै रा निवासी आपरै पूर्वजां नै भूल्या कोनी अर वां रै बतायोड़ै जीवन-दर्शन नै हिरदै मे राख्यो । किणी दिन कुरुखेत में मोहग्रस्त हुयर अर्जुन हाथ रा हथियार छोड दिया हा । जद भगवान श्रीकृष्ण महावीर अर्जुन नै चेतो करायो अर यो उपदेश दियो—

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ, नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदय-दौर्बल्यं, त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप ।।
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय, युद्धाय कृतनिश्चयः ।।

(अर्जुन, तू नामर्दी मता धारै । या स्थिति तेरै लायक कोनीं । परन्तप, हिरदै री हीणता अर दुरबळता नै छोडर तूं खड़यो हो । जे ईं कर्तव्य-रूपी युद्ध मे तूं मारयो गयो तो सुरग मे जासी अर जे तेरी जीत हुई तो ईं धरती नै भोगसी ।

अर्जुन तूं युद्ध रो निश्चय कर, हथियार उठा अर झूठो मोह त्याग ।)

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता रो सार संदेश बो ई है । राजस्थानी कवि भी ईं सार-संदेश नैं अनेक ' रूपां ' में फैलावता रैया है । पण ई जीवन-दर्शन री परम्परा तो ग्रोर भी घणी पुराणी है । वेदवाणी रो एक जीवन-मंत्र सुणां—

त्वां देवेषु प्रथम हवामहे
त्व बभूथ पृतनासु सासहिः ।
सेम नः कारुमुपमन्युमुद्भिदम्
इन्द्रः कृणोतु प्रसवे रथ पुर. ॥
(ऋग्वेद, १/१५/१०२)

(हे देवगण मांय अग्रगण्य इन्द्र, म्हे तेरो आह्वान करां हां । तूं रणखेत मांय सदा ई शत्रुवां रो संहार करै है । तूं म्हानैं भी उण कर्तव्य-क्रिया-समर्थ रथ (प्रश्न) सूं सम्पन्न कर, जिको वेगवान हुवै अर शत्रुवां रो तत्काल विनाश करै ।)

ईं वेदमंत्र में नरसंहार री कामना नीं है । अठै तो सम्मानपूर्ण जीवन री अभिलाषा प्रगट हुई है । जे दुष्ट लोग शान्ति सूं जीवण न देवै तो हथियार उठावणो परम धर्म है । यो राजस्थानी कवि रो संदेश है, यो ई गीता रो मर्म है अर यो ई वेदां रो उपदेश है । राजस्थानी कवि ईं दिव्य-संदेश नै प्रकाशमान राखण-सारू आपरी वाणी रो उपयोग कर्‌यो ।

जद दिल्ली री बादशाही आखै भारत नै दाबण-खातर तेग उठाई तो राजस्थान री कविवाणी ईं पुन्नमोम रै वज्र-वीरां मे नयो प्राण भर दियो । यो राजस्थानी कवि-वाणी रो ई पुन्न-प्रताप है कै मुगलाई मायाजाळ मे भारत रो 'सुवण मिग' फस नी पायो अर आजाद रैयो । माड़ै राजावां रा मुकट आगरै-दरबार मे उतरण लाग्या तो 'राजस्थानी कवि' देश री पाघ नै ऊंची राखी । यो राजस्थानी कवि रो ई अमिट प्रभाव है कै 'घनघोर-घटा' में भी 'भारत रो सूरज' नी छिप्यो अर भळकतो रैयो ।

राजा-महाराजा कवीसरां नै 'लाखपसाव' भेंट करया तो आपरो राजधरम समझर ई करया । वै समाज मांय कवि-कोविदां रो सनमान बणायो राख्यो अर वां नैं संसारी-संकट मे पड़बा नी दिया । जिको गुणी समाज नैं प्रेरणा अर बळ देवै, जे बो ई संसारी-सकट मे पड़ ज्यावै तो पछै समाज अर राज में ओज कठा सूं आवै ? अर कुण अंधारै मे भटकतै मिनखां नै सही मारग दरसावै ?

ईं सारतत्व नैं राजस्थान समझ्यो अर अठै 'लाखपसाव' राजधरम रो अग बणर दीप्यो । यो ई कारण है कै राजस्थान रा नर-नारी आपरी आण पर प्राण देवण

नें सदा त्यार रैंया अर इसा-इसा काम कर दिखाया, जिणां री कीरत कथा सूं सपूरण देश अजसैं है । भारत रा अनेक कवि-लेखक राजस्थानी इतिहास सूं 'कथावस्तु' लेयर भांत भांत री सुन्दर रचनावां त्यार करी है अर घणो सनमान पायो है । ईं 'कीरतखभ' नें राजस्थान रा कवि-कोविद ईं खडयो करयो है । राजस्थान रा राजा-महाराजा तो ईं 'कीरतखभ' नें 'देवरूप' मानर इण रैं चरणां मे 'लाखपसाव' रा श्रद्धा-सुमन भेंट करया अर आपरो धरम निभायो ।

ज्ञान री साधना करडी घणी है । या साधना थोड़ा सा मिनख ईं कर पावैं । जिण देश मांय कवि-कोविदां रो सनमान हुवै, उणी देश माय ज्ञान री तपस्या फळैं अर ईं 'साख' रो लाभ समाज नैं सुलभ हुवैं । कवि-वाणी रो रस देश री 'धरती रो धीणो' है । ईं धीणं सूं जनता रो हिरदो सरस हुवैं, मन निरमळ बणै अर आतमा मे बळ आवै । समाज री दूजी-दूजी भात री उन्नति तो पाछैं री चीज है । निबळ मन नैं लेयर सबळो तन कांई कर सकैं ? चारित्रिक उत्थान बिना मिनखा री भीड़ किण काम री ? यो ई कारण है कै कवि-कोविदां नैं 'राष्ट्र रा निर्माता' बताया गया है । वै राष्ट्र रैं भवन रा खरा अर सुदृढ़ खभा है । ये खभा खड़या रैवैं जितरैं यो 'दिव्य-भवन डिग नीं पावैं । 'लाखपसाव' री भावना या ई है, जिण नैं राजस्थान भली भांत समझी अर पूरी तरां निभाई ।

आज राजस्थान रो सारो ई वातावरण नयो है । आज राजस्थान में लक्ष्मी रो भी वैभव है । राजस्थान रा सपूत हिम्मत बांधर दूर-दिसावर गया अर आपरी तपस्यां सूं बड़ै-बड़ै उद्योग-धधा री थापना करी तथा लक्ष्मीपुत्र रो विरुद धारण करयो । पहली यो प्रदेश अनेक रजवाड़ां में बंटयोड़ो हो पण आज भली-भांत सगठित अर व्यवस्थित है। आज जनता भी पहली सूं ज्यादा जाग्योड़ी है । आज राजतन्त्र रैं स्थान पर लोकतन्त्र है । फेर भी 'लाखपसाव' री परम्परा रो लोप घणो खेदजनक है । राजस्थान रैं भीतर अर बारै राजस्थानी भाषा-साहित्य रैं उन्नयन-सारू छोटा-मोटा अनेक पुरस्कार है, जिका जमानैं री हवा रैं मुताबिक प्रतियोगिता पर आधारित है । या चीज जरूर थोड़ो सो सतोष दे राख्यो है पण राजस्थान री लाखपसाव-परम्परा नैं याद करां तो कैंवणो पड़ै—'ते हि नो दिवसाः गताः ।'

त्यागभूमि राजस्थान मे आज एक भी 'लाखपसाव' नीं हुवणो, राजस्थान रैं इतिहास रो अपमान सो प्रतीत हुवैं । जे वीरभोम राजस्थान रो सांस्कृतिक-स्तर ऊंचो राखणो है तो लाखपसाव री पुराणी परम्परा रो मरम समझर ईं नैं चालू करणी जरूरी है । पहलो यो काम राजा-महाराजावा मार्फत हुया करतो तो अब यो कर्तव्य जनता रो है, जनता री सरकार रो है ।

बिरखा-बीनणी

राजस्थान प्रदेश प्राकृतिक द्रस्टि सूं विविध-रूप वाळो है । अठारो उत्तर-पश्चिमी भाग रेत रै टीबां, सैंकडां हाथ गैरा कूआं, प्राणी नैं भड़भूजा री भाड़ दाई बाळण वाळी तेज गरमी रै सागै अट्टहास करै । पूरबी भाग सुरम्य सरोवरां, लहलहाता खेतां अर हरिया-भरिया पेड़-पौधां रै सागै मुळकतो दीसै । दक्षिणी भाग ऊंचा-ऊंचा भाखरां अर सघन वनखण्डां सूं घिरयोड़ो चौकसी करै । इण भांत प्रकृति-सुन्दरी अठै समै-समै नूंवो-नूंवो भेस पळटर आवै ।

राजस्थान में खास तौर सूं तीन मौसम हुवै—सरदी, गरमी अर बिरखा । बिरखा अठै भोत थोड़ी हुवै, ईं कारण राजस्थान रै घणकरै इलाकै में प्रायः काळ पड़तो रैवै —

पग पूगळ धड कोटड़ै, बाहू बायडमेर ।
फिरतो-घिरतो बीकपुर, ठावो जैसलमेर ।।

काळ री भयंकरता, ऊनाळै री तेज गरम लूआं अर बिरखा री कमी हुवण रै कारण अठारै लोगां रो बिरखा रै प्रति घणो प्रेम है । वानैं ईं रितु में घणो आणन्द अर उल्लास मिलै । गरमी रै प्रकोप सूं मुरझायोड़ा फूल, बेलड़ियां अर बिरछां री सूकी डाळिया पाणी री फुहार पाय खुशी सूं झूम उठै, तपत सूं मुरझायोड़ै उणारै तन पर हरख अर उमावै री नूंवी चमक आय जावै । बळती लूवां सूं दुखी हुयोड़ै पसेरवानैं घणो ध्यावन मिलै । मुरधर री सूकी धरा आंख्यां भर भर बादळी रा वारणा लेवै —

सोनै सूरज ऊगियो, दीठी बादळियांह ।
मुरधर लेवै वारणा, भर-भर आंखड़ियांह ।।

राजस्थान री रमणी बिरखा रै देवता इन्द्र नैं मरुधर देस मे मोकळवा खातर बिजळी राणी नैं पत्र देवती इण भांत अरज करै—

इन्दरजी नै मोकळ ए म्हारो बिजुराणी देश में,
गड़वां करै नी पुकार ।

हे बिजळी राणी ! इन्दरराजा नैं मरुधर देस मे बेगा मोकळ । गायां रा ग्वाळा पुकार कर री है । हे इन्दरराजा, मैं आप रै खातर गाय दुहाऊंली, खीर रंधाऊंली, बालड़ी भैंस दुहाऊली, दूध सूं आपरा चरण पखाळूंली । आप एकर मरुधर देस मांय पधारो ।

सांच तो आ है कै अठारै लोग-लुगायां रो हरख भर उमावो बिरखा माथै इज निर्भर है । जद पत्नी आपरै पति सूं गैणां-गामा री मांग करै तो पति भी इज पडुत्तर देवै कै धरती पर बिरखा नैं आवण दे, मैं थारी रूपाळी देह नै गैणां-गांठां सूं लाद दूं ला । बिरखा है सो गैणा-गामा है, बाजूबंद है, हाथी दांत रो चुड़लो है, अर बिरखा नीं है, तो पछै कांई है ?

आभै में चारूं कांनी काळी कळायण नैं छाई देखर किसान री लुगाई री उत्सुकता वध जावै । वा हाथ रो इसारो कर'र बादळी नैं कंवै—"बादळी, तूं प्रियतम रै खेतां पर जा, खेत भर मैदानां मे बरस । अठी-उठी नी जायर सीधी म्हारै खेतां पर जा । पांणी सूं पूरी भरियोड़ी जा । बेगी सी जा अर दूधरी भात बठै बिरखा री झड़ी लगाय दे ।"

बिरखा सूं चारूं कांना हरियाळी छाय जावै । ताल-सरोवर पाणी सूं भर जावै । लोग हरख सूं झूम उठै अर गावा लागै—

भली रुत आई, म्हारै देस,
सुरगी रुत आई, म्हारै देस ।।

बिरखा रै वरदान सूं खेतां में बाजरै रा बूंटा लहलहा उठै । उणा रै बीच-बीच में बेलड़ियां पसरै । जे भादवो भरपूर बरसै तो मरुधर देस अमोलक बण जावै—

बाजरियां हरियाळियां, बिच-बिच बेलां फूल ।
जंउ भरि बूठउ भादवउ, मारुदेस अमूल ।।

भावुक कवियां बिरखा रै मनोहारी सुहावणै रूप रा घणा सुरगा चितराम मांड्या है । 'वेलि क्रिसन रुकमणी' रा कवि राठोड़ पृथ्वीराज ने बिरखा मे धरती सजी संवरी युवती रै रूप मे दीसै —

तरु लता पल्लवित, त्रिणे अंकुरित, नीळाणी नीळम्बर न्याइ ।
प्रिथमी नदिमद हार पहिरिया, पहिरे दादुर नूपुर पाइ ।।

वृक्ष अर लतावां पल्लवित हुयगी, उणा मे नूंवा पत्ता आयगा । धरती हरी-

भरी हुयगी । उणरी आ हरियाली अैड़ी लागै जाणै लीलै रंग री ओढ़णी ओढ़ी हुवै । वेवती नदी, इसी दीसै जाणै गळै मे हार पैरियो हुवै अर टर्र-टर्र करता डेडका यूं लखावै जाणै पगां मे पैंरियोड़ा पायलां रा घूघरा बाजरया हुवै। आगै कवि-श्रौह कैवै—

काजळ गिरि धार, रेख काजळ करि, कटि मेखळा पयोधि कटि ।
मामोलउ बिंदुलउ कूं कूं मई, प्रिथमी दीघ निलाट पटि ।।

पृथ्वी रूपी नायिका आंख्यां में काजळ आंज राख्यो है । काळा पहाड़ां री सं'खलावां उणरी काजळ री रेखावा है । वीं कमर मे समन्दर रूपी करधनी पैंहर राखी है अर'आपणै चोड़े लिलाट पर वीर-बहूटी रूपी कूं'कूं' री बिंदी लगाय राखी है ।

वर्तमान राजस्थानी कवि रेवतदान री 'बिरखा-बीनणी' कविता तो भोत ही घणी लोकप्रिय है—

लूम-झूम मदमाती, मन बिलमाती, सौ बळ खाती,
गीत-प्रीत रा गाती, हंसती आवै बिरखा बीनणी ।
चिर-घिर घूमर रमती, रुकती थमती,
बीज चमकती, झब-झब पळका करती,
भवती आवै बिरखा बीनणी ।

रीतिकाल रा ब्रजभाषा रा नामी कवि चिन्तामणी भी बिरखा रो नव-नवेली बीनणी रै रूप में सुभावनो चितराम अंकित कर्‌यो है —

देखिवे को मोहन नवल नटनागर को,
बरखा नवेली अलबेली बनि आई है ।

महाकवि सूरदास भी सावण नै बींद बणायर सटीक रूपक बांध्यो है—

सखी री सावन दूल्हो आयो ।
चार मास को लग्न लिखायो, बदरन अबर छायो ।
बिजुरी चमकै बगुला बराती, कोयल सबद सुनायो ।
दादुर-मोर-पपैया बोले, इन्द्र निसान बजायो ।
हरी-हरी भुइ पर इन्द्र-वधू सी, रंग बिछौना बिछायो ।
'सूरदास' प्रभु तिहारे मिलन को, सखियन मंगल गायो ।

बिरखा रितु तीज-तेवारा खातर घणी प्रसिद्ध है । 'तीज' घणं आणद अर उल्लास रो तेवार है—

आयी-आयो सावणियां री तीज,
गोरी अे रमवा निसरिया, जी म्हारा राज ।

किया-किया सोळै सिणगार,
सहेल्यां संग चाली जी म्हारा राज ॥
इण मौसम में गावां में डाळ-डाळ पर झूला पड जावै--
वन खण्ड मे हिंडोळो मांड्यो, रेसम री पटडोर ।
राणी रैणादे हींडै बैठ्या, धरती झेलै न भार भो जां ।
बिरखा रितु मिलण री तैवार है । इण मौसम मे जड-चेतन सगळां री
हिरदो प्रेम भाव सूं लबालब भर जावै । ढोला मारू रा दूहा में मिलन रा भाव इण
भांत ब्यक्त हुया है—

ऊंचउ मन्दिर अति घणउ, आवि सुहावा कंत ।
बीजळि लियइ झबूकड़ा, सिहरां गळि लागंत ॥
सावण आयउ साहिबा, पगहू विलंबी गार ।
श्रच्छ विलंबी बेलड्यां, नरां विलंबी नार ॥

प्रकृति री गोद में मिलन रा श्रै दृश्य देखर मारवणी री सोयोड़ी प्रेम
भावना जागरित हुय जावै । वा आकास में हर बादळ रै सागै अठखेलियां करती बिजळी
ने देखर आपरै मन री भावना इण भांत परगट करै—

बीजुळियां चढ़ळावळि, आभइ-आभइ एक ।
कदी मिलूं ष्ण साहिबा, कर काजळ की रेख ॥
बिजुळियां चहळावळि, आभइ-आभइ च्यारि ।
कद रै मिलऊंनी सज्जना, लांबी बांह पसारि ॥

संयोग में बिरखा रुत घणी रंगीली अर सुहावणी लागै । प्रिय रै आगमन
पर नायिका रो रूं-रूं नाच उठै । बींरो उल्लास सगळी प्रकृति रो उल्लास बण जावै ।
बीनै सारो ससार आनंद भाव मे मगन दीसै—

सावन आयो हे सखी, ज्यांकी जोती वाट ।
थांमा नाचइ, घर हसई, खेलण लागी खाट ॥

राजस्थानी जनजीवन खातर बिरखा जरूरी है । अठारै मिनखां री
जिन्दगाणी बादळां माय इज अटकी रैवै । मरुधरा में बादळां सूं पाणी नीं बरसै, अठै
तो बादळा सुं जिनावरां खातर चारो बरसै, मिनखां खातर धान बरसै, टाबरां खातर
दूध बरसै ।

गिन्दड़

राजस्थान में अनेक भांत रा लोकनृत्य प्रचलित है पण वां सगळां में 'गिन्दड़' नाच रो निराळो ई रंग है । यो नाच पेशेवर मंडळी रो नीं हुयर जन-साधारण सूं, सम्बन्धित है अर किणी रूप में पुराणे 'रास' री याद दिरावै है ।

होळी रै त्युंहार माथै गिन्दड़-नाच प्रायः सगळै ई राजस्थान में हुवै पण शेखावाटी इलाके रै नाच री रंगत इणां सूं फूटरी अर न्यारी है । ई इलाके मांय सीकर-झुंझणूं अर आसै-पासै रा गांव, जियां चूरू जिलो भी आ ज्यावै है । होळी रै पांच-सात दिन पैल्यां सूं ईज गिन्दड़ रो पाळो मण्ड ज्यावै अर नगारै पर डंकै री चोट लागणी सरु हुय ज्यावै । गांव रै टाबरियां रै मन मांय भी घूघरा बंध ज्यावै अर बै "लगै डंको घलै गिन्दड़," रा नारा लगायर उछळ-कूद करणै लाग ज्यावै ।

ई नाच मांय बिना भेदभाव सगळी जातां रा लोग भाग लेवै अर बड़ै प्रेम सूं रात-रात भर नाचै । ओ त्युंहार हिन्दुवां रो है पण मुसलमान भाई भी ई मांय प्रेम सूं सामल हुवै अर सगळां रै बरोबर नाचै । छूआछूत रो तो ई टेम रत्ति भर भी भाव नीं रैवै । बाह्मण, बाणिया, धोबी, तेली, नाई, चमार, कुम्भार माळी आदि सगळा एक साथै गिन्दड़ घालै ।

ई नाच खातर गांव मांय लांबो-चौडो मैदान अथवा चौक देखर मंडप बणावै । छोटै गांवां रा लोग मंडप री सजावट नीं करै पण सहरां मांय मंडप री जोरदार सजावट हुवै । नाचणियां लोग घणा हुय ज्यावै, जद एक बड़ै घेरै मे छोटो घेरो और बणा लेवै । ई भांत बैसी सूं बैसी मिनख एकै साथै नाचणै री जुगाड़ कर लेवै ।

नाच चालै जद देखण रै खातर गांव रा लोग-लुगाई मोकळा भेळा हुयर गेड़ रै च्यारू-मेर बैठ ज्यावै । सूर गावणियां री टोळी गेड़ रै मांय गांवती चालै अर नगारै री लय साथै आपरी लेय मिलायर सूर गावै ।

मडप रै बीचूं-बीच नगारची रै बैठण खातर तख्तो रैवै। गावां रा लोग तख्तो नीं बिछावै, बठै एक पीढो नगारची रो हुवै अर दूजो नगारो राखणै खातर हुवै। कई गांवां मांय नगारची रै बैठण खातर ऊंचो हूंचो (मच) बाधर उण ऊपरी नगारची नै बिठावै। जिण सूं नगारै री आवाज दूर-दूर तांणी सुणीजै। ई नाच रा प्राण नगारची रै हाथ मे इज हुवै। नगारै री लय ऊपराई नाचणियां रा पग उठै।

गांवड़िया री गिन्दड़ सहर वाळा सूं एकदम ई सादी हुवै पण ई रा नाचणियां एक-एक सूं जबरा हुवै, वै मडप नै सजावण खातर नी तो गेस री लालटैणां टांगै अर नीं फरया-फरया ई बांधै। रामजी म्हाराज रै घरां सूं मिल्योड़ो चन्दरमा रो चानणो अर धरती-माता रो घेर-घूमेर मोटो चौक ईज वारो रगमच हुवै। अै लोग आपरी मस्ती मांय नाचै अर गावै।

गिन्दड़ नाचणै खातर मडप रै बीच गोळ घेरो बणावै, जिण नै गेड कैवै। गिन्दड़ नाच रो एक गेड़ लगोलग घन्टै-सवा-घन्टै चालै, जिण नै भी गेड़ ई कैवै। इण भात नाचणियां एक रात मैं कई गेड घालै पण वां रो जोस ठंडो नी पड़ै।

नगारो

राजस्थान मांय नगारै रो भोत बड़ो महातम मान्यो जावै है। ई रै बजैयां री इज्जत राजा-महाराजा भी करता रैया है। नगारै सूं पैली ढोल री खास पूछ ही। मिनख रै जलमण सूं लेयर मिरत्यु तांणी ई रा न्यारा-न्यारा बाज हुवता।

ढोल या नगारै नै बजावण रा सवदा बाज हुवै। इणां मांय पांच बाज बधावणै रा है, बाकी सजावणै रा है। वां रो खुलासो नीचै मुजब है—

(अ) बधावणै-बाज मांय जलम, बधाई, ब्याव, त्युंहार अर जीत रो बंजावणो आवै।

(ब) सजावणै बाज रा दो भेद हुवै। घूमर, मटको, साळूड़ो, गरबा अर भाव-नृत्य, ये पांच लुगाईयां रा है अर गैर, पट्टो, ताण्डव अर रण नृत्य मोटयारां रा है।

गिन्दड़-नाच होळी रै त्युंहार पर नाच्यो जावै। ई कारण ई री गिणती बधावणै-बाज मांय आवै।

ओ बाजो तांबै या लोह धातु रो बणायो जावै। ऊंचाई फुट-सवा फुट री हुवै। काम चलाऊ नगारै रो मूंडो डेढ फुट रो हुवै। ढोल, तबला, ढोलकी री

तगी ईनै भी माळी खाल सू मढै अर मायलै पासै तिल्ली रै तेल रो चिट्ठो लगावै जिण सू गूंज वधै ।

नगारची

गिन्दड़–नाच री लय नगारो बजार दिखाई जावै । नगारची लय–ताल अर बैठक रो पक्को हुवै । बो बैठक री साधना बिना नगारो ज्यादा देर नीं बजा सकै । एक ई बैठक सूं कई घंटा तांणी नगारो बजावणो मामूली मिनख रै बस री बात कोनीं । लय रो कच्चो नगारची गिन्दड़ रो डोळ बिगाड़ देवै अर नाचणियां रा पग ऊक-चूक पड़णै लाग ज्यावै । लय–ताल अर बैठक साध्योड़ा लोग गांव मांय दो च्यार ईज मिलै । ईं कारण गिन्दड़ रै दिनां में नगारची री खासा पूछ हुवै अर उण नै इज्जत खूब मिलै ।

नाच

मंडप में गोळ घेरै रै भीतर नाच हुवै । गाव रा लोग बिना घूघरा बांध्यां ई नाचै पण सहर वाळा नर्चैया घूघरां री जोड़ी आपरै पगां मांय जरूर बांधै । दो कळी वाळा घूघरां नैं रस्सी में पिरोयर एक–एक पग मांय सो–सो घूघरा तांणी बांधै, जिणां सूं गिन्दड़ रो गेड़ छमाछम री आवाज सूं घरणाय उठै ।

नाचणियां रै दोनूं हाथां मांय एक–एक डंडियो (डांडियो) रैवै । ये डका अठारह इन्च सूं लेयर वीस इन्च तांणी रा लाम्बा हुवै । नगारै री चोट साथै नाचणियां आपरा डंका आपसरी मांय भिड़ावै । डकिया भिड़ावणै रा कई तरीका हुवै, जिणां री जाणकारी नीचे मुजब है:—

(१) एक-एक नर्चैये रै सांमी–सांमी एक–एक नर्चैयो रैवै जिण रै साथै डकिया भिड़ाया जावै ।

२) पैली सामनै वाळै नर्चैये सूं लुळर डको भिड़ावै । पाछै मूंडै सांमी दोनूं जणां रा डका भिड़ै अर एक पग आगै बढ़ ज्यावै ।

(३) सामनै वाळै नर्चैये सूं झुकर फेरूं मूंडै सांमी डंका भिड़ायर घूमै, फेरूं लारलै सू इणी भांत डका भड़ावै अर घेरै मांय आगै बदता रैवै ।

(४) दोनू हाथां रा डंका, आपसरी मांय ऊपर–नीचै अर बीच- मांय भिड़ायर चोथी मात्रा ऊपरां घूमै अर आगै बधै ।

(५) डका रो भिड़ावणो ऊपर लिखै मुजब ईज करै पर सरीर नैं झुकायर भांत–भांत सूं नाचै ।

कई गांवां रा मिनख एक ईज हाथ मांय डंको राखै पण सहर वाळां रै दोनूं हाथां मांय डकिया जरूर रैवै ।

सांग

गिन्दड़-नाच मांय मनोरंजन खातर लोग भांत-भांत रा सांग बणार आवैं। गावां माय सांग बणर नाचणं री चाल कोयनी पण सहरां रा लोगां नै बिना सांग रै नाच रो आनन्द ईज नीं आवै। सांग मांय खास कर—साधु, सिकारी, सेठ-सेठाणी, डाकियो, डाकण, रीछ-मदारी, मेहरी आदि रा सांग बेसी हुवैं।

गिन्दड़ नाच मांय लुगायां नीं नाचैं। पण कई पुरख लुगाई बणर नाचै। लुगायां भेळी हुयर नाच देखण नै जरूर आवैं जिणां रै बैठणं री न्यारोई बन्दोबस्त हुवै। सगळी लुगायां गेड रै बारै एकै-पासे बैठर नाच देखें।

नचैया

गिन्दड़ नाच एकलै मिनख रो नीं है। ईं नाच मांय एकै सागै कई मिनख हुवै जद नाच रो गेड़ बणै। होळी रै त्युंहार मायं दिन मांय लोग रंग अर गुलाल-सूं खेलर लाल-पीळा हुय ज्यावै अर रात मैं भेळा हुयर गिन्दड़-नाच रो आनंद लेवै। ये नाचण वाळा दिन मांय आपरो स्रृंगार घणो करै। कत्थक अर भरतनाट्यम् री ज्यूं वारी न्यारी मडळी हुवै। गांव री सगळी जातां रा लोग डंकिया लेयर उतरै अर बडै ही प्रेम भाव सूं डकिआ भिड़ायर आपरो मन राजी करै।

पगां री चाल

नगारै ऊपरां डकां री तीन चोट लागै अर च्यार मात्रावां री मावाज सुणीजै। तीन मात्रावां ऊपर नाचणियां रा दोनूं पग सागै उठै अर तीन जगां री बदळ हुवै। जगां री बदळ हुवणं सूं पगां री चाल न्यारी-न्यारी दीखै, जिकी नाच मांय सोवणी लागै। नगारै पर चौथी मात्रा खाली छोडै। खाली मात्रा माथै नचैया घूम ज्यावै, जिणसूं ईं मात्रा रो बेटो भरीज ज्यावै। ईं सूं नाच मांय एक तरां रो लोच आ ज्यावै। कई नाचणियां चौथी मात्रा ऊपरां पूरा घूमै अर कई जणां आधाईज घूमर पाछा सीधा हुय ज्यावैं। ईं नाच रै पगां री चाल नीचै मुजब हुवै—

(१) सादी चाल—दोनूं पगां सूं उछळर नाचै अर गेड़ मांय एक-एक पावडो आगै सिरकता जावैं।

(२) आडी चाल—पैली मात्रा गेड र माय, दूजी गेड रै बारै अर तीजी मातरा माथै सागण ठोड़ आवै।

(३) मायली चाल—दो मात्रा गेड़ रै माय नाचर तीजी मात्रा माथै गेड मैं सागण ठोड़ आवैं।

(४) बाहरली चाल— गेड़ रै आडरली पासो दो मात्रा नाचर तीजी मात्रा माथै साजण ठोड़ आवै ।

(५) बैठक री चाल—बैठक री चाल सादी, आडी, मांयली अर बाहरली इण भांत ऊपर लिखे मुजब हुवै । इण मांय दो मात्रा तांणी बैठर नाचै अर तीजी ऊपरा उठर गति करै ।

ई सगळी चालां माय दोनूं पग बरोबर वठै पण गती बदळती रैवे, जिण सूं देखण वाळां नै नूं'वी-नूं'वी चाल अर नूं'वी कळाकारी लागै ।

आवाज

ओ नाच च्यार भांत री आवाज सूं मेळ राखै, जिणां रो न्यारो-न्यारो लेखो-जोखो नीचै लिखे मुजब है—

साधन	आवाज
(१) पगां री चाल	धम् धम् धम् धक्
(२) डका री चोट	खट खट खट टक
(३) घूघरा	छुम छुम छुम छुन
(४) नगारो	धि ना ड़ा ऽ

ऊपरै लिखी च्यारूं आवाजां सामाजिक, मनोवैज्ञानिक अर कळा री दृष्टि सूं ओत काम री मानी जावै है । ईणां मांय सगळां सूं वेसी काम नगारै रो है, जिण सूं "धिनाड़ा" री आवाज नीसरै । ई, कारण ई नाचरो नाव गिन्दड़ या धिन्दड़ हुयो लागै ।

सरु मांय गिन्दड नाच री लय हळवां-हळवां चालै । पछै नगारै री लय बढ़ै अर नगारची रो डको थोड़ो जोर सूं लागण लाग ज्यावै । लय बढ़णै सूं नगारै रा बोल तो नीं बदळै पण नाचणियां रै डौल माय जोस आ ज्यावै । लय बढ़ती-बढ़ती जद ओत ज्यादा तेज हुय ज्यावै तो समझल्यो के नाच रो गेड़ खतम हुवण वाळो है । घणी ज्यादा तेजी री लय मांय नाचणियां रा नीं तो पग जमै अर नीं डंका ई सही मिड़ै । नाच खतम हुवण री टेम नगारची गड़गड री आवाज बजावै अर गेड़ खतम हुय ज्यावै । पछै थाड़ी देर बाद दूजो गेड़ सरू हुवै । ई भांत एक रात मांय कई गेड़ चालर गिन्दड़-नाच रो आनन्द गाव रा सगळा लोग, लुगाई, अर टाबर लेवै ।

गिन्दड़ नाच री सब सूं बड़ी विशेषता या ईज है कै यो नाच जनता री व्यवस्था में आयोजित हुवै । नाचणिया अर देखणिया बड़ी सख्या में भेळा हुवर ई नाच रो आनन्द लेवै अर आपरै समय नै सरस करै ।

राजस्थान रो अेक प्राचन नगर—वीकमपुर

भारतवर्ष रै इतिहास में आपा नै राजवंशा अर राजावां आदि शासकां रो ही खास जिक्र मिलै है, अठै रै निवासिया रो, उणा रै सामाजिक अर आर्थिक जीवण तथा उणां रै गांवां अर नगरां संबंधी आपा री जाणकारी बहोत ही थोड़ी है। असल में इतिहास रो संबंध खाली राजवंशां रा शासकां सूं ही नहीं हुवणो चाहिजै, उणमें जन-जीवन रो, धर्म-सम्प्रदायां रो, गांवां-नगरां आदि रो इतिहास भी जरूर रैवणो चाहिजै। इण रै अलावा, गांव-नगरां रै उत्थान तथा पतन री कहाणी अर इणां रै कारणां बाबत भी विचार हुवणो चाहिजै, क्यूंकै इतिहास रो काम अतीत री जाणकारी रै सागै-सागै भविष्य रै निर्माण री प्रेरणा देवणो भी है।

आपां रा मोकळा पुराणा गांव-नगरां री खुदाई सूं ही आपा नैं आपणी गौरव-मयी पुराणी संस्कृति री पतो लाग्यो है, नहीं जिकै पाश्चात्य लोगां तो इण भांत री धारणा बणा ली ही कै भारत रा प्राचीन निवासी अनार्य अर असभ्य ही रैया है, अर इण धारणा रो उणा प्रचार भी घापर करयो। पण जद मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, नालंदा आदि प्राचीन स्थानां री खुदाई हुई तो उणां री धारणा एकदम ऊंधी साबत हुयी अर आ बात आछी तरियां साफ हुयगी कै भारत री पुराणी संस्कृति बहोत ऊंची ही।

राजस्थान में ई सरस्वती नदी रै आसै-पासै, पुराणी संस्कृति री ओळखाण करावण-आळा केई स्थानां रो पतो चाल्यो है अर रंगमहल, आघाट आदि री खुदाई सूं मोकळी पुराणी चीजां मिली है। राजस्थान रै विशेष प्राचीन गांव-नगरां री तो आपानै कोई खास जाणकारी कोनी पण मज्झमिका, श्रीमाल नगर (भीनमाळ) आदि दो-ढाई हजार बरसां पुराणा नगरां री जाणकारी जरूर मिलै है।

मध्यकाळ रै घणा ई स्थानां रा उल्लेख शिलालेखां अर जैन-ग्रन्थां मे मिलै है। उणां में घणकरा स्थाना रा नाव तो आगे चालर बदळग्या, इण कारण

री सही पोळखाण ई म्रोखी हुयगी। केई स्थाना रा नांव लोक में तो और ई रूप सूं चालता हा पण सस्कृत रा विद्वानाँ उणाँ रो इसो सस्कृतीकरण करयो कै अबै उणाँ रै मूळ नांव रो पतो लगावणो ही मुसकल हुयगो।

घणी वार श्रेक ही नाव म्राळा दो-तीन न्यारा-न्यारा स्थानां रो उल्लेख भी ग्रथा में मिलै है। जद आ मुसकल हुय जावै कै सबधित स्थान श्रेक-सिरखा नांव म्राळा घणा स्थाना मे कुण-सो हो? अठै श्रेक इण भांत रै स्थान री चरचा करी जावै है।

'वीकमपुर' नाव रो प्रयोग बीकानेर (बीकानेर) वास्तै शिलालेखां अर ग्रन्थां मे मिलै है। अर इणीज नाव रो राजस्थान मे श्रेक बहुत पुराणो नगर हो, जिको भी 'वीकमपुर' नाव सूं जाण्यो गयो है। इण तरै बीकानेर अर 'वीकमपुर' दोनूं स्थाना-सारू सस्कृत रा विद्वाना 'वीकमपुर' नाव ई वापरयो है। इण सूं केई विद्वाना नै भ्राति हुयगी अर उणा पुराणै 'वीकमपुर' नै बीकानेर मान लियो। उदाहरण रूप मे, जैन साहित्य महारथी स्व० मोहनलाल दलीचन्द देसाई आपरै 'जैन गुर्जर कविओ' भाग २ रै पृष्ठ ६७६ मे खरतरगच्छ पट्टावली रै तेरहवी शती रै 'वीकमपुर' रै उल्लेख नै 'बीकानेर' रो लिख दियो। पण वास्तव मे बीकानेर तो सवत् १५४५ मे बस्यो हो, इण कारण १३वीं शती रो 'वीकमपुर' तो बो हो ई किया सकै है? इणी भांत सूं मुनि जिनविजय सपादित 'खरतरगच्छ पट्टावली सग्रह' री अनुक्रमणिका में भी दोनूं स्थाना नै श्रेक ही मान्या गया है।

म्हा जद इण बाबत खोज करी कै बो प्राचीन 'वीकमपुर' स्थान कुणसो है तो पतो चाल्यो कै फलोदी सूं चाळीसेक मील पातरै जिको 'वीकमपुर' है, बो ही १३वीं शती रै उल्लेख-म्राळो 'वीकमपुर' है। इण 'वीकमपुर' मे पैला जिका महावीर जिनालय आदि जैन मिंदर हा, बै अर जैना री जिकी आछी बस्ती ही, बा अबै कोनी पण इण नगर रै बाबत केई मध्यकालीन जैन उल्लेख म्हांनै मिल्या है। इतिहास री दृष्टि सूं ओ नगर बहोत महत्त्वपूर्ण है।

राजस्थान मे श्वेताबर जैन सम्प्रदाय रै खरतरगच्छ रा आचार्यां री आछो प्रभाव रैयो है। इण गच्छ री 'युगप्रधानाचार्य गुर्वावली' नांव री महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक पट्टावली मे १२वी सू १४वी शती तक रै 'वीकमपुर' रै बाबत मोकळा उल्लेख मिलै है। ईं रै पछै इण नगर रो सवत्तानुक्रम सूं इतिहास कोनी मिलै। खाली १५वी शती रो तांबापत्तर अर १६वी शती रा जैन प्रतिमा-लेख मिल्या है।

ऊपर लिखे मुजब जैन-उल्लेखा सूं वीकमपुर रै सामाजिक अर धार्मिक जीवण री थोड़ी झलक मिलै है। वीकमपुर कद बस्यो, ईं रो तो कोई पक्को प्रमाण

कोनी मिल्यो पण १२ वीं शती में बो म्राछो नगर हो अर घणो भरयो-पूरो हो। उण री हजारां घरां री बस्ती ही, जिकां में महेसरी जात रा लोग भी मोकळी तादाद में हा। उण समै में जैन भी खासा रंया हुसी पण उणां री सख्या मे घणो बधोतरी तो जिनदत्तसूरिजी रै प्रभाव सूं हुयी। जैन मिंदर बठै पैला भी हुतो [1] पण जिनदत्तसूरिजी उण मे महावीर प्रतिमा री प्रतिष्ठा करी अर जद सूं ही बो तीर्थ स्थान रूप मे मानीजण लागग्यो। धार्मिक उत्सवां मे बठै रै लोगां नै खासी रुचि ही अर आचार्यां रै प्रति घणी श्रद्धा ही। १४ वी शती रै पूर्वार्ध ताईं तो बठै री हालत आछी रंयी पण संवत् १३४१ सूं १३९३ ताईं रै गुर्वावली रै वर्णन मे "वीकमपुर" रो उल्लेख नहीं हुवण सूं आ संभावना करी जा सकै है कै अल्लाउद्दीन रै समै वीकमपुर नै भी नुकसाण पूग्यो हुसी। संवत् १४७६ मे जद बठै 'खरतर विहार' नाव रो प्रासाद (महल) सगळै संघ मिलर बणायो तो हुय सकै है कै इण सूं पैला-आळो मिंदर पड़ग्यो हुसी, का जीर्ण हुयग्यो हुसी। १९ वी शती रै बाद रो भो कोई जैन उल्लेख कोनी मिलै। हुय सकै है, इण रो कारण ओ हुवै कै उण रै पछै इण नगर री बा जाहो-जलालो नही रंयी हुवै। व्यापारिक साधना री कमी रै कारण सायद वीकमपुर रा लोग जीविका, का व्यापार-सारू और कठेई चल्या गया हुवै।

मुहणोत नैणसी री ख्यात मे 'वीकमपुर' रो उल्लेख केई प्रसगा मे—खासकर भाटी राज्य र प्रसगा म, आयो है। बठै रा भाटी शासकां अर वीकमपुर रा हेठवाळ गांवा, बठै रा कूवां अर तळाइयां आदि रो वर्णन भी हुयो है। उण रो जरूरी अश अठै दियो जावै है—

भाटियां माहै केल्हूणां री साख—राव केल्हण केहर रो, केहर रावळ मूळराज रो पोतरो। पैहली तो रावळ केहर रै टीकातूं मुदायत बेटो केल्हण थो। पछै रावळ केहरनूं विगर पूछिया कठैक सगाई कीवी। तरै रावळ केहर रीसायनै केल्हण वडा बेटातूं जेसळमेर-थी परो काढियो। टीकातूं लखमण लोहड़ा बेटातूं कियो। सु केल्हण अेक वार तो को दिन आसणीकोट रह्यो। पछै मन माहै विचारियो 'आसणीकोट मोनूं पछै ही जेसळमेर रो धणी रहण नही दै।' तिण समै रावळ केहर राम-मरण हुवो। तरै केल्हण विचारियो—'कोहेक ठोड़ खाटणी।' तिण दिन विक्रूपुर सूनो पडियो। तठै राव केल्हण आण गाडा छोडिया। आगै कोट मांहै घणा झाड ऊगा था, तिणा री घणी झगी हुय रही थी, सु सारा झाड-झूप बाळ दिया। आप कोट मांहै वास कियो।

---

१. तवारिख जेसळमेर रै मुताबक देहराय रै दीवान ओसवाळ पदमीसी संवत् ८९९ री सावण सुदी ५ नै वीकमपुर मे मिन्दर बणायो।

तठा पैहली रावळ घड़सी धरती बाळण बास्तै विला मांहे चाकरी की, तद जैतुग केल्हा रो बेटो महिपो विला मांहे साथै हुतो। इण विला माहे घणी चाकरी करी हुती। इणै खरच घणो पूजवियो हुतो। सु पछै रावळ घड़सी धरती वाळी; तरै सारां विलायतांनूं वधारिया। तरै महिपानूं कह्यो—थे मांहरी बडी चाकरी पोहता छो; सु थे मांगो तितरी धरती म्हे थांनू दां।' तरै इणै सणा री तळाई सरह-रो पोकरण-थी कोस १६, फळोधी सूं कोस ८ उठा-थी लेनै बीठणोक सूधी इण धरती मांगी। रावळ घड़सी इतरी धरती जैतुंगनै दीवी हुती। बीठणोक बीकानेर सूं कोस सतरै १७ छै। जोगी रा तळाव, देवाइतरा तळाव घड़सी री दीवी हुती; सो विकूंपुर को विन जैतु ग रै ही रह्यो। तठा पछै पूगळ ऊपर मुलतान री फौज आई; तिण पूगळ लियो। पछै वा फौज विकूपुर आई; तरै जैतु ग कल्हैरै मरनै विकूंपुर रो कोट दियो। गढ तुरके लियो। के दिन गढ तुरकाणै रह्यो। तुरकै गढ मांहे मसीत १ कराई छै! नै साह बीदा मुलतांण रा वासी री करायो कोट मांहे देहरो? ज्यान री छै। पछै तुरकांनूं खांण-पाणनूं जुड़ै वयुं नही, तरै तुरक कोट विकूपुर छोड परा गया; सु विकूपुर सूनो पड़ियो थो। मांहे घणा झाड़ ऊगा था, तिण समै रावळ केल्हण खाली ठोड देखनै आसणीकोट सूं विकूंपुर, आयो, नै, अठै रह्यो। कोट मांहिला झाड़-भगी बाळ दिया; तिके अजेस बळिया ठूंठ दीसै छै। गढ रावळ केल्हण समियो। विकुंपुर ऊचो थोब मार्थ रो छै। प्रोळ सखरी छै। घर १ मांहे सखरो छै। देहरो १ अेक साहू बीदा रो करायो सखरा छै। भीत तो गढरी पाखती इसी-सी हो छै। कोहर १ किलांणी प्रोळरी भीत हेठै छै, पाणी खारो छै, पुरसे ४०। दोळो पाणी कोस ३ तथा ७ छै, नेड़ो कठै ही न छै। लोक रहै छै सु सोह कोट माहि रहै छै। फळोधी सूं कोस २५ छै, जेसळमेर सूं कोस ७० छै, बीकानेर सूं कोस ४५ छै। देरावर सू कोस ६० छै। पूगळ सूं कोस ४४। वाप, विकूंपुर सूं कोस १६, फळोधी सूं कोस ८, किरड़ा निकीक, तिकोस बडो गांव छै। ठाकुराई री मढ बाप मार्थ छै। बांमण-पलीवाळ घणा वसै छै! वाणियां रा घर ५० तथा ६० वसै छै। वाप घणा, सेवज गोहूं भारी सीव काठा नीपजै छै। मण १ गोहूं वायो मण १० गोहूं हुवै छै। घणी ज्वार हुवै। सखरी साख हुवै छै, ताहरां कण-नैपत गोहूं मण २०००० तथा ३००००० जाभेरा हुवै छै। बीजा ही तिरहड़ सारीखा रूडा गांव छै। मोणस हजार २०००री ओड़, राव बीकूंपुर रै भले समा अे ठोड छै। मारग देरावर मुलतान-रो वहे छै, तिणरी रूडी मोपत छै। तिका ठोड रावळ केल्हण खाटी। भली ठाकुराई जमी छै।।

केल्हण रै बेटै रिणमल-सुत गोपाळ (गोपा) रै गादी माथै बैठणै रो, उल्लेख ईं ख्यात में है।

इण रै बाद विकूंपुर री लड़ाइयां रो, फेर बठै रा राजपूतां अर दूजां री बांट मे जिका गांव अर कूवा आयोड़ा हा, उणां रो ब्यौरो दियो गयो है ।

सं० १४०६ रै तांबापत्तर मे रावत केहरि रो जिक्र है । उण रो प्रसिद्ध नाव केहर हुतो । उण रै बेटै केल्हण रै राजकाळ रो उल्लेख मिलण सूं नैणसी री ख्यात रे आधार सूं ई औ अनुमान लागै है कै १४वीं शती रै उत्तरार्ध में अलाउद्दीन रै हमलै आदि रै कारण बीकमपुर निर्जन-सो हुयग्यो हो । उणनैं केल्हण फेरूं आबाद करयो ।

स० १६४८ मे छपी तवारीख जेसळमेर रै पेज १८३ में कोट बीकमपुर रो हाल छप्यो है,। उणसूं नैणसी री ख्यात रै बाद री जाणकारी मिलै है ।

तवारीख जैसळमेर में बीकमपुर कोट नैं महाराजा विक्रम बणवायो—आ लिखी है, पण इण री सभावना कम ई है । हा, विक्रमपुर रो प्रसिद्ध नाव बीकूंपुर का बीकमपुर है, इण कारण दूजै कोई बीकम नांव रै आदमी इण नै बसायो हुसी । अबै बीकमपुर री काई स्थिति है, इण री पूरी सरियां जाणकारी कोनी । जे सूनो, का खडहर रूप मे हुवै तो उणरी खोज जरूरी है । इणीज भांत राजस्थान रा घणा ई गाव-नगरां रै उत्थान अर पतन-रो इतिहास खोजण जोग है अर सागै-सागै उणां रै उत्थान अर पतन रै कारणां नै ई जाणणो जरूरी है ।

थोड़ाक बरसा पैलां डा० कैलाशचन्द्र जैन राजस्थान रा प्राचीन अर मध्य-कालीन स्थानां, का नगरां रै बारै मे आपरो शोध-प्रबन्ध त्यार करयो हो । बो ग्रन्थ घणो महत्त्वपूर्ण है और अंग्रेजी मे छप्यो है । पण उणा बहोत ई थोड़ा स्थानां रै बारै मे अर वा भी छप्योड़ी सामग्री रै आधार माथै खोज करी है ।

राजस्थान अेक विशाळ प्रांत है । उणरै प्राचीन स्थाना अर नगरां री सख्या बहोत है, ई कारण केई लोग बरसां-तांई उणरै इतिहास री खोज में लाग्या रैवै तो की ठोस सामग्री प्रकाश में आ सकै है । आशा है, राजस्थानी साहित्य-इतिहास रा संशोधक विद्वान् ई विषय मे उचित ध्यान देवण री चेष्टा करसी ।

o

मंगळ अजै अळघो है

रेडियो माथै वाइकिंग री जात्रा रा समाचार सुण'र सात-आठ बरस रो प्रमोद आपरै भोळ अर मीठै सुर में पूछै—"पापा, मंगळ कितरोक अळघो है ?"

टाबर री जिग्यासा म्हारी आंख्यां में चमक भर देवै । मैं टाबर कानी देखूं अर सोचूं कै लारलै दिनां छापा में मगळ बाबत कितरी खबरां छपी है ! दो मूठी माटी रै पूतळै मिनख रै तै कियोड़ी वेळा माथै वाइकिंग मगळ पर पूग्यो, बठा सूं चितराम भेज्या, बठा री रेत खिण'र धरती माथै भेजी अर अबै इण खबर नै सुणण में कोई खास उछाह को रह्यो नीं कै मिनख मगळ पर पूगग्यो है । कारण, कै आज रै विग्यान इतरी तरक्की करली है कै मगळ मळै ई कितरो ई आघो क्यूं नी होवै, जद मिनख मगळ माथै उतरणो तेवड लियो है, तो गिणमा दिनां मे मगळ री धरती माथै उतर ईज मानैला । मगळ री एकोएक पडत खोद'र उणरै भोम री तत्त्व-विग्यान री दीठ सूं परीक्षा कर पोता नै विजय-गारवा सूं भर, मगळ नै डावो नाख देवैला अर आगै बुध, शुक्र, शनि कानी जावणरो रस्तो सोधैला ।

म्हनै मङ्गल री सही दूरी रो ठाह कोनी । जद किणी बात री सही खबर नी होवै तो औसत भारतीय दारसनिक बण जावै । मैं ई दारसनिक बणण रो साग रच'र उणरै ज्यूं ईज टाबर बण भोळप सूं जवाब देवण री कुटळास सूं मुळक'र इण सगळै अखबारी ग्यान रै भरम मे विंध्यो—थको बोलूं—

"भो रह्यो मङ्गल, मङ्गळ कोइ आघो कोनी, बेटा !"

'ऊंऽऽऽ हूं ऽऽ......, साचो कैवो नी ।' प्रमोद नै म्हारी बात कीं जची को ही नीं ।

उणरै 'ऊं हूं' रै सागै म्हनै ई लागै कै साची बात की दूजी है । मैं ई की गलत कै रह्यो हूं । इण मैं तो कोई गलती कोनी 'कै ओ मङ्गळ—मङ्गळग्रह—कोई अळगो कोनी' । वाइकिंग इण माथै पूगग्यो है अर कदास मिनख ई इण माथै पूग जासी ।

पण एक दूजो मङ्गळ, जको 'आनन्द-मङ्गळ' में है, वो ? वो तो मिनख सूं घणों आघो है। फकत इण मङ्गळ तक पूग्यां कांई होवैं ! पूरै मिनखपणैं रो मङ्गळ तो उण मङ्गळ तक पूगण में है !

मैं गतागम मे पजग्यो। जे मिनख मङ्गळ तक पूग ई गयो, तो कांई होसी ? विग्यानी उम्मेद करै है कै मङ्गळ माथै ई मिनख बसै है। धरत रो आदमी मङ्गळ रै आदमी सूं मिलणो चावै है ? मङ्गळ माथै पूग्यां, मङ्गळ रै आदमी सूं मिळ्यां कांई होसी ? फकत धरती रो मिनख एक जिग्यासा री लाय में बळ रह्यो है। वा लाय ठर जासी। वठा रै आदमी नै आपरो भाई कहसी। उणनै धरती माथै बोलासी। ढोला रै ढमाकै उणरी आगता-सागता करसी। एक दूजै नै बाथ्यां में भर'र लाड-लडासी। एक दूजै रा गुण गासी। पण कितराक दिन ? आज री धरती रो मिनख किणीं ई प्रेम नै कितराक दिन पाळ सकै है। सगा-सनायतां रो प्रेम छोरा-छोरचां रो ब्याव नी होवै, जितरा दिन रैवै। धणी-लुगाई रो प्रेम घणैं सूं घणो दो-एक टावर नी होवै, जित्ता दिन रै सकै। मां-बाप रो प्रेम पाखां नी ऊगै, जितरै रैवै अर पाडोस्यां रो प्रेम पछीत नी छुड़ै जितरै। ज्यूं इज कठै ई हक अथवा पइसो बीच मे आय जावै, प्रेम कपूर ज्यूं उड़ जावै अर मन बासी दूध ज्यूं गंधीज'र फाट जावै।

मङ्गळ रै मिनख सूं धरती रै मिनख रो किसौक रिस्तो निभैला, ओ तो भगवान जाणैं, पण धरती रा मिनख धरती रै मिनख सू किसा रिस्ता निभावै, ओ मैं देखू हूं। आज ई काळा मिनख गोरै मिनखा री गोळ्यां सूं मरै है। मिनख नै मिनख रै लोही री इसी तिरसा है कै मातृभूमि, धरम, भासा नियम अर भलाई जिसा लुभावणा आखरां नैं भांत-भात रा गैणां-गाबा पैराय मिनख-मिनख नै हर घडी मारै है। मिनख रो ग्यान अर विग्यान, धरम अर नीति, बुद्धि अर बळ सै इण बात मे खप जावै कै किण भांत मिनख नैं इण तरै सूं मारां कै दुनिया म्हारै माथै आगळी नी उठा सकै। राम अर क्रिसण होया, बुद्ध अर महावीर खपग्या, ईसा अर मोहम्मद चलग्या। पण धरती रै मिनख, धरती रै मिनख नै मारणों बन्द को कियो नी। की आदमी ज्यूं-ज्यूं शान्ति अर प्रेम रा कबूतर उडावै है त्यूं-त्यूं की आदमी घृणा नै हिंसा री दौड नै रोज-रोज वधावै है अर मिनख ई है—कै इतरो होवता थकां ई मङ्गळ माथै पूगणो चावै है।

मिनख रै ग्यान अर विग्यान मिनख नै मिनख रै नेडो लावण सारू कांई कांई को सिरज्यो नीं ? रोग सोझ्या अर उणां र औखधियां सोझी। रेडियो नै टेलिवीजन बणाया। हवाई जहाज अर राकेट सिरज्या। समंदर रो तळ सोझ्यो अर आभै रो छेह लीनो। रग अर रस रोग, गन्ध अर परस रो इसौ अखूट खजानो सोझ लियो कै मिनख दुःखी हो ई नी सकै। पण मिनख है, कै उणनै हाल मुख नसीव

बळि

थोड़ा दिना पेला रणछोड़रायजी रा मन्दिर मे बैठा-बैठा, म्हा अेक त्रया-चार्य (भिषगाचार्य, ज्योतिषाचार्य नै साहित्याचार्य) वडील मित्र सागै बळि प्रथा पर चरचा चालगी । बळि रै बकरे रो नाम सांभळताई वै बोलिया—

गज नैव व्याघ्रं नैव, सिंह नैव नैव च ।
अजापुत्रं बलि दद्यात्, देवो दुर्बल घातकः ॥

बापडो वकरो ईज वळि रै वास्तै क्यूं ? हाथी कै वाघ रो नांम नीं देईजै तो पछै सिंघ रो तो देईजै ई कीकर ? मिनखां री तो वात ई कांई, देवां नै भी नवळां नै मारण में मजो आवै । बापडो अजापुत्र ईज मिळियो । बिचारी बकरी नैणां माय सूं डब-डब आंसू सारती ऊभी रहवै । गुरकियां करणो आवै कोनी नै सींगडा है तोई जोर कोनी चालै ।

नवळां रो वेलि कुण ? गावीजै है कै 'निरवळ रो वळ राम' पिण आज तांई सवळां रै अत्याचारा सूं पशु बळि रो तो सवाल ईज कोनी, मिनखां री भी कितरी वळि हुई हुवैला, गिणतीई कोनीं । बागला देश में लाखा लोगा री आहुति देवीजी ! अफिका में थोडा दिना पेला डोढ सौ मिनखा नै आंख रै भवकारै में मौत रै घाट उतार दिया । लागै है कै नवळो वर्ग बगैर कसूर आपरी वळि देवतो ईज रहवैला । उण रो तो सिरजन इण वास्तैई हुओ दीसै ।

आज म्हनै थोडो ताव है । सेसलो ओढिया, मांचा माथै बैठो, वारी माय सू छाजा कानी देखूं हूं । अेक लट लटका लेती चालती ही कै कठैई सूं अेक कावर आई नै उणनै गिटगी । अेक नवळो फेर अेक सवळा रो जीमण वणग्यो । 'जीवो जीवस्य जीवनम्' मोटा नंना नै खावै । मोटा रै वास्तै नंना न बलिदाण देवणोईज चाहीजै । पण ओ जगत रो नेम है कै अत्याचार ? वेदकाळ सू आ रीत भांत चालती

आई है नै न्हनै लागै है कै जुग-जुग ताई इणरै बच हुवण री कोई अेंधाण कोनी, कदाच उठै ताईं, उठै ताईं मिनख मावरै स्वारथां सूं ऊंचो नीं उठै । पण आजरी दशा देखतां तो इणो विस्वास कोनीं हुवै । जीवतां नहीं तो नहीं, पण कुण नहीं चावै कै मरियां पछै सरग मिळै तो उत्तम । कोई मंडो पेच लड़ावां कै सीधा सरग में जावां । सास्त्रां में विधान है कै यज्ञ में पसु री बळि सूं देवता तो राजी हुवै ईज पिण उण पसु री आत्मा भी सीधी सुरग में जावै । To Kill two birds with one stone वाळो ओखाणो भी लारै रह गयो ! अठै तो अेक ही सागै तीन कांम ।

मिनख-बळि री प्रथा भी कदाच इणीज भावना सूं चाली हुवैला । जे इण भांत रा बलिदाण सूं मिनख री आत्मा सुरग में जावती हुवै अर आपां सगळा सरग में जावण वास्तै तड़फता हुवा तो क्यू नी अेक सामूहिक बलिदाण रो आयोजन कियो जावै ? इण जूण रो दुख तो नी भोगणो पड़ै । झट मुक्ति मिळै ।

अवैदिक दर्शन रा विद्वान चार्वाक इण सूं भी तीखी बात कीवी:—

पशुश्चेन्निहत: स्वर्गं ज्योतिष्टो मे गमिष्यति ।
स्वपिता यजमानेन तत्र कस्मान्न हन्यते ।।

किसो सपूत नही चावै कै उणरै मां-बाप नै सरग मिळै ? पण किसरी ई सद्भावना नै श्रद्धा हुवता थकां, आपां उणारै बलिदाण री कल्पना भी नीं कर सकां । उलटो समाज इणनै (मां-बाप रै बलिदाण नै) घोर पाप गिणै अर बलिदाण देवणिया नै कदैई माफ नी करै ।

कदाच चार्वाक रै प्रचंड तेज सूं चकित हुयनै पंडितो चार्वाक नै बृहस्पति रो अवतार मानियो (पद्मपुराण ३ २३६) । पिण उणसूं कांई ? कहवै कै जद चार्वाक अर वांरा चेलां रो तेज पडिता सू नीं खमीजियो तो वांरै माथै पणां अत्याचार किया 'सत्यमेव जयते कठै ? सुकरात, लिंकन अर गांधी री बळि कांई निकमी जावैला ? हाल तो ओईज लागै । आगै भगवान जाणै ।

हमैं भादरवो चालै । थोडा दिनां पछै आसोज आसी । आसोज महीनो मतळब सराध-पख-नै सराध-पख मतळब कागलां अर बामणां री गोठां । सराध संबंधी चार्वाक रा विचार इतराईज तीखा हा । अठै रावडायो तो उठै मिळसी । कीकर मिळसी ? कोई नी जाणै ।

आसोजी नव-रात्रां मे फेर बकरां अर भैंसां री बळि । उण निर्मळा ? लोही रा टीका टपका कर उणांरी बोटियां रो परसाद । कांई माताजी नै भावी भ[illegible]

वास्तै उणारी सताना री बळि ? कोई मा-बाप आपरै बेटा-बेटिया रो बळिदाण चावता हुवैला ? पिण आपां नै किणरी फिकर ? नियम रो उल्लघन करां हा, धरम रो नाम लेयनै करां हा, विधिसर करा हा अर इणमें गौरव मानां हां !

अेक वार संत ज्ञानेश्वर श्रीक्षेत्र पैठण जावता हा । मारग में अेक आदमी आपरै भैंसे नै कूटै हो, औ निर्दय दृश्य जोयर ज्ञानेश्वर रोवण लागा। गांम रा पडिता पूछियो रे टावर ! मार तो भैसा नै पड़ै है अर रोवे तूं है ! आ कांई बात है ?

ज्ञानेश्वर कैयो कै "आत्मा तो अेक ईज है।" पडित हसण लागा । जे ज्ञानेश्वर री वात साची है अर वेदा रो भी ओईज मार है तो वेद-विरुद्ध आचरण करतां आपांनै लाज आवै है कोई ?

मिनख-बळिदाण री कथा, पशु-बळिदाण री कथा सू भी विचित्र है। कहवै है कै राजस्थान रै घणखरै गढा अर तळावा मे मानव-बळिदाण रो अेक लांबो नै वेदना-भरियोड़ो इतिहास झाकै है ।

मिनख-बळिदाण री बात करता शुन.शेप री वेद-कथा याद आ जावै ।

राजा हरिश्चन्द्र रै घणा वरसा ताई कोई संतान नी हुई । वशिष्ठ मुनि रै कहणै सूं हरिश्चन्द्र वरुण री उपासना करण लागो । घणा बरसा पछै वरुण तुष्ट हुओ नै वरदान दीनो कै जा थारै अेक पुत्र हुवैला पण पुत्र रै हुवतांईज तू म्हनै इणरो भोग दीजै । राजा इण वात नै कबूली । पिण जद बेटो हुओ तो नटण लागो । कदैई कहवे कै हाल तो छोरो दस दिना रो ईज हुओ है । कदैई कहवे कै हाल तो इणरा संस्कार बाकी है । आखर अेक दिन रोहित खुद उठै सू नाठो, क्यू कै उणनै खबर पडी कै उणरा पिता उणरो भोग देवण वाळा है । निराश वरुण कोप कीधो नै हरिश्चन्द्र नै जळ दर हुओ ।

रोहित नै इणरी ठाह पडी तो घणो दुखी हुओ । अेक कानी पिता रो रोग नै बीजी कांनी खुद री मौत ! आपरो जीव किणनै व्हालो नही हुवै ? अेडी मडागांठ में उणनै अेक लोभी बामण अजीगर्त मिळियो । धन रै लोभ मे उणै आपरो विचलो बेटो शुन.शेप रोहित नै सू पियो ।

हमैं तो नगर में यज्ञ री तैयारिया हुई । विश्वामित्र ऋत्विज, जमदग्नि, अध्वर्यु, अयास्य ऋषि उद्गाता नै वशिष्ठ ब्रह्मा रै पद मायै थरपीजिया । बापडो शुनः शेप पशु ज्यूं थामलासूं बंधियोडो हो ।

बळिदाण रो बखत आयो तो वो जोर-जोर सू रोवण लागो । लोगा न दया आई । विश्वामित्र इणरो वध करणै रो ना कैयो ।

आखिर शुनःशेप रो लोभियो बाप हिज उणरो वध करण नै तैयार हुओ। पिण संग जिणां रै नां कहवण सूं विश्वामित्र मन्त्रबळसूं उणनै छुड़ायो। पछै वरुण री कृपा सूं हरिश्चन्द्र जळंदर रोग सूं मुक्त हुओ।

शुनःशेप री कथा समाप्त हुई। पिण आ कथा घणा सवाल, मिनख-बळिदाण रा सवाल मिनखजात नै पूछनी जावै कै बळिदाण किण री?

सार ओ है कै बळिदाण नबळा रो, भोळां रो, अबूझां रो ईज देवीजैला। पद मे, कै धन में सशक्त संग जणा आपरै स्वारथ खातर इणांरो भोग लेता रहवैला। महत्व तो है ईज बळि रो मरम बस इतरो ईज है।

□

ऊमर

आ एक इसी चीज है, जिण रो दाता घणो दातार है, पण आपा भोगता घणा भोळा हां कै इण घणमोली वस्तु री कदर नईं करां अर इणनैं इण तरैं अैळी जावण देवां, ज्यूं गदी, नाळी रो पाणी । जिका लोग समझ राखैं है, वैं तो गदी नाळी रै पाणी सूं भी लहलहावती बाडी खडी कर लेवैं, पण समझ नईं राखणियां ऊमर रै मिस अणगिणत सास रूपी रतन पायर भी कोरा-रा-कोरा पाछा वहीर हुय जावैं । अस्सी बरसां रो डोकरो है, सरीर सेवा करण सू मुकरग्यो, खुद पराधीण हुयोडो है, आपरा हलण थकग्या अर बेटा पोतां हुक्म हलावणो छोड दियो, पण फेर भी रळी आ है कै भगवान धन्वन्तरी आयर कोई सजीवणी बूटी मूंडै में छोड देवैं तो दस बीस बरस दुनिया ओर देखलूं ।

दुनियां रै भोगा में जे मिनख एकर-सीक फंसग्यो तो बो बानैं छोडणा चावै कोनी—घी हजम भलेई ना हुवो, खायनैं खराब तो करसी ई । इणी तरैं ससार रा भोग भलेई भोगीजो मत, बारी वायड़ तो कदेई मरै कोनी । ससार रा भोग भोगण खातर राजा ययाती आपरी ऊमर हजारूं बरस बधवाई, पण फेर भी इण जाळ सूं बारै आवण री मन में आई कोनी ।

मिनख री ऊमर सार्थक बा है, जिकी मानखै-रै काम आवै । आपरै भोग-विलास खातर जे कोई किरोडा री मत्ता भी जोड लेवैं तो बो बडाई रै बदळै निन्दा रो ई ठाव है, क्यूं कै जिको धन मानखै रै काम आवतो, उण माथै बो सरप बण नै बैठग्यो । इसा आदमी चावै थोडा जीवो, चावै घणा, बानै जमानै रै दुख-दरद सू कोई सरोकार कोनी, बारो पाडोसी इकातरै इग्यारस करै तो वैं समझै पेट री शुद्धि हुवै, असवाडै-पसवाडै जे मानखो कस्टा मे किलबिलावै, तो वा नैं वेरो ई कोनी । वैं आरी मौज मे मस्त है । वैं खुद धापर माल-मलीदा जीम लिया, तो सोचै, सगळो ससार छकर जीम लियो । पण इसा मिनखा रो धरती माथै अवतार जलमभाग नै भार मारण खातर ई हुवै । वापड़ा कीडा ज्यू बी-न-की कुतरता रैवै, अर आखरी बुलावो

सहज सुलभ चमत्कार दूसरै रूप मे आपानै युवती रै अगां में देखणनै मलै। जिकी छोरयां बाळपणै में काळी–कौफी–सुगली सी ही, आंखे–नाके भी सुरेख लागणी को ही नी, यौवन जद वांरै माथै आपरो पंछो फेर दियो, तो बै सागी छोरयां, सबै आकरसण री केन्द्र बणगी अर बासू बात करणी आपा नै सोवणी लागण लागगी। औ योवन रै पंछै रो सहज सुलभ चमत्कार है जिको प्रायः पन्द्रै सूं पच्चीस री ऊमर तई मे देखणी मे आवै। इण सीमा सू पार लघ्या पछै, ज्यू–ज्यूं पछै री पापडया झड़नी सरू हुवै, औ आकरसण भी घटण लाग जावै। झडती पापडया रै बदळै आर जे कोई दूजी पापडया चेपसो, तो चेपो भलेई, बा पैली–आळी रंगत पाछी वावड़ै कोनी। इंग्लैंड री राणी एलीजाबैथ (पैली) आपरी ऊमर रो असर लुकावण खातर बूढापै तईं कोसिस करती रैई, पण लुकायां सू ऊमर कद लुकै? आपा जे किणी रै प्रति घिरणा, प्रेम आद रा भाव लुकावणा चावां, तो बै भी लुकै कोनी, पछै ऊमर नै लुकावणो तो प्राय असभव है।

जद सहज सुलभ आकरसण री सीमा सूं ऊमर ऊपर निकळ जावै तो बो छिणभगुर चमत्कार चटकारो बोलाय जावै। पण जिको अरज्योडो चमत्कार है, वो टिकाऊ हुवै, जिण माथै ऊमर रा आघात असर करण में समरथ कोनी। सरोजनी नायडू जद पैलीवार इंग्लैड गई, तो उणरी ऊमर १६–१७ वरसा रै नैडी ही। पण अणथक अवसाय रै कारण साहित्य रो बा इत्तो विसद अध्ययन कर लियो के वा एक विस्मयकारी बहु–पठित लड़की गिणीजण लागगी। उणरै व्यापक अध्ययन रो प्रभाव हो के वा उण छोटी उमर मे ई इत्ती सारी कविता लिखण मे समरथ हुई के उण समै रै आलोचका सरोजनी नै टैनीसन, शैले, कीट्स आद मानीता कवियां री कोटि में राखता उण रो अभूतपूर्व सन्मान करचो।

स्टीफेन ज्विग एक जागा लिख्यो है के मनै जिको भी साहित्य पढणो हो, मैं सत्रह साल री ऊमर तक मे बाच लियो। इण सूं भी वेमी इचरज री बात के अलेक्जेंडर पोप अंग्रेजी रा सगळा क्लासिक्स बारै वरसा री ऊमर तई में पढ लिया!

आमतौर सू १८–२० बरसा री ऊमर नै टाबर भोळप मे सारै छोड देवै अर बाद में विचार करै के सबै की करणी है, तो बठीनै १८–२० री ऊमर में जागरूक लोग आपरी मैनत रै पाण इत्तो फुटरापो, इत्तो चमत्कार हासल कर लेवै के बै आपरै कामां सू दुनिया नै मारग–देखाळण मे समरथ बण जावै।

इण तरै अरज्योडो चमत्कार ऊमर सागै घटै कोनी, वधै। करम खेत मे

तल्लीन मिनखा नै निकमाळै री चिढ़ हुवै। काम कर्‌यां ई बांनै आराम मिलै, नईं तो जीवणो हराम है। निरन्तर करमखेत मे जूझ्योडा रैवण कारण वारी आत्मा में एक इसै आतम-सतोस री सरजणा हुवै, जिको बानै एक अनोखी कान्ति देवै, जिण सूं बांरै कामां रै सागै-सागै चैरो भी पळपळाट करतो रैवै। ज्यू-ज्यूं ऊमर बधै, इण कान्ति रो चक्कर मुखारविंद रै च्यारूं मेर मडतो जावै अर बो आभा रो अमिट चक्कर इसो चमत्कारी हुवै के उण री दिव्य जोत कदेई खीण हुवै कोनी। मिनख री सारीरिक सगती घट सकै, आख्यां री जोत मंदी पड सकै, दांत भी बासो छोड सकै, काना री वस्ती उठ सकै, पग पारका ज्यूं लाग सकै, हाथ काम रै नांव सूं धूज सकै, मिनख रो सोवणो सरीर खाली अणमेल ढांचै ज्यूं लाग सकै, पण आपरी अणथक मैंनत सूं जिको चमत्कार अरजित कर लियो, बो कदेई घटै कोनी।

ऊमर रो एक पक्ष है— उणनैं घटावणो-बधावणो। जमराज घरै गयोडै सत्यवान नैं तो खाली सावित्री ई पाछो लाई (बा भी घरे पूग्या पैली ई लिआई) और कोई ऊमर बधावण मे समरथ हुयो कोनी, पण अठै काम-काज में तो ऊमर घटावणी-बधावणी मामूली बात है। कैवै है कै अमरीका में राष्ट्रपति बणन खातर ३५ बरसां री ऊमर कम-सूं-कम हुवणी चाईजै, अर वठै आज तईं कोई लुगाई इण पद माथै पूगी कोनी इण रो कारण है कै २५ बरसां री ऊमर हुया पछै बै आपरी ऊमर सालोसाल एक घटावणी सरू कर देवै। इण तरै कोई लुगाई आपरी ऊमर ३५ कैयर अधवूढी या ढळती जवानी री बजणी चावै कोनी। बूढी बजै अर उण पद माथै पूगै, ईं सू नईं पूगणो ई आछो।

आज आपणै मुलक में भी सरकारी-सेवा रो मोकळो लाभ लेवण खातर ऊमर नै घटायर मंडावणो तो एक आम चीज हुयरी है। अणपढ लोगां खातर आ पोल चलावणी सोरी। ईस्कूल रो प्रमाण-पत्र तो हुवै कोनी, मन मे आवै जित्ती लिखावो। एक श्रीमानजी री ऊमर म्हारै पिताजी सू भी बेसी है। पिताजी रो सुरगवास हुयां नैं ४४ बरस हुयग्या अर समाया जद उणां री ऊमर ३३ साल ही, पण उणां रा साथी श्रीमानजी हाल ५५ रै माय चालै है। इणी तरै एक दूजे श्रीमानजी सूं बात करी तो बोल्या— बरस तो तेसट आयग्या, पण कागदां रै हिसाब सूं हाल पचावन मे बारै बरस घटै है।

ऊमर रो एक पहलू और आप रै सामो राखणो चावूं। छोर्‌यां रा सगपण दोरा ढूकै, इण कारण वां रा टेवा-जलमपत्र्या भी कूड़ा बणावणी पड़ै अर काम काढणो पडै। ऊमर लुकावण रो आमरो दूजवरा नैं तो खासा लेवणो पडै। एक इसा श्रीमानजी

खिड़कियां पांचे डटायर जद चंवरी ढूकण लाग्या तो कोई ऊमर पूछ बैठ्यो । मूंडै में पूरा दांत तो हा कोनी, पण तो ई बीस बरस तो करड़-करड़ चावग्या अर बोल्या— आ ई कोई पचीस-छाईस । पण साची बात तो आ है कै २५-२६ बरसां रो तो बीन-राजा रो मोभी बेटो हो !

ऊमर घटावण ज्यूं बधावण रो भी कठै-कठै महत्त्व है। साधू-सन्त, खास कर फक्कड़ बाबा, जद आकरसण री परिधि मूं बारै पड़ जावै, तो आपरी ऊमर ऊंची धकेलण लाग जावै । सित्तर बरसां आळो आपरी ऊमर अस्सी-पिच्यासी तो पक्कायत बतासी, अर पिच्यासी पछै सौ रै नैड़ी-तैडी— एक-दो घाट— बतावणी साधारण बात है । फलाणी जागा एक सौ बरसां रो बाबो रैवै— सौ बरसा री ऊमर अपणै आप में आकरसण, चमत्कार अर दरसण री चीज बण जावै ।

एक विचारक, जिण रै कलैंडर में ३६५ पाना लाग्योडा हा, हरेक तारीख रो कागद फाड़्यां सूं पैली इण मार्थ विचार करतो कै उण दिन बी काई—काई काम कर्‌यो ? बो दिन आछी तरै काम आयो या अैंळो गयो । जिको दिन अैंळो जावतो, उण सारू आगलै दिन बेसी परिश्रम करनै प्रायश्चित करतो अर इण तरै ३६५ दिना रो हिसाब राखतो ।

असल में इण भांत रो लेखो-जोखो घणो जरूरी है। ऊमर रा जिका गिणती रा सांस आपांनै मिल्या है, जे सचेत हुयनै आपां बांरो उपयोग करां, तो मानखै रा कस्ट मेटण में, उण री अळूझ्योड़ी गुथ्यां सळूझावण में, उणारी सुख-सांती पनपावण में सहायक बण सका, अर जे आपां कर्त्तव्य खानी सूं गाफल हां, तो सृष्टि में जे असंख्य जीव-जन्तु जलमै-मरै है, बां में अर आपां में कोई भेद कोनी ।

अठै हूं इमर्सन री बात याद करणी चावूं, जिको कैवै के अपणै आपनै एक इसी इकाई बणावो कै बा आपां नै दुनियां रै करोड़ूं लोगां सूं न्यारी देखाळ सकै ।

जीवण रा इछाळू कह सकै है कै म्हांरी गई जिको ऊमर तो गई, पण अबै म्हे कीं काम करणो चावां, जे ऊमर बध सकती हुवै तो । पण ज्यूं पैली ई अरज करी, ऊमर बधावणो किणी रै हाथ कोनी । ऊमर एक काचो धागो है, जिणनै सांस रूपी ऊंदरा रात-दिन, बिना विश्राम कुटै । अबार तो बै एडै-छेडै सूं कुटै है, काई ठाह बै किसै बगत बिचाळै ई कुटको लगा देवै अर खेलो खतम कर देवै ।

इण कारण निरभै हुयर सोवणो तो किणी हालत में उचित कोनी। मिनख नै जे कोई कैवै कै आज च्यार बजी तनै डेरा कूच करणा है, जिका सुभ कामं करणा है, जिका करलै। तो आ संभव है कै बीरा हाथ-पग फूल जावै अर वो कोई भी काम नही कर सकै; पण जिकां आपरै मन मार्थ थोडो कब्जो राख्यो है, बै इण चेतावणी सूं चलायमान हुवै कोनी अर जीवण रा बच्योडा घण्टा सुभ कामां में ई लगासी। जे आपां ऊमर अर जलम नै सार्थक करणा चावां तो आपां नै भोर मे उठतै ई समझ लेवणो चाईजै कै शायद आज रो दिन म्हारो छेकडलो दिन है अर इण रो जित्तो भी जादा सूं जादा सदुपयोग हूं कर सकूं हूं, करू। जे लारला दिन गफलायत में बीतग्या है अर अबै भी आपा दिनचर्या नै इण संचै में ढाळ सकां, तो आपा रो जीवण अकारथ जावण सू बच जासी।

जठै तक ऊमर बधावण रो सवाल है, हरेक आदमी आपरी मरजी-माफक ऊमर बधा सकै है। इण में चकरावण री बात कोनी, साचेई बधा सकै है। जे आपां ऊमर लेयर गैळ में गैळीजता रैया, फेर तो आपां रो जीवणो अर नईं जीवणो बराबर है। जीवणो वो है, जिकै में आपां काम मे जुट्योडा हुवा। जागतो रैयर काम करण रो समो है, वो ई जीवण है। साधारण आदमी चावै तो आप रै जीवण नै मोकळो बधा सकै। उदाहरण सारू-- सियाळै री रुत में साधारण लोग (जिकां नै मजूरी सूं दिवस हुवणो नई पड़ै) रात नै आठ बजतां बिछावणा में बड़ जावै अर दिनूगै आठ सूं पैली उठै कोनी। इण तरै बारै घंटा वै बिछावणा में बदीत करै। आं बारै घंटा मांय सू जे च्यार घंटा बचायर आठ घंटा सोवै तो एक दिन में पाव दिन ऊमर बधगी। जे आदमी बारै बरस और जीवण आळो है, तो बी री ऊमर च्यार बरस बधगी, यानी जिको आदमी पैली बारै घंटा काम करतो, वो सोळै घंटा काम करण लागग्यो। इण हिसाब सूं साधारण तौर पर जिको आदमी ३६ बरस जीवतो, ऊमर बधायर वो ४८ बरस जी सकै, साधारण तौर पर जिको आदमी ७२ बरसां तईं जीवतो, वो ऊमर बधायर ९६ बरसां तईं जी सकै।

आठ घंटा सोवणो भी जरूरी हुवै, आ बात कोनी। विद्यार्थियां खातर तो छ घंटा री नींद रो लेख है। अर इयां आपां रै देस में वैज्ञानिक विश्वेश्वरैया जिसा महापुरुष भी हुया है, जिका २४ घंटा में २२ घंटां काम करता थकां भी १०० बरसां सूं बेसी ऊमर पाई। आज वैज्ञानिक इण निर्णय मार्थ भी पूग्या है कै नींद लेवणो स्वास्थ्य खातर जरूरी कोनी। बिछावणां मे थोड़ी ताळ आड-टेढ करलो अर फेर पाछा ताजगी सू काम में जुट जावो।

मिनख बडो भारी निर्माता है। प्रकृति नै वीं मोरचै-मोरचै मात दी है, पण फेर भी प्रकृति रै नियमां री जावक अवहेलना भी वो कर सकै कोनी। वेगो उठणो, वेगो सोवणो, हळको जीमण जीमणो अर सगळां सूं बेसी जरूरी है—आपरो व्यवहार निरापद राखणो— छळ-कपट सूं हीण, वारै-मांय एकूंकार। आछै भोजन, नियमित सोवण-जागण अर आछै व्यवहार सूं चित्त में सान्ती रैवै, जिण सूं ऊमर नियंत्रित रैवै। असान्ती ई ऊमर रै घटण री कारण है।

□

बुढापौ

बुढापौ जीवरा रौ सिंझ्या काळ । लारै जगमग करतौ सोवणौ प्रकास तो आगै घोर अंधार । मिनख जीवण रा घडा मायै चढर लारै निजर नांखै तो उणनै घणौ अटपटौ लागै, अणखावणौ लखावै । पण सृस्टि रा इण सास्वत नेम नै कुण तोडै, देही रा इण प्राकृत धर्म नै कुण टाळै अर कुदरत रा इण अटळ प्रबध नै कुण भांगै ?

"उगै सोई आथमै अर जनमै सो मर जाय ।" जीव-जिनावर, पंछी-पंखेरू अर प्राणी मात्र नै आ अवस्था तो दिन-लागा भोगणीइज पडै । इण मारग तो सगळा नै वैवणौ इज पड़ै । इण मूं छुटकारौ नीं ।

तो पछै पछतावौ किण चीज रौ अर दुख किण वात रौ ? फगत समझ अर ना-समझ री वात । इण कारण ज्ञानी बुढापौ काटै सुख सू अर अज्ञानी काटै दुख सूं । एक समझदारी रै पांण राजी-खुसी सूं आपरौ वखत बिताय दे तो दूजौ मूरखता रै पांण रोवतां-भींकतां उमर रा दिन ओछा करै । ज्ञानी हिया में विवेक री कांखी फेर नै सोचै—

रसन, दसन, चख, श्रवण, पद; कर नह करत कह्यौ ।
सुत, दारा अरु मीत को, अचरज कवण भयो ।।

जद खुद रा अंग-प्रत्यग ई आपरै कह्या में कोनीं— आख्या सूं सूझै नीं, कानां सूं सुणीजै नीं, पगां सू चालीजै नीं, हाथ काम करै नी, डाढ-दांत विनारौ कियौ अर जीभ रै लोळा वळै तो पछै कुटुंब सूं आ उम्मीद क्यूं करणी कै वो पैली ज्यूं अबै ई उणरै कह्या प्रमाणै चालेला । "जिसौ बाजै वायरौ, तिसी ई लीजै ओट ।" वखत नै पिछाण'र वैवार किया जावै तो कोई देण इज नी हुवै ।

रही वात सरीर री हालत री, सो इंण में ई कोई नुंवी बात कोनीं—

दिन आयां देवळ डिगै, धवळ न खंचै भार ।
तुरियां इ पग रांटा पडै, मिनखा कितीक वार ।।

बचपण, जवानी अर बुढापौ सरीर रौ सास्वत धर्म। इण वास्तै यांनै सहज रूप में स्वीकारणौ, ज्ञान रौ लक्षण। जवानी में आभौ टोपाळौ जितरौ निर्ग आवणौ अर बुढापा में निस्कारा नांखणा अज्ञान री निसाणी। जवानी उमर री सांवणी अवस्था है पण ज्ञानी तो आ इज बात कहसी कै "गरव करै मो गवारा, जोबन धन पांवणा दिन च्यारा।"

पण अज्ञानी भीकतौ निजर आसी– 'हाय ! जोवनियौ जातौ रह्यौ, आई बुढापारी वार रे।' उणनै कुटम्ब, समाज अर अठा ताई कै खुदरै सरीर सूं ई अलेखां सिकायतां रहसी। वो माथौ धूणर कहसी—

बुढापौ अति बुरौ, निपट बुरौ नराह।
नह आदर हुवाईया, नह आदर घराह॥

कठै तो वा हालत के उणरौ नाम्यौ लूण पडतौ, उणरी सलाह बिना कोई पांवडो ई कोनी भरतौ अर कठै आज री हालत कै वो उतरयो ठाम हुयगो, वांच्योडो ग्रत हुयगो। कोई बैंबता नै ई कोनी बतळावै। 'अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछन कौन ?' दूजारी तो खैर बात छोडौ पण खुद रा घर मे ई कोडी री कीमत कोनीं। माचा री रास बणनै बूढो टरड, बूढौ ढागौ, बूढौ लरडौ अर डैण बाजण लागग्यौ। साठी बुद्धि नाठी रौ परवाणौ मिळग्यौ। जिणै हजारां मिनखां रै बीच अगनी री साक्षी देयर सेवा रौ ब्रत लियौ, उणै ई मन फेर लियौ ! करमा री गत नै कुण टाळै ? रेत मे मेख कुण मारै ?

डोकरी अर छोकरी बराबर हुवै। उणरौ ई चोखी चीज खावण रौ मन हुवै पण 'डोकरी रै कंये खीर कुण रांधै ?' बूढा खावै, एहळौ जावै, टावर खावै, हाड वधावै अर मोटयार खावै तो घणौ कमावै।' इसी हालत में डोकरौ भीकतौ रैवै अर घर-वाळा की गिनरत नीं करै। इण नै इज बुढापौ बिगडणौ कैव। कदै ई बुढापौ राम बिगाड दे तो कदै ई मिनख खुद।

म्हारै पडोस में इज परभु कुम्हार रैवै। अस्मी-पिच्यामी वरस री अवस्था अर बेटा-पोतां सूं भरी गवाडी। पण उण रै लेख तो कोई नी। बापडै रौ बुढापो विगड्यौ। यूं बापडौ ई लखणां रौ लाडौ अर औलाद निकळगी कपूत। 'कीं धव चीकणा घर की कवाडा बोया।' दिन उगतां ई महाभारत मच जावै। डोकरौ अंधारै थकांई कूकण लागै— "अरे सगळा कठीनै मरगा रे ! मनै माचै सूं नीचै नांखौ रे !" पण कोई गिनरत नीं करै। सगळाई कान बोळा कर नै चापळयोडा पडया रै वै। पणौ रोळौ मचै जद बहूआरियां कूकण लागै— "इंण नी मरै भर नी माचौ छोडै। कोई रात

जपै न कोई दिन जपै । इण राम सूं तो डैण मरै कोनी । घर नैं नरक बणा मेल्यो है ढागै !"

पछै कोई जाय नैं डोकरा नैं मांचै सूं नीचो नांखै अर वो जोर-जोर सूं अरडावण लागै । आ है दुखी बुढापा री तस्वीर ।

यूं हाथा री आगळियां ई एक सरीखी कोनी । ससार में भला भली । बिना थाभा आकास ऊभो । परम्परा सूं कस अर श्रवण दोनूं जनमता आया अर जमनता रहसी । इण वास्तै कईयां रो बुढापो बिगड़ै तो कईयां रो सुधर पण जावै । ससार रा वाडिया में बूढा माईत तो घणी मोटी बात पण कैवत है कै 'दानो तो दुस्मण ई भलो ।' 'जिण घर में नी बूढो, वो घर बूडो ।' बूढो मिनख घर रो ढाकण गिणीजै, इण कारण साकर सौ बरस हुया ई खारी कोनी लागै । फेर बूढै माईतां अर फाटै गाभै री किसी लाज-मेंहणी ! भाग हुवै जिण नै माईता री छिया मिळै । इण वास्तै इज कह्यो है—

माता तीरथ, पिता तीरथ, तीरथ ज्येस्ठ बाधवा ।
वचने वचने गुरू तीरथ, सर्व तीरथ अभ्यागता ॥

फेर माईता सूं बेसी औलाद र भलो चावणियो दूजो इण संसार मे कुण हुय सकै ? मा कैवता मूडो भरीजै अर बाप कैवता टाप आवै । उणा जिंदगी री घणी ऊँच-नीच देखी अर सुख-दुख रा छिया-तावड़ै मे धवळा लिया । इण वास्तै वांरै कनै जीवण रा कडवा मीठा अनुभवां रो अखूट खजानो । उणां सूं पूरो लाभ उठायो जा सकै ।

पण बात जद ई पार पड़ै, कै दनूं पख विवेक सूं काम लेवै । एक हाथ सूं ताळी नीं बाजै । संतान आ सोचै कै बूढा माईत पूजनीक अर दरसणीक । पाका पान अर उतरिया ठाम । न जाणै किण बखत झड जावै कै फूट जावै । पछै ऐ संचा निजरां देखण नै ई कठै ? अवस्या रै अनुसार सुभाव में फरक पडै तो कुदरत रो कसूर अर सरीर रा हाला थाकै तो प्रकृति रो धरम । फेर इण मारग तो सगळां रो ई वैवणो—

पान झडतां देख नैं, हसी जु कुंपळियाह ।
मो वीती तो बीतसी, धीमी बापडियांह ॥

मिनख औलाद री कामना इण वास्तै इज तो करै कै थाका पगां नै काम आवै अर संसार में नाम चालै । यूं औलाद री सही परीक्षा माईता री छैली चाकरी में इज हुवै । कोई आपरो फरज पूरी तरै सूं भली भांत निभायले तो कोई बीच मे इज तप

जावै। इण मौकें थोडी गेढ राखण री जरूरत रवै। पण गाढ ई राखण घण दोरौ। बहूआरियां छेह देवै तो वै पराई जाई। वांरौ इतरौ दोस नी। इण घर आई तो अठैरी बहूआरी वणी अर दूजी ठौड जावती तो उठैरी वणती। पण जद पेट रौ फरजंद ई बदळ जावै तो माखण डूबै जिसी वात वणै।

पण इणरै सागै बूढा मिनख ई जे वखत नै पिछाणै अर उणरै माफक आपरा वैवार नै ढाळै तो सुख पावै, नी तो खुद दुख पावै अर दूजां नै ई दुख देवै। अर छेवट वटै की नी। "पाणी पाणी रै ढाळ उतरै।" कारण कै वखत बड़ौ वळवान। वखत रा वायरा नै रोकणौ असम्भव। परम्परा सूं जमाना रै सागै समाज री मान्यतावां अर मूल्य वदळता आया है अर वदळना रहसी। इण वास्तै 'मैं कहूं सो साची अर बाकी सै काची' कय नै इण वदळाव रौ अणूंतौ विरोध करणौ मूढता री निसाणी। इण भांत तो सगै हाथा दुख पैदा करणौ हुयो।

आज रा वैज्ञानिक जुग मे दुनिया सिमटर नैनी-सीक हुयगी। खान-पान, ओढ-पैर अर आचार-विचार रौ एक दूजै माथै गहरौ असर पडण लागो। इण सुभाविक वदळाव नै एक हद ताई अगेजणौ इज पड़ैला। विना अ गेजिया पार नी पड़ै।

बुढापा में देखतै नैणां अर चालतै गोडा जठा ताई सम्भव हुय सकै की न की काम करतौ रैवणौ ई आछौ। नौकरी-पेसा इत्याद मे सेवा-निवृत्ति पछै निकामो हुय नै बैठणौ, मौत नै हेलो देवणौ है। बुढापौ जितरौ सरीर सूं ताल्लुक राखै, उतरौ ई मन सूं। औ इज कारण है कै कई जणा भर-जवानी में ई बूढा दीसै अर कईक बुढापा में ई मोट्यार निगै आवै।

पण सरीर जद इण हालत में पूग जावै कै—

जंतर पड़िया जोजरा, टूट गया सै तार।
वे झणकारा वह गया, गया वजावण हार॥

तो इण अवस्था में मन नै समझाय लेवणौ चाहिजै—

करणा था सो कर लिया, काळा केसा काम।
घवळा नै धौरप देवौ, ह्रियै विचारौ राम॥

८

गांठां रा गठजोड़

नूंवां सूं टखरी री लाज खोरता की सिवांत व्हैग लागी। लाज री बळत अर मिठास डील रै रूं-रूं नैं अेकर सावचेत करयो। अेक घटो व्हैगो म्हनैं उडीकतां। वानैं इण वात रो कीं सोच फिकर नी, पछै अवै सोच-फिकर री ऊमर भी नी। "देख, वो म्हारो दायजवाळ हो, की नीं कर'ला तो लोग भूंडी बात वणावैला।" वां रा सबद म्हारै माथै नैं भरणा रास्यो हो। ठहै पोर री बादळवाई मन नै-की हळको कर दियो। आमली री ठंडी छीया अर मीझर री खसबोय धीमे-धीमे हेटै उतर नै आपरै कांनी झाला सी मारै ही। मैं निजरां री तोर बांध्यां अलेखूं चित्रामां-रा पळका मे कीं ढूंढणो चावै हो। किसन जी ठाकर ईं चूंतरै री कूंट माथै बैठ'र सिञ्झ्या माळा फेरता नै कोयला री लीका सूं आपरी माळा रो हिसाब लगाता। "गोपीनाथ धणी, पलाद की सहाय करज्यो, भवरा की सहाय करज्यो," कैयनैं किसन जी दादोसा उठ जायता। 'अरै ओ उघाड़ै माथै कुण जावै है?' हजारी जी टरडका करतां ई घूंतरा माथै आगनैं बैठता अर सीख देवण लागता— 'म्हे तो म्हारी धणी निभाई, मौजां लूटी अर राज करयो। थां जैडा नाजोगा जद पैदा व्हिया, म्हारी धरती गई। बोलो, थांसूं काईं उमीद करां? थे तो फैसन में डूबग्या। थानै पढाई-लिखाई रो घणो गुमान है। म्हे अंगरेज री नौकरी करी अर गोरां रा ठाट-बाट देख्या।' आ कैंवता वां रै चेहरै माथै गुमान री डोढी मुळक की ताळ ताईं फिर रैह जावती।

आज म्हारै डील नैं मावरां की घणो उपाड़ नाख्यो, इण वास्तै गाभ नीं वेसी चालै ही। मैं हाथ नैं मोड़'र माथा नीचै होंवतै सळसळाट नैं कुचरण लागो। वाता अेकर पाछी यादास्त सूं फिसळगी। पण उणां सूं म्हारो आज ताईं छूटयो नीं। पढाई करता-थका चूंतरा री छूय या अेक जुग रो मन माथै किरोळी-फागा अेक साथ।

री वातां। बातां रो जरूर अेक मोल व्है। वैं इतिहास वर्णें अर अेक सांच नैं जमी थामी राखैं। बाता रैं मांय भांकणो अर बां री समझ नैं जुग-सारू मोडणो आज री जरूरत व्है सकै। बाता रो रस बीत्योड़ै जमानैं री गाथा नीं व्है पण बो आज री ठौड़ वीं आपरैं रस नै खरळाटैं रैं साथैं नाखै। ई वास्तै बाता जुग-जुग रैं माय आपरा नुवां रूप ओळखती कांना रैं माय गूजै। बाता रैं ताळो जडणो अर बाता मूं छेड़खानी नी करणो जुग धरम अर आज रैं मन री गत नै साव ढग सूं न परखणो है। अठैं सवाल लारलै इतिहास अर संस्कारा रो है। मन रैं सघर्स री स्थिति मे आं दोन्यूं चीजां रो आपरो महताऊ रूप है। काई आपा आ सू अळगा होय नैं वाता कर सको हां या आं री गाठ रैं आगैं दूजी गाठ लगा सका हां? आपा आज ताईं जको करता आया, बो इज कराला। आपणैं घर री अेक रीत रैंयी है। ई रीत नें तोडणी नी, निभाणी है।' वा रा अैं सबद मैं सुणतो रैंवूं। बैं हरेक काम मे ई बात सू छेड़ै नी हटैं। विचार करता थका हरेक बात रो मोल-तोल इण कसौटी माथैं व्हैं।

म्हे आंगळी सू होठ नै कुचरण लाग्यो। पढाई री टेम मैं सात्रें, कामू अर जेक केरू-आक नैं घणो पढचो। वां री वाता आज म्हारैं सामीं ही। म्हारैं ध्यान में केरू-आक रा विचार आया— "हार नै सदा वास्तै अंगेज लीज्यो, जिण मूं लड़ाई लडणैं री हिम्मत कदैं तूट न सकै।" फेरू कामूं तो गाठ रैं आगैं गाठ नी लगावणां चावतो। मिनख री समरथ बडी है, उण री ताकत लाम्बी-चोडी है। उणं रा भाग नैं पैल्यां सूं मान'र चालणा सामरथ नैं नीचो दिखाणो है। भाग सदा पलटतो रैंयो अर ईं रैं कारण इतिहास बदळ्या, गाठा खुली नैं नुंवै ढग मूं बंधी। इतिहास अर सस्कार मिनख सारू है पण मिनख सगळा सूं बडो है। इतिहास अर सस्कार सूं विसवास उठ सकै है पण मिनख सूं नी। मैं लारला जुग रा मिनख रो भाग नीं मरावूं। मैं उण मिनख नैं अतो वड़ो नीं मानू, जतो आज म्हारैं सामै ऊभा मिनख नैं मानूं। ठौड-ठौड उंण मिनख रा रोप्योडा खाग उण मिनख रैं भाग री जस-गाथा व्है सकै। मै हरेक टेम बा वातां नैं याद कर नै आगैं नी बढूं। नाप्योडा कदमा पर चालणो सामरथ नीं व्है पण नापणैं री जोखिम उठाणो, ललकार रो पडूतर देवणो है। आज इतिहास नैं खाली जवान माथैं याद नीं राखणो पण उण नैं बगत परवाण परखणों है। लारलैं इतिहास रैं मुकाबलै आज रैं मिनख री औकात कम नी, आज उण रे सांमै खुद रैं इतिहास री जत्ती समस्या है, अत्ती जुग रैं इतिहास री समस्या नी। आज रै मिनख नैं खुद रो भरोसो करणो है। "थां बातां वणाई, थूक उछाळचो अर पीढचां रैं पग लगाया। बडे-बुजरगां रा मराद मनावता थका, उगा री काण्या सुणी? मनैं तो आज री पढाई मे की दम लाग्यो नी।"

बा रो ओ कैवणो, वां रो ग्रेक विचार व्है सकै। बै ई सूं सतोख कर लेवै पण ग्राधां व्हैनै बांनै पूजणो कठै ताईं इतिहास रो ग्रादर करणो है। बै ग्रापरो कैवणो बदळ नीं सकै, स्यात उण सूं बदळचो नीं जा सकै। उण नै बदळतां बै खुद नै घणा हीण समझै, क्यूं कै उणा कन्नै पुरखां रो इतिहास है, खुद रो इतिहास नीं। ईं वास्तै बै ईं इतिहास नै नीं मिटावणो चावै, नी बधावणो।

ग्रामली हेटै बैठचा-बैठचां मैं ऊब सो गयो। कमर मे दरद सो व्हैण लाग्यो। कांई चीज रो? इतिहास नैं याद करण रो या ग्रेकलो बैठचो रैवण रो? म्हारै की समझ नी ग्रावै हो। हां, ग्रेकलो बैठचां मन खाटो सो व्है रियो हो। ग्रांथूणै कानी बादळ छड़चा-बिछड़चा दीसण लाग्या। वां रै बीचै सूं हळको लीलो ग्राकास कीं सोवणू लागण लाग्यो ग्रर ग्राकास सूं ग्रड्योडा ग्रै डूंगर- हरयां किचन। ग्रब तो सगळा रूंख काट नाख्या। कदै ग्रां डूंगरा मे जावणो कम खतरनाक नी हो। नार-बघेरा बोलता। बोरड़चां रा बडा-बडा घुपडा हा। मोटी-मोटी थोर ग्रर खैरचां। ग्रां रूखां रै हेटै जिनावर विसराम करता। कदै कोई बकरी रात नैं डूंगर में रैव जावती तो उणनैं ढूंढणो घणो मुस्किल हो। ग्राज डूंगर भदर व्हियोड़ा जैड़ा लागै। बस, चौमासै में कीं हरियाळी फूटै ग्रर ग्रै थोडा राजी व्है। उण टेम ग्रानै देखण रो मन भी करै। पण सोचूं, मैं थोडी देर ग्रां डूंगरा री वात क्यू सोची? ग्रारै इतिहास कांनी क्यूं झांक्यो? कांई ग्रांरै-इतिहास नैं याद राखणो जरूरी है, फेर ग्रो इतिहास ग्रा डूंगरां नैं कांई देवै? ग्राज रो डूंगर पैल्या रै डूंगर सूं घणो खासा दूर है। ई डूंगर रो भाग लारला डूंगर रो भाग नी व्है सकै। पण फगत ईं टेम जे डूंगर नैं निरखूं तो ग्रो मनै सोवणो दूज लागै। "गैला, ग्रापरी समझ नै की ठीक तो कर रै। ठाण रै मांय बंध्योडा सासरां री रूखाळ कर। ग्रा हिरणा रै खोजां मत भाग। रीत-नीत नै समझ ग्रर धरम-पुण्य रा गैला ढूंढ।'ग्रेक ऊंडी-सी बात ग्राय नैं डूंगरा माय ऊभी व्है जावै। कांई इतिहास मिनख नैं टेमो टेम इण तरियां धमकावतो रैवै? कांई इतिहास रो कैवणो कोई सनातन साच व्है। म्हनै लखायो कै म्हारै मंगरां माथै की बोझ ग्रा पड़चो। कोई म्हारा खुंग्रा पकड़नैं मनै झिझोड़ रियो है— "गैला, ग्रापरी समझ नै की ठीक तो कर रै।'म्हारै साम्है ग्रेक सवाल हो कै कांई मैं इतिहास रै साम्है हमेस ग्रोळमा रो भागीदार बणूंला? कांई इतिहास मनै बांध राख्यो है? उण ठंडै पोर में म्हारै सरीर मे पसीना रो चिड़पडाट सो मैसूस व्हियो। मनै लखायो कै कोई मनै साव कमजोर मान राख्यो है। पण ईं साच नै मानणो म्हारै वास्तै मुस्किल है। इतिहास मिनख रै लारै भी हुवै तो ग्रागै भी। -मिनख-वो जको ग्रागै ग्रावण रै इतिहास सारू हिम्मत बांधै। लारलै इतिहास रै पळका सूं पोमीजणो मौजूदा समै रै साथ न्याव नी

करणो है । हरेक मिनख अर महापुरुष वास्तै मौजूदा वगत इज परीक्षा व्है, ई वास्तै आपरै सांमै आवण आळै बगत री जत्तो ज्ञान जिण मिनख नै व्हैलो, वो सांच रै बत्तो इज नेडो व्हैलो । बगत सूं कटणो इतिहास सूं कटणो है, आपरी संस्कृति सूं कटणो है अर आपरै खुदरै ठांयचै सूं कटणो है । मनै उणां री बात साव चोखली अर बोदी लागै ।

मैं अेकर आमली रै डाळा कानी निरखण लाग्यो । जे खाली इतिहास री बात इज करणी व्है तो ईं री भी इतिहास है । बैंठ्या-बैंठ्यां म्हारा गोडा जुड़ग्या । मैं बांनै कद तांईं उडीकूं । वै उडीकै नै वाजिव मान'र चाल सकै है, पण म्हारी पीढी उडीक रै भरम में बैंठी नी रेवै ।

हवा चालणै सूं आमली रा मोर हेटै झड़वा लाग्या । सूरज अबै डूंगरा ओलै आवण रो मसूबो कर रियो है । "देख बेटा, पुराणी सौ दिन अर नुंवी नौ दिन । बरो टूट नाख्यो । इण रै गांठ देवणो है - बरो गांठ गठीलो है पण गांठां मजबूत है ।" बै आवता म्हारै ठालैपणै नै छेड़ता कैयो । बारो कैवणो म्हारी विचार री दुनियां में तहलको मचा देतो । मनैं खुद मालूम है कै बै लीक सूं नी हट सकै, बै परम्परावां री साकळां में जकड़ीजैला । म्हारै सांमै वर्तमान जुग प्रधान है, ईं री समस्यावां मनैं बांध राख्यो है । मनै नौ दिन रो नुवोपणो चोखो लागै । नौ दिन पछै फेरूं नौ दिन रो नुवोपणो । ओ नुवापणो परम्परा री मायली सांच रो जुग-परवाण बदळतो रूप है । इण वास्तै परम्परा अर इतिहास री तुलना मे ओ नुवोपणो कठै अलग अर कठै साथै है, इण रो विचार पुराणी पीढी चाये करै या नीं, पण म्हारी पीढी सारू जरूरी है । पुराणो सौ दिन कैवण आळा कन्नै पुराणो इज है— बां री पीढी सूं भी लारली अर लारली पीढी रो । अेड़ा लोग पौरादार व्है सकै है, पण वै इतिहास अर सस्क्रति रा निर्माता नीं व्है । म्हारो चिंतन फगत आज रै मिनख रो है, उण री मौजूदा लड़ाई सूं है, उण रै आज रै बणतै-बिगड़तै इतिहास सूं है अर उण रै हकां सूं है । आ प्रेरणां इतिहास दैवै या सस्क्रति—वा मनै चोखी लागै । मैं अै बातां सोच रियो हो अर बै म्हारै कन्नै बैंठ्या गाठां रा गठजोड़ा में उलझ रिया हा ।

—: • :—

साफो

"शंकर भोळा, जै हो थारी, अर रामेसर महाराज नाभी सूं फूंक रहारी । मरदानो खंखारो करतां चिलम री साफी उतार नें सागै बैठ्यै लिछमण नें भलाई । लिछमण आपरी दूजी साफी भेयर चिलम नें पैराई अर फूंक रहारतां नुंवै जुग नें एक 'नॉन-वेजीटेरीयन' गाळ काढी । चिलमां रा दोर चालता रैया अर धरम, दरसण, समाज तथा राज री नुंवी-नुंवी व्याख्या उभरती रैयी ।

बजरंग गुरु 'माल' री पुड़िया मसळता, एक सिगरेट तोडर जरदो उण माय रळावतां कैयो—"जूनी रंगबाज्यां अब कठै रैई भाई जी ! पुराणा धाकड लोग जे आज होवता तो उणां रो जीवणो ओखो होय जावतो ।"

चिलमां रै धूंवै री गोट बंधती गई । मैफल रंगीन होवती गई । गुरु लोग भकोरा लेवता-लेवता एकर तो साफी बदळणी भूलग्या । पछै चेतो होयो, जणा रामेसर जी कैयो "भाया ! काई भाभडा-भूत हो गया ? साफी तो संभाळो ! नांक-सीक गरमा-गरमी होई । ठेठर गाळ-भेळ मांय खोय गया ।

म्हारी निजर साफी-माथै ठैर गयी । चिलम अर साफी दोनूं [illegible], एक झाड टूटं । चिलम जे मस्ती है तो साफी है उणरी [illegible] । [illegible] री बखस्योड़ी फूटरी-फर्री सुन्दरता है तो साफी है [illegible] । [illegible] री कथना री भासा है, साफी । साफी विना चिलम [illegible] । [illegible] चिलम जे एकर ई आप रहारली है तो आप नें [illegible] है । [illegible] लैराइजगी है । आ मस्ती गोरखी मस्ती है, [illegible] रैयी है ।

मैं म्हारी वात कैवूं ना । [illegible] खाण है । इण तरग रो ढंग [illegible] । [illegible] आव म्हारी प्यारी साफी । तूं [illegible] अर अगन नें तूं थारी देही [illegible] सूं पीळी—जरद होयगी । [illegible]

है । जळ रो आचमन करनै तू ओजूं बळत-भखण नै त्यार होय गई ! तूं न्यारी-न्यारी होवतां भी भीतर सूं एक है । न्यारी-न्यारी आंगळ्यां सूं पंपोळघोडी,-रगदोळ्योडी मिनख री रगबाजी उगाय रैयी है । आप ताती होयर चिलम नै सीतळ करती मौजां लुटाय रैयी है । थारै त्याग, बळिदाण अर नियम री कीमत कुण कूंतैला ? चिलम-चट्टू बोळा, फूंक म्हार थानै परै बगाणियां घणा, पण थानै लाड—दुलार देवणियो, थारो घाई-मीत, थारै हिवडै-रो कदरदान कठै है ? क्यूं, बोलो तो सरी ?

चिलम माय पान घालो अथवा 'माल', साफी भेयनै लगाणी ई पड़ैला । रामेसर महाराज री एक साफी दस बरसां सूं चालै । उण रै लंगोटियां रै अलावा दूजा लोग दूसरी साफी राखै । साफी बदळती रैवै, 'माल' नीं ।

पैली अगरखी, चोला, धोती अर बंड्या री एक साफी ही । साफी रो तरिया बळिदाणी, मोळां रा पुजारी अर यार-खास लोग जिदगानी रै गैरै ,जोहडै माय इबर न्हावा-धोई करता । गोठ, घुघर्‌या, बैठका अर बगीचा रै दरसण सूं उपन्योडी साफी ··· सीधी-सरल बात री धणी । धूंवा उपडता ··· अर लोग बखत-सिर सावचेत होयनै आपरै ढग सूं मिनखपणै रै मोल माय मोळा री टायल जडता । अर साफी ही ··· साफ ··· निर्विकार ।

आंगळयां रै तळै साफ्या बदळै । आगळयां री हरकता अर मुद्रावा बदळै । स्वाभिमानी रै गरब कानीं कोई आंगळी उठायर नी देख सकै । रामेसरजी महाराज गैलडै बरस ईज तीन सासियां नै आपरै साथियां री सौ लाठिया मूं एकला निकाळ्या । गांव री भू-बेटी कानी आगळी उठायर कोई देख नीं सकै । उणां री साफी री तरिया उणां री साख भी सैंजोर ।

आंगळयां गैल साफी बदळती रैवै । लाबा-लाबा केस अर बेलबॉटमी-वानै हाळो एक मोटयारियो पोपलीन री एक सोवणी सी साफी बणायी । वो एक फूंक म्हारता ई चकरी-बम होय गयो । 'हेल विद गाड' ··· मैं थानै ··· समझ अर बैंकतो-बैंकतो आप री सगळी फिलासफी री भण्डी उडाय नांखी । उण रो एक दूजो भायलो घणै सुळझ्योडै ढंग सूं नुवी पीढी अर नुवै जुग रो सार काढ लियो । मुळकतो रैयो ।

रामेसर महाराज अर बजरंग गुरु भी उण सूं प्रभावित होया । बखत तो है ····पण इण रै गैरै मोळां री पकड भी एक माईनो राखै । वो साफी नैं होळै सीक उतार लीनी, चिलम उग आई । रामेसर जी सोच्यो-सांचला माय चितम 'आई ।'

काकरी अर राख म्हारण-हाळी चीज कोनीं । साफी लगाणं सूं चिलम रो सार म्हारीजै, रफी (राख) चिलम माय रैय जावै । दमबाज, असली दमबाज जगत

री रीत-नेम अर व्यवहारां रो सार काढतो-काढतो 'सूप सुभाय' बण जावै । नुवै-पुराणैं, वाद-सिद्धान्त, नकारणै-सीकारणै री बाता आप-आपरी जगा है पण उणां सू कोरी बकवास अथवा वाणी-विलास खातर सबदां रै फरमा माय फिट होवणो रंगबाजी कोनी, टगबाजी है। रंगां मांय रंगीजर भी 'आपै' नै इकरगो राखणो। सवद हर बखत संदर्भां नै नीं उजागरै अर पोचा सबदां रे मकड़ी रै जाळै माय फस्योड़ी चितणा निरपेख, बेलाग अर मस्तान किणतरियां होय सकै ? साफी सैंई चितणां—साख एक ढंग है ···· एक प्रक्रिया है अर आ एक टैकनीक है, निरपेख समझ री चिलम रै हिवड़ै सूं स्हारीज्योड़ी अनुभूतियां रै हड़बड़ावतै प्रवाह सारू ···· विकास रो नियत्रण । संतुलण है आ साफी, जिण सू हीणो सर्जक जावक चमगूंगो है, खाली भाव भरयो विद्रूप ढोल है, डोल नी ।

साफी एक कानी सूफी-सतां री फकीरी-मस्ती है तो दूजी कांनी बखत रा नेगचार करती स्याणी चातर नार है । साफयां बदळती जावै पण, चिलम एक है । उगाणै री बात रो नातो है—चैतै री साफी सूं 'सेन्स' रो, आतरो है । ···· आंख्यां मांय आवै ···· अर 'सेन्स' कोई सेंट कोनी कै सगळा फोया टाग लेवै अर सुगंध रा लहरा लिरीजै । साफी सूं चिलम री मायली मौज स्हारीजै । इण खातर साफी चिलम री आत्मा री प्रगटावण है । साफी सरतर है, सीध है—बखत री पूरम पूरी रंगबाजी री बाराखड़ी रो आद-बरण है। साफी मोल री जांच ······भोग्योडो सांच ।

रामेसरजी चिलम उगाय रैया है । कांई थानै भी चिलमरी गंध तो कोनी आयगी ? ल्यो, थांनै भी न्यूतो है । साफी रो इन्तजाम भी होय जावैला । एक फूंक तो स्हार ई ल्यो । कच्ची-पक्की सू मतलब कांई ? जद-लगां चिलम आवै, चितण चालैला । छेवट जिंदगाणी चिलम री चांदी री तरियां नाखी जावैला । माफी बगस्या, मैं साफी भेय रैयो हूं ···· ।

□

सुख-दुख

"पगेलागूं गुरुजी ।"

"सुखी रैवो ; खुस रैवो ।"

'खुस' सबद खुस करै, सुख देवै पण 'सुख' कई ? किण तरै मिळै ? 'खावो-पीवो, मौज करो' रो सूत्र जाणतां-थका सुखी दलकटाकट मूं कई लाभ ?

सुख रो अेक भाई है 'आणंद ।' आणद पावण री चाह ई तावडतोड दोड़ अर होड रो कारण है । मूळ वीनती भगवान सूं आ ई हुवै—

"म्हारै मन-मन्दिर मे आणद कर गिरधारी ।
हूं सुख री सेजा सोवूं क्रिसण मुरारी ।"

पण गिरधारी सूं, नटवर सूं, किसी सुख पावण री वीनती करीजै ? सुख-दुख रो आसरो कुण ? मन तो सदा ई सुख चावै । कह्यो ई गयो है—

"मन कारण है बन्ध रो मुगत करावै मन्न ।"

अर मन रमै किण कारण ? .... सुख रै कारण । सुखां रै लारै भागै वेहताशा । अर आखर में मन रै घोडा नै हार मानणी पडै ।

सुख मिळै खावण-पीवण सूं ? चोखा-चोखा पदारथ खाया सुख रो अनुभव तो हुवै पण कित्तीक देर ? अर सीव सूं आगै अेक कवो लेवतै ई वो सुख काफूर । फेर अजीरण हुयर वो ई सुख रो साधन घोर दुखदायक बणै । तो सच्चो सुख कई ?

धन सुख रो साधन हुवै ? लाव-लाव रा लावा लूटणिया अर लाखां रा लडाऊ पण रात-दिन चिन्तावां री चौकडी मे चरमर करता चीखै । अेकै आगै मीड्या वधावण री चायना किण नै सुख सूं रैवण दै ? सून्यां रै चक्कर मे सूनो रडीजै। चांदी रै टुकड़ां खातर जागां-जागां रो पाणी पीवण-आळा सुख री नींद गोय सकै ? हर

समै कईं न कईं धुगधुगी सूं सीभियोडै काळजै-आळा नैः सुख कठै ?

धन जे भेळो हुय जावै तो ई सुख कठै ? उण री रक्षा रो भार माथै नै बोझ सूं भारी राखै ।

वडो बणणैं मे ई सुख कठै ? 'फारमलिटी' री बेड़िया सूं बधियोड़ी सींव आळा सुख री नींद कीकर सोवै ?

मनोरंजन रा साधन सुख देवै ? हां-पण कित्ती देर ? तास खेलण-आळ नै तास रमण में अर जुआरी नै जूवै में रस मिलै, सुख मिलै । पण हार री वेळा ...

"जूवै सो नही खेल, अगरचे हार ना हो जी ।
चोरी सो नहीं रुजगार, अगरचे मार ना हो जी ।।"

सुख कई है ?—इण रो उथळो देवण खातर लोग सुखां री अेक सूची सुणावै —

"पैलो सुख नीरोगी काया,
दूजो सुख धन अर माया,
तीजो सुख नारी हितकारी,
चौथो सुख सुत अग्याकारी,
पंचम सुख राज में वासो,
छठो सुख भल आमो-थामो ।......"

पण अै टोळचां सुख री परिभासा कोनी कहीज सकै ।

अेक वात है इण तरां—"अेक राजा कठै ई जाय रैयो हो । वो दरवाजै रै वारै अेक कुंभार नै सुख री नींद सोवतै देखीयो । गधो पग सूं बंधियोड़ो अर फाटो-फूटो साफो सिराणै । इण पर राजा ओ ओखाणो कैह्यो—

"राजा सुखी न परजा सुखी, सुखी नहीं संसार ।
सांची वात आज म्है जाणी सुख पावै कुम्भार ।।"

ओ ओखाणो सुणता ई राजकुमारी कह्यो—

"राजा सुखी न परजा सुखी, सुखी नहीं कुम्भार ।
सुखी कहावै वो नर जग में, जिण घर नार सुनार ।।"

खैर भला । तो संसार नै असार जाण'र सन्यासी वण'र सुख पाईज सकै ? हा, जे सच्चे अरथां में 'सन्यासी' वणै तो । नही तो चेला वणावण री धुन, मठाधीस बणण री चाह अर सिद्धि प्राप्त कर चमत्कारी हुयर पूजावण री वान्छा किण नै टिकण दै ?

भर 'भौतिक सुख' सुख है ? भै तो खिणभंगुर है । भपूरण रै द्वारा बणायोड़ा है, इण खातर अपूरण है । जिण में विकास या सुधार री गुंजायस है, वै पूरण कीकर ? भर पूरण नहीं तो स्थायी सुख कीकर ?

खिण खिण मे बदळण आळी काया भर अस्थिर धन किण नैं थिर-सुख लखावै ?

हाँ, पुराणा मे सुखा रै सरूप रो सखरो रूप चित्रित कियो गयो है । भौतिक सुख रा सगळा साधन भेक ई जागां भेळा कर फेर सच्चै सुख रो रूप बतायो गयो है । पुराणकार री इच्छा दो चित्राम मांडर (भौतिक भर भाध्यात्मिक सुख रो फरक बताय'र) सुख रो सार बतावणो है ।

मानव सुखी हुवण खातर कई-कई चावै ? ...... नीरोग सरीर रूपवन्त, कदेई बूढो नहीं हुवणो । नहीं मरणो । धन घणो । बेटो भाग्याकारी । रूपवंत नार—सुनार । परवार मे भक-भक कम । सवारी । मनोरंजन रा साधन । बाग-बगीचां में बहलै मन । अधिकार—ऊँचो पद । मन इंच्छा-फळ—मन में सोचतां ई मन चाही चीज हाजर ।

तो हाजर है 'भेक पात्र' जिण नै भै सगळा साधन प्राप्त है—

'वो नीरोग सरीर आळो, रूपाळो । कदेई बूढो नहीं हुवै—(निर्जर है) । कदेई मरै नहीं (अमर है) । धन भपार—खजानो कुबेर रो भर उण रो मालिक । बेटो भाग्याकारी । परवार छोटो—भेक बेटो भर घर में सुलखणी नार । सवारी खातर हाथी सफेद (ऐरावत), घोड़ो (उच्चैश्रवा) । विमान पुष्पक । मनोरंजन रा मोकळा साधन । बाग-बगीचा—नंदनवन, जठै कल्पतरु । पद ऊँचै सूं ऊँचो-देवता । भर देवतावां रो ई राजा । राज्य सरग रो । मन इंच्छा फळ पावण खातर चिन्तामणि—मन में सोचतां ई चीज या फळ हाजर । भर नांव उण रो 'पुरन्दर ।'

भबै लेखो-जोखो लेवा तो ,किण ई चीज री कमी नहीं । पण इन्द्र तो रात-दिन दुखी रैवै । जे कुण ई थोड़ी-सीक तपस्या करै तो उण समै ई भासण डोलै भर विष्णु नै पुकार हुवै—'त्राहिमाम-त्राहिमाम' री रट लागै । ...... कदेई बलि रै घरै (वामन रूप धराय'र) छळ करावै तो कदेई शिवजी री तपस्या भंग करावै ...... ।

भर दूजै कानी भेक चित्राम पुराणकार फेरू मांड्यो है । किण तरै रो ? ...भेक भवधूत । ना चाह, ना राग । ना मेळ, ना वैर । वन में तपै । फळ न्याय सेवै

तो वाह । पांणी पीवै तो ठीक, नहीं पीवै तो ठीक । आतम चिन्तन करै । सुख सूं विचरै । *अर उण रै आगै जाय'र 'पुरन्दर' सिर झुकावै ।*

तो आ त्रिगत्रिसणा । आ तेली री घाणी । ओ बळदां रो फेर । हाथी रै माथै अंकुस अर घोड़ै रै मुंहड़ै में लगाम । सिंघ मरै आळस में । चकवो-चकवी रात नै दुखी । मोर बादळ खातर तरसै अर पपैये री पी-पी करतां काया सूखै । मछली नै जाळ अर हिरणां रो सिकार । देखो तो सही—

"कोई अंग सूं भंग खुड़ावै,
तन सीतळ कोई अगन-मुखी ।
जिण नै देख्यो दुखी जगत में,
कोई न दीसै सरब-सुखी ।।

तो आ बात गांठ बांधणी चाईजै कै अपूरण रै बणायोड़ी जिन्सां रै उपभोग सूं, उण रै निरमित साधनां रै प्रयोग सूं, साचो (स्थायी) सुख नीं मिळ सकै । जिण में विकास री गुंजायस, फेर-बदळाव री प्रक्रिया—उण में चिर आणन्द, साचो सुख किण तरै हुवै ?

साचो सुख मिळै कर्तव्य-पाळण में, परोपकार में अर आतम-चिन्तण में, कमळ रै पत्तै ज्यूं हुवण में । करम में ई, निस्काम करम में ।

□

जीभड़लो

संसार में भगवान जितरी जीवा-जूरा सिरजी, उणां सगळां रै मुंहडै मे एक-एक जीभ पण दी । कीडी सूं लगाय अर कुंजर ताई सगळा छोटा-मोटा जीवधारी इणी जीभ रै परताप सूं खारा-मीठा, चरका-चरपरा इत्यादि रसां रो स्वाद लेवै । पण, जीभ रो जिको विशेष गुण—बोल-वतळावण रो है—मिनख जात नैं मिळयो, बीजो किणी जात रै जीवधारी नैं नीं मिळयो । मिनख, इण हीज गुण रै परताप मिनख बज्यो अर सगळै जीव-धारयां रै सिरमौड रै रूप में पूजीज्यो । पण मिनख-जात नैं मिल्यो ओ वरदान केई वार सराप सूं भी खोटो रूप धारण कर लेवै अर विनाश रो कारण बण जावै ।

महाभारत रो जुद्ध इण अभिशाप रो सब सूं सबळो उदाहरण है । दानव मयरी बणायोडी माया नगरी नैं देखण सारू जद दुर्योधन उण में बडियो तो माया रै कारण उण नैं जळ री जायगा थळ अर थळ री जायगा जळ दीख्यो । इण में दुर्योधन रो रत्ती भरियो भी दोष नीं हो । ओ तो दानव मय री विद्या रो कमाल हो । पण द्रोपदी इण हाथ आयोडै दाव नैं क्यूं चूकावती ? खोटी मुळकाण रै साथै बोली—आंधां रै तो आंधा हीज जलमसी ! बात केई तो मसकरी में ही पण दुर्योधन रै आर री पार निकळगी । वो उण बखत तो जैर री घूंट पीयर चुप रैयग्यो पण उण हीज वखत जिकी गांठ दुर्योधन मन में बांधी, उण रै ही परताप पाडुवां रै संताप री शुरुआत हुई अर समूचै देस नैं जुद्ध री लपटां सूं झूझणो पडियो । उण वखत जिकी कमजोरी भारत में आई, भारत आजताई उण रो कुफळ भुगतै है । इण खातर ही भलै मिनखां कैयो है कै—रोग री जड खासी अर राड री जड हासी ।

जीभ सूं ज्यूं छवां रसां रो न्यारो-न्यारो जायको लिरीजै, त्यूं ही बोल-वतळावण में भी मीठो, खारो, तीखो जायको रैवै । साच बोलणो सगळै ही शास्त्रां

में धरम मानीजै पण नीतिकारां नै श्रा बात मंजूर हुवतां-थकां भी मंजूर कोनी । उणां रो कैवणो है—

"सत्य ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।"

अर्थात्—साच बोलणो जोईजै, पण बोलणो जोईजै आछो लागण-आळो । जे सुणण-आळै नै आछो नहीं लागै तो पछै उण साच बोलणै सूं मून भालणी आछी है ।

एक बार एक छोकरै आपरी मा- नै काजळ-टीकी करतां दीठी । देखर बोल्यो—"मां ! म्हारै बापनै मरयां तो जुग बीतग्यो, तू काजळ-टीकी किण नै बतावण सारू करै है ?" छोरै री वात ही तो बावन तोळा पावरत्ती साच पण ही खारी । इण खातर उण री मां छोरै रै माथै में सुणतां ही ठोलो ठरकायो । कैवत है—"जीभड़ली मेरी आळ-पताळ ठोलो खावै मेरो लाडलो कपाळ ।"

साच नै बासदै में भी आच को आवै नी पण लोक व्यवहार में कोरो साच को चालै नी । ज्यूं, तवै अर तरवार रै लोह-लोह में फरक हुवै, त्यूं हीज बोल-बोल में भी आंतरो हुवै । कागलो बापडो बोल'र किण रो धन खोसै अर कोयल किणरै घरै बोरयां न्हखावै पण बोल-बोलरो आंतरो है । कागलै नै बोलतो सुणर तो लोग भाठा-कांकरा बगावै अर कोयल नै बोलतां सुणर आपरा कान धोबा हुवै ज्यूं मांड दे ।

बात है भी ठीक । हाथ रो भाठो, हाथ माय सू छूटयां पछै अर जीभ रो बोल जीभ सूं तिसळयां पछै हाथै-बाथै को रैवैनी । जद ही तो कैयो है कै—

वाणी ऐसी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन कूं सीतळ करै, आप भी सीतळ होय ॥

जे बोलणियो आपरो अहं साथै राखर बोलसी तो उण रा बोल जरूर ही करड़ो हुसी अर करड़ै बोल सूं दूजै रै हियै में सीळास री जायगां आग ही पैदा हुसी । आग रो धरम सीळास सूं ठीक उलटो, बाळण रो है । भलै आदम्यांरी मान्यता है कै—दव रा दाध्या पांगरै (अर्थात् आग सूं बळियोड़ा तो पाछा पांगर सकै है) पण वचन रूपी आग रा बाळयोडा पांगरणा तो अळगा रैया, अंकुर तक नहीं काढ सकै । जीभ री लाग्योड़ी लाय "धुखै न धूंवो ऊपडै, जगै पिंजर रै मांय ।"

जाणकार लोगां रो कैवणो है कै—बोली री चोट गोळी री चोट सूं भी घणी गैरी हुवै । राव मालदेवजी री राणी ऊमादे, जिकी रूठी-राणी रै नाव सूं भी ओळखीजै, रै अर रावजी रै आपोपरी में लोगां विचाळै पडर समझोतो करवाय दियो । राणी महला

में जावण नैं तैयार हुई। सम चै ही इणरी खबर कवि आसाणंद नैं मिळगी। राणी रो सेजवाळो जोधपुर सूं कोई पदहेक कोस अळगो कोसाणा नांव रै गांव कनै पहूंच्यो। कविराजा इण नैं देखर जोर सूं दूहो भ्रो पढ्यो—

> मान रखै तो पीव तज, पीव रखै तज मान।
> दोय-दोय गयद न बधही, एकण खभै ठांण ।।

बात राणी रै कानां में पड़ी अर वा उण हीज जायगा आपरा रथ रोकाय दिया, जोधपुर में जावण सूं साफ मुकरगी। ताबाद कवि खुद भी राणी नैं घणी ही समझाई पण ऊमादे रै नो बात हियै मे जमगी जिकी जम हीज गयी अर वा आखी उमर रावजी सूं रूठ्योडी ही रैई।

महाराणां प्रताप अर मानसिंह रै आपोपरी मे बात हीज बधर विस्तार करियो। जीमणवार री बखत मानसिंह राणांजी नैं बुलाया, पण राणांजी माथो दूखण रो मिस कर नटग्या। मानसिंह रै मुंहडै सूं निकळग्यो कै माथै री दवा तो हूं जाणूं हूं। "बोलरै ऊपर राणांजी रो बोल भी निकळग्यो"—तो फूफाजी नैं भी साथै ले पधारज्या।" इण बोल विष बुझ्यै तीर रो काम करयो। ताबाद जिको रांघड विगड़्यो, सगळी दुनिया जाणै है।

राव जोधाजी री बात ऊपर हीज बीकैजी नूंवो राज बाध्यो। दरबार में कुंवर बीकोजी अर उणारा काका कांधलजी कनै-कनै बैठा कोई गुरबत करै हा। इणां नैं देखर जोधैजी री जीभ सूं लपळको बैयो—"आज काको-भतीजो बडा ही घुळ-घुळर बातां करो हो, कोई नूंवो राज बांधणै रो मनसूबो है कांई ?"

कांधलजी बोल्या—"रजपूत रै बेटै रै नूंवो राज बांधणो कांई बडी बात है ?" अर साचाणी हो उणां रै खातर आ कोई बडी बात नी हुई। वर्तमान बीकानेर इण रो जीवतो-जागतो उदाहरण है।

संतां री महिमा न्यारी है। बांरी जीभ में इमरत बसै। वै वचन सिद्ध हुवै। संत-वचन री महिमा रा अनेक अनूठा प्रवाद राजस्थान में लोक-प्रचलित है। बेळा रा बायोडा ज्यूं मोती नीपजै, ज्यूं हीज बेळा रा निकळयोड़ा वांरा वचन, फळै।

बाणियो बोहितो आपरी बाळद मिश्री सूं भरर लायो। पोकरण रै गोरवै बो रातवासो लियो। बाबो रामदेवजी घूमता-फिरता बठीनै आय निकळया। उणां पूछ्यो— "सेठां! बाळद में कांई भर लाया ?" बाणियो दाण रै डर सूं कूड़ बोलग्यो—"बापजी! लूंण लायो हूं।" लूंण ऊपर जकात-दाण नीं लागतो। बाबो बोल्या—"चोखो, भाई! लूण है तो लूंण ही सही। तूं किसो कूड़ बोलै है।"

बावो तो इतरी कयर पाछा घिरग्या । वाणियैं आगलै गांव में जायर सौदो करियो । माल-खुड़ावती वेळा केई गूंण माय सूं डळी उठायर मुंहडैं में घाली तो थूं ··· थूं ··· करतो बोल्यो—"सेठां ! ईंया करतां नैं कितराक दिन हुया ? भाव करियो मिश्री रो अर तोलो लूंण ।'

लूंण रो नाव सुणता ही सेठ घोळो-धप्प हुयग्यो । आप कमाया कामड़ा, किरणनैं दीसैं दोस । उण खायैं-खायैं जाय'र सगळी गूणा रो माल चाखियो — लूंण ही लूंण !

वाणियैं पाछी वाळद लदाई अर पाधरो आयर बावै रै पगां पड़ियो । बोल्यो—"बापजी ! भूल हुई, खमा करो ।" बावै कँयो—"थारा वचन ही फळ्या है, भाया ! बोल काढै जिकै नैं दस वार हियैं मे तोल'र बाहर काढणा जोईजै । थारी मिश्री है तो मिश्री ही रैसी ।" अर, वावै रै वचनां सूं वो सगळो लूंण पाछो मिश्री हुयग्यो । विश्वास बडी चीज है ।

वचनां रा बांध्या राठौड़ पाबूजी फेरा नैं बिचाळै ही छोडर उठग्या अर चारण देवळ रै बाघेलै री बाहर चढ्या । आपरै बैनोई खीची जीदराव सूं फकत वचनां री रक्षा रै खातर हीज भिड़िया अर आपरी बैन नैं दियोड़ै वचनां—थारी काचळी अखी राखसूं—रै खातर ही केई बार वाह में आयोड़ै खींची रो माथो नहीं बाढ्यो । पाबूजी खुद माथो देवणो मंजूर कर लियो, पण वचन कँयर नही मुकरया ।

वीर तेजोजी आपरै करियोड़ै कौल-वचन रै कारण हीज घावां सूं संपूर हुयोड़ै डील नैं लेयर नागराज री बांबी पर हाजर हुया अर अछूती जीभ नैं नागराज रै आगै करदी ।

इण तरै रा एक नहीं, अनेक ओठा उदाहरण राजस्थान री धरती ऊपर मिळै, जिकै बोल अर बापनैं एक हीज मानैं । इतरो ही नहीं भारत री धरती ऊपर ऐहड़ा भी मानवी हुया है, जिका सुपनैं में करियैं कौल-वचनां ऊपर पक्का रैयर आपरो सर्वनाश तक अंगीकार करयो पण बोल नैं पाछो नहीं, परण दी । राजा हरिश्चन्द अर तारादे राणी री कथा इणरो ऊजळो प्रमाण है । तारादे राणी आपरै पति नैं कयो—

"सत मत छोड़ै सायबा, सत छोड्या पत जाय ।"

बिना मतलब जीभ सूं घणी लपालप करणिया आदमीनैं भी लोग भलो नहीं समझैं । अर, घणी लपालप खुद रै खातर भी घातक हीज हुवै ।

एक बारठजी जिकै केई रै बारणैं मांगणनैं जावता, आवती

न्यूत आवता "ठाकरा ! जे कदै ई मरै ई आपरो आवणो म्हारै आळी दिसा में हुव तो आपां रै अठै प्रधारया जरूर ।"

घणाकरा सा लोग तो बारठजी री हैसियत सूं वाकिफ हुता, सू उण री वात ऊपर कोई घणो ध्यान नहीं दिया करता पण एक अभेदू ठाकर बारठजी रै कैवणै रै मुताबिक मारग वैंवतां उणा रै अठै रात-वासो लेवण री धार पूछता-पूछता बारठजी रै घरै पूगग्या । बारठजी रै घर रै नांव ऊपर एक छोटी सी झूपडी ही । ठाकरा उठै पूगतां ही हेलो मारयो—"बारठजी ! घोडी कठै बाधू ।"

बारठजी झूपड़ी माय सू निकळता बोल्या—"ठाकरां ! घोडी बाधो इण रांडजायी जीभ मू जिका सिचळी को रैवैनी ।"—आ कैयर हाथेक लांबी जीभ काढर ठाकरां रै सामा ऊभग्या । ठाकरा नै समझता कोई घणी जेज को लागीनी । वै आपरी घोडी नै खांचर केई-भलै घर री तलास में टुर-बहीर हुया ।

इण हीज तरै एक डोकरी भी घणी लपालप करती । एक बार वा एक सबलै संघ रै साथै गगा परसण नै गई । सब आळा मिनान कर अर घाट ऊपर गंगागुरा नै गऊदान इत्यादि रो संकळप भरायो । डोकरी कनै गाय तो नी ही पण एक बकरी जरूर ही । वी भी लोगा री देखा-देखी उण बकरी रो सकळप भराय दियो । डोकरी रै मन में पक्को विश्वास हो कै नी तो गगागुर कदै ई इतरी भुय चलायर आवै अर नी उण नै बकरी वदावणी पडै ।

वात ठीक उळटी हुई । डोकरी नै घरै पूगीनै पूरो महीणो भी को हुयोनी कै—गंगागुरां आय 'जैगगामाई री' करी । अब डोकरी नटै भी तो क्यूं कर ? बकरी सांमी ऊभी उगाळै अर गंगागुर भी बकरी नै चोखी तरै देख चुक्या । छेवट बकरी गंगागुरां नै पूजावणी हीज पडी । बकरी डोकरी रै हेज में मिण-मिणावण लागी, जद वा बोली —

कुसग चाली, कुघाट न्हाई,
अर कुवचन बोल्यी न्हावती ।
पैली तो रांड जीभ मिचली नी रैई,
अब जा मेरी मिणमिणावती ।।

ठीक भी है—कोई बोल-वचन काढै, तिकै सूं पैलां उणसूं निकळण आळै नतीजै ऊपर भी चोखी तरै सोच विचार कर लेवणो जोईजै । पछै तो पछतारो हुवै, का पछै यायोडी पूंदै ही लागै । अब पछतायां क्या हुवै, चिडियां चुग गयी खेत ।

इण ही जीभ सूं मोत्यां सूं मुहगै टाबरां री ग्रदळा-बदळी हुवै, इण ही जीभ सूं लाखां-करोडां रो व्योपार हुवै ग्रर इण हीज जीभ सूं सैणां सूं दुसमण ग्रर दुसमणां सूं सैण बणाईजै। इण ही जीभ सूं बाई, बाई ग्रर रांड कैईजै । बाई रो सबोधन सुणर मुणण ग्राळी रो काळजो सवागज उरळो हुय जावै ग्रर रांड रो नांव सुणतां ही सुणण ग्राळी वटर भूंगड़ो हुय जावै । इण ही जीभ मे इमरत ग्रर इण ही में विष बसै पण इमरत नै इमरत रै रूप में ग्रोळखणियां री गिणती घणी कोनी । "जीभड़ली इमरत वसै, कोई-कोई जाणै घोळ ।

ग्राजरै संसार में एहड़ो किसो मिनख है, जिको इमरत सरीखा वचन सुणर राजी नी हुवै । मिनख ही नही, मिरगलै जेहड़ा पसु भी मीठै वचनां सूं रीझर मौतरी परवाह कियां विना बधिक रै कनै ग्राय ऊभै, तद मानखो तो सुरै ग्रर बेसुरै रै भेद नै चोखी तरै समझै है।

तकिया-कलाम भी घणा अजूबा

वै दिन म्हारै एक भायलै बतायो— आज तो साब म्हारै मार्थ घणा ईज नाराज हुया। बा मैं सूं एक 'गोपनीय-फाइल' (Confidencial-File) मंगवाई, वीनै फर्स माथै नाख दीवी अर मनै कमरै मूं बारै कढवाय दियो; अर वो भी चपरासी नै कैयर। मनै आ बात सुणर घणो ईज अचभो हुयो।

अचंभो इण बात रो कोनी हुयो कै साब आज कई घणी नुई बात कर दीवी है। इसी बाता- हरकतां तो आए-दिन म्हारै इण अधिकारी-वर्ग नै लेयर सुणन में आवती ईज रैवै। भारत रै स्वतन्त्र हुयां पछै आपणै ईअ देस रा जाया-जलम्या, इण देस री माटी में पळया-पोस्या घणकरा देसवासी आपनै साब कैवावण में घणो मान, घणो बडप्पण अर आपरो समान समझै। पछै भला, सायबी-लटक ईंया मे क्यूं नी आसी !

आ तो स्वयं सिद्ध है— बेकारी, बेरोजगारी भारत री मूळ-भूत समस्यावां मां सूं एक घणी बडी समस्या। पैला तो आज रै जुग में नौकरी ईज कै नै मिले ! अर मानलो कैनै ई आछो-सी नौकरी मिल जावै, भाग भरोसै या किणी री सिफारिस सूं या खुशामंदी कर्यां सूं, तो पछै म्हारै देसवासियां रो तो काईंज कैवणो !! वांरै दिमाग रो पारो पछै आठां-पौर आकाम में ईज चढयो रैवै। वै मिनख नै पछ मिनख क्यूं गिणै- आभो बांनै टोपसी ज्यूं नजर आवै।

म्हारै इण भायलै नै मैं सारलै २०-२५ बरसां सूं जाणूं हूं। अर मैं ईज क्यूं, म्हारै दफ्तर रा घणकरा साथी जाणै है— सोभालाल किसोक विनम्र, सीधो-सादो, आपरै काम सूं काम राखण आळो, मैनती अर ईमानदार है। जणै पछै इसै देवता-मिनख सूं साब रो इसो बे ओपतो, कोजो व्यवहार !

मोभालाल मूंडो नीचो करयां अपमानित, प्रताड़ित—, उदासी मूंड में कमरै में ऊभो हो अर ऊभा हा सगळा संगी-साथी बींनें च्यारां कांनीं सूं घेर'र।

मनैं ज्यूं ई वैं आ सगळी बात माडर बताई तो मैं भी आपै सूं बारै हुयग्यो। पण एक उळझण अठीनैं पागती में और भी ही। क्रोध मनैं आयो, पण आयो आप सूं एक लांठै अर बडै मिनख माथै। देखो तो म्हारो अर साब रो कईं मुकाबिलो। वै एक प्रथम-श्रेणी रा उच्च-अधिकारी अर मैं एक साधारण दर्जे रो बाबू।

पण असल में बात आ ही कै मैं पिछलै कईं बरसां सूं यूनियन रो मंत्री रैंवतो आय रैयो हो। जणै एक तो मनैं यूनियन रो मन्त्री हुवण [illegible] सागै-सागै मैं इण कार्यालय में आवण सूं पैला कईं पत्र-पत्रिकावां रो संवाददाता अर लेखक भी रैय चुक्यो हो।

म्हारा सगळाई साथी अठी नैं उतावळा हुय रैया हा। 'कै बाबो, साब सूं इन्टर व्यू (Interview) लेवो।' आ भी कोई बात! इण तरै सूं 'चपरासी' नैं [illegible] देवण रो तो साफ मुतलब औ हुयो— साब भी अनुशासन (Discipline) नैं कोनी निभाय सक्या। अर चपरासी नैं कैंयर कमरै सूं बारै [illegible], एक सीधै-सादै आदमी रो अकारण ई अपमान है। जणै इण तरै [illegible] जिसी है।

पछै काईं कैंवणो हो— मैं [illegible] करयो, अर May I come in, sir. कैयो। [illegible] 'yes' [illegible] हिलायर माय आवण रो संकेत करै, [illegible] माथै धमाक सू।

रैंया हो, ओ तो संत है, देवता-मिनख है, रामः री-गाय है, बीरी हिमत तो आप देखो, शर्मा जी ! हरणे-हरणे मनैं मन में आवै ज्यू अंट-संट बक'र गयो है। मैं एक गोपनीय-पत्र (Confidential letter) नै लेयर बीं रैं 'स्मरण-पत्र' (Reminder) री बीसू क्वारी (Query) कीवी तो कैंवण लागो— 'थे समझ्या कोनी।' जणै अबै थे ईंज न्याय करो, मैं कठै तांई दोपी हूं। भला आदमी, जे हूं कोनी समझूं, तो तूं म्हारी लिख दे सिकायत हैड क्वाटर नैं। म्हारो अठै सूं करा दे तबादलो अर पछै बैठ जा तूं ई इण कुर्सी माथै ! जे हूं समझूं कोनी तो !! वाह !!! आ भी कोई बात रैंयी। देख्यो कोनी, मनैं नासमझ कैंवण आळै नैं !!!

मैं कैयो— देखो सा, आप कईं भी कैय सको हो सोभालाल रैं विषय में— आप सामर्थवाण हो। पण हू आपरैं इण विचारा सूं कत्तई सहमत कोनी। हां, आप इत्ती कृपा करावो, बी नैं म्हारैं सांमैं बुलायर पछै कईं चर्चा करो तो सावळ रैवैं।

इत्ती में तो चपरासी सोभालाल नैं लेयर साब रैं कमरैं में ईंज क्यू नईं आवै। वे आंवतै ई साव सूं कैयो, 'साव, मनैं आप माफ कर दिया, आप समझ्या नईं। भला आपरो अर म्हैं जिसै गरीब आदमी रो कईं मुकाबलो, आप समझ्या नईं। मैं आपरो कईं अपमान कर सकूं, आप समझ्या नईं। मैं कईं जोगो हू, आप समझ्या नईं।'

अर पछै हूं भी हंस्यो और साब भी। वां घणा दुखी हुयर कैयो— 'शर्माजी ! थे ठीक कैय रैंया हा। सोभालाल रो इण में कत्तई दोप नईं। म्हारैं ईंज आ बात समझ में कोनी आई।

बात आ ही कै 'आप समझ्या नईं' ओ तो सोभालाल रो 'तकिया कलाम'— हो। अर इणी एक 'तकिया कलाम' नैं लेयर आज दफ्तर में इत्तो बडो रोळो-रप्पो हुवग्यो।

म्हारैं अठै जैसलमेर में (आ बात कोई सन् १६३५-३६ रैं अड़ै-गड़ै री है) महकमा खास में एक पेशगार जी महोदय हा। पेशगार जी घणा बूढा— हुसी तो उण टेम में कोई ६५/७० बरसां रैं अड़ै-गडै। आपरैं काम में घणा हुंसीयार। पण बात-बात में 'कियो'-'कियो' कैया करता। अर वो भी इत्तै जोर सूं कै सुणनियो पछै क्यूं नईं हंसै।

कणै-कणै तो 'तकिया कलाम' रैं आधार माथै लोग-बाग वैं व्यक्ति-विशेष रो नामकरण ही कर देवै। बीकानेर में म्हारैं साहित्यिक-बेलियां में एक सम्पादक जी महोदय हा, राजस्थानी भाषा रा। बांरो 'तकिया-कलाम' हो— 'हैसाण।'

बात-बात में 'हैसाण'-'हैसाण'। पछै कद चूकै म्हारा साथीड़ा। वां सम्पादकजी रो नाम ही 'हैसाण जी' धरप नाख्यो। कणैई कठैई वां रै आवण-जावण में ऊक-चूक हुंवती, तो साथीड़ा पूछ बैठता— 'क्यूं', आज 'हैसाणजी' कोनी देखीज्या।

इणी तरै एक म्हारो पड़ौसी हो। बो बात-बात में 'लेकिन ऐसा है'—'लेकिन ऐसा है'— इण 'तकिया-कलाम'-रो मोकळो प्रयोग करतो। पछै लोग-बाग क्यूं चूकै हा। बां रो असली नाम तो मनैं भी मालम नईं पण, 'लेकिन साब' रै नाम सूं बां नैं आज भी छोटा-मोटा सगळा ओळखै।

इणी सन्दर्भ मे एक छोटी-सी बात भी याद आवै है—

कठै ई एक राजपूत ठाकर रैंवतो। बैरो 'तकिया-कलाम' हो, 'जेयां आप।' शरीर में हट्टो-गट्टो— फूठरो देखर राजा साब बैनै नौकर राख लियो।

नौकर हुवण सूं पैला ठाकर हाथ जोड़र राजाजी नैं अर्ज कीवी, "सरकार, और तो म्हैं में कोई काण-कसर, ऐब कोनी। पण बात-बात में हूं, 'जेयां आप', इण तरै कैय दिया करूं हूं।" राजाजी उथळो दियो— ठाकरां; चोरी-जारी, बदचलण आद तो ऐबा री श्रेणी मे आवै, बाकी आपरो इण तरै री कैंवणो, 'जेयां आप'— मनैं तो ऐब जिसी कईं बात नईं लखावै।

कई दिन बीतग्या। एक रात री बात, राजा साब ने नींद नईं आवै। बां ठाकरां नै बुलाया अर कैयो— ठाकरां, आज तो कोई आछी-सी बात सुणावो, जणां ठीक रैवै। ठाकर कैयो— हुकम हजूर।

एक समै री बात— कठै ई एक सूअर रो जोड़ो रैवै हो, जेयां आप।

ओ बोल सुणताईं राजा साब रो मूंडो तौर खायग्यो। पण कईं सोच-समझर वै चुप रयग्या।

ठाकर आगै कैवण ढूक्यो— एक दिन वै सूयर अर सूअरणी घूरी मायं भटका मारे, नरग कुचळै-खावै जेयां आप।

ठाकर ओ वाक्य पूरो ई नईं करयो हो कै राजा साब बैनै धक्का देअर आपरै कमरै सूं बारै कढवाय दियो— कमीणो कठैरो— बोलण रो ई कैंम कोनी— ग्है सूं भी नईं चूकै।

दूजै दिन ठीक मौको देखर ठाकर राजाजी रै सामी हाजिर हुयो। जाड़र वै कैयो— सरकार! मैं तो आपनै पैलाईं अरज गुजार दीवी ही कै

कोई दोप-ऐब है तो ओ ई ज कै हूं बात–बात में 'जेयां आप' इण तरै कैय दिया करूं हूं ।

'तकिया-कलाम' बोलण री आदत व्यक्ति–विशेष में अनायास ही पड़ जावै । इसी आदत छुडावतां–थकां भी नईं छूटै, जणै कणै–कणै तो आ आदत इसो अनर्थ कराय नाखै कै वर्णन सूं बारै री बात हुय जावै ।

'तकिया-कलाम' नै 'सखुन-तकिया' भी कैवै है । इण रो तात्पर्य ओ हुयो कै इसो वो शब्द या वाक्यांश जिको कई लोगां री जवान मायै इसो चढचोडो रैवै कै बात-चीत करती टेम बै वींनै अनायास ई, अपणा ताईं बिना कईं लाग-लपैट रै कैवता रैवै । 'तकिया-कलाम' नैं राजस्थानी-भाषा में 'अकडी' भी कैवै है ।

'तकिया-कलाम' कांनी जे दृष्टिपात करां अर जे कदास इणां नै लिपि-बद्ध करण री चेष्टा करां तो ओ काम असंभव नईं हुयर घणो ओखो अर कष्ट-साध्य तो पक्काइत रैवै । कारण– संसार में रैवण-आळां री कईं तो गिणती, कई तूंमार !!! लोगां रा 'तकिया-कलाम' आप-आप रै ढंग सूं ।

म्हारै कैवण रो मुतळब ओ कोनी कै सगळाई लोग 'तकिया-कलाम' नै लेयर चालै है, इण रो उपयोग करै ई करै पण इण में कोई सक-सूबै री बात कोनी कै जन-साधारण रो एक घणो-वड़ो समुदाय इण बीमारी सूं अछूतो नईं– वो इण रो प्रयोग करै ईज है । अर हर व्यक्ति, हर मिनख रो 'तकिया-कलाम' भी न्यारो-न्यारो । फेर भी पाठकां री जिज्ञासा खातिर बानगी रै रूप में थोडा-सा रोचक 'तकिया-कलाम' अठै प्रस्तुत करया जाय रैया है । ध्यान राखणो चाईजै कै दुनियां भर में भांत-भांत रा 'तकिया-कलाम है पण अठै थोड़ा-सा राजस्थान रा ईज नमूना दिया जाय रैया है—

१. मेटैं वेटै ।
२. भाई मेरा ।
३. फेर आप ई बतावो ।
४. मजे री बात है ।
५. मैं आप नैं अरज करूं ।
६. हां तो आपनैं कैवै हो ।
७. वे कैया करै है कै ।

८. प्रभु, बात आ है।
९. है सो सज्जन बात।
१०. के समझ्या।
११. कई नाम के।
१२. ले भई जीवड़ा।
१३. फेर के हो।
१४. है जिको नै।
१५. नाराण (नारायण)।

सार बात आ है कै किणी सूं बातचीत करी जावै; जद ईं चीज रो पूरो ध्यान राखणो जरूरी है कै अगलै रो भलो अथवा भूंडो तकिया कलाम मात्र तकिया कलाम ईज है, ईं रै अलावा वा कोई खास बात कोनीं।

—:०:—
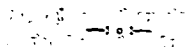
गूंगो लेखक

'पुराणी राजस्थानी में 'ढोला मारू रा दूहा' एक सुप्रसिद्ध प्रेम काव्य है। ई में 'प्रेम' री उपमा गूंगै आदमी रै सुपनै सूं दी है:—

अकथ कहाणी प्रेम री, किण सूं कही न जाय।
गूंगै रो सुपनो भयो, सुमर-सुमर पछताय॥

प्रेम री कथा अकथ है, जिकी किणी नै भी नी कही जा सकै। गूंगै मिनख रै सुपनै समान उण नै तो याद कर-कर पछतावणो पडै।

गूंगै रै सुपनै री भांत ई घणी गहरी बात नै भी 'गूंगै रै गुड' सूं उपमा दी जावै। गूंगो आदमी गुड खाय कर उणरो सुवाद नी बता सकै। वो उणरै सुवाद रै आनन्द में मगन हुवतो जावै, पण किणी नै एक शब्द भी नीं बतावै अथवा बता नी पावै। गूंगै री बात तो उणरी मा भी शायद ई समुची नीं समझ पावै। कह्यो भी गयो है—

"गूंगा थारी बात नैं समझत है नहिं कोय।
कै समझै थारी मावडी कै समझै थारी जोय॥

अब आप शंका करो, स्यात् गूंगै नै गुड रो सुवाद ई न आवै तो? आप री इसी शंका निर्मूळ है। उणरी वाणी ई तो गयी है, सुवाद री लगती तो वर्तमान है। साची पूछो तो गूंगै लोगां नै गुड रो सुवाद आपणै सूं भी ज्यादा आवै।

मेडम मेरिया मांटेसरी रै मतानुसार एक ज्ञानेन्द्रिय रै अभाव में दूजी ज्ञानेन्द्रिय ज्यादा काम करै। इसी कारण मांटेसरी प्रणाळी रै प्रशिक्षण मे बाळक नै एक ई इन्द्रिय सूं ज्ञान दियो जावै, जिण सूं बालक किणी ज्ञानेन्द्रिय रै अभाव मे ज्ञान री परख सूं अछूता नी रह जावै तथा गूंगा, बहरा, आंधा भी पढ पावै।

मांटेसरी प्रणाली सूं किणी भांत रो मतभेद हो सकै पण मेरिया मांटेसरी रै इण शिक्षा-सिद्धान्त रै अतिरिक्त भी, आ एक आम बात है कै नैणां सूं हीण सूरदास नैं स्पर्श-ज्ञान ज्यादा हुवै अर उणरी श्रवण-शक्ति भी तेज हुवै। इणी भांत गूंगा लोगां में वाणी रो तो अभाव हुवै पण उणां री नजर पैनी हुवै। वै हर बात नैं गौर सूं देखै अर मूंडै परला भाव आंख्यां री भाषा सूं ई पढ लेवै। बै मन रा भाव भी सकेत बिधि सूं बतावै पण गूंगा-लोगां नैं सदा इण बात पर हैंफ आवै कै आंख्यां री भाषा सूं ई उणां रा भाव कोई क्यूं नीं समझ लेवै अर उणां री आत्मा नैं अतरो कष्ट क्यूं देवै।

अंग्रेजी लेखक ए० जी० गीर्डीनर रै कथन रै मुजब आधां री बनिस्पत गूंगा अर बहरा मिनख ज्यादा दुःखी है। वै लीलै गगन री घटा अर शहर री ऊँची-ऊँची इमारतां री छटा, प्रकृति री सुन्दरता देखकर मन तो राजी करै, पण गूंगै रो मन लोक-व्यवहार मे सदा दुःखी हुवै। वै किणी दो मिनखां रा होठ हालता देखर मन ओछो करै अर समाज सूं दूर, एकान्त-जीवण री मनस्या करै।

आंख्यां रै अभाव में आन्धां री श्रवण-शक्ति वरदान सिद्ध हुवै तो वाणी रै अभाव में गूंगां री पैनी नजर ई उणां रै वास्तै अभिशाप सिद्ध हुवै। आंधा कान लगायर वात सुणै अर इण संसार री तड़क-भडक दिखावटी-पण नैं न देखकर आनन्द-लोक में ई रमै पण गूंगा किणी पर निजर गडाय कर दुःखी ई हुवै, पळ-पळ रंग पलटती दुनिया नै दीदां सू देखै।

ई दुःखी लोगां खातर समाज सदा उपेक्षा दिखायी है। इणा रै कल्याण खातर भोत कम काम हुयो, भोत कम लोग चेष्टा करी। जठै आन्धा मिलखां नैं अंगहीण होतां-थकां भी समाज में आदर प्राप्त है, उण सू आधो भो आदर इण गूंगा-बहरां नै मिलतो तो इणा री आत्मा अतरी दुखी नी हुवती पण समाज में इसा सदा हीण समझ्या गया है अर उणा री बराबर अवहेलना होती आयी है। जे समाज इण मूक समाज रै प्रति भी हमदर्दी दिखाकर इणां नै गळै लगायो राखतो तो आधा री भात गूंगा लोगां में भी अनेक प्रतिभावा प्रगट हुय सकै ही। जे 'सूरदास' 'सूरसागर' रच सकै तो कांई 'मूकदास' मिल्टन सा महान नी बण सकै ?

आज विज्ञान रै युग में असम्भव सी कोई भी बात कोनी बची। गूंगां रै खातर भी अनेक भांत रा उपकरण सुविधा-सारू जुटाया जा सकै है। उणां रै भी मनोरंजण अर मनोविकास री सातरी व्यवस्था सम्भव है। आधा री श्रवण-शक्ति उणा नै सगीत-सुधा रो आनन्द-पान करण में सहायक है तो गूंगा री पैनी-प्रवीण दृष्टि

भी चित्रकळा री विच-विचित्रता रै चित्रण में चतराई दिखायर चित्त रै रंजण में सचेष्ट है। चित्रकळा री रेखावां री सूक्ष्मता, प्रकृति रै रंगां री परख गूंगै आदमी नैं ज्यादा हुवै। तेल, पाणी अर पेस्ट रै रंगां री प्रक्रिया मे भी यो प्रवीणता-प्राप्त हुवै।

चित्रकळा री भांत उद्योग, दस्तकारी कळ-कारखानां री मशीनां रै काम मे गूंगा ज्यादा निपुण अर दक्ष है। मूकता रो मेळ मशीना री मेकेनिकी अर यन्त्रां री तकनीकी सूं ज्यादा है। इणी वास्तै मूक नै किणी रूप में मानव-समाज रो एक 'कम्प्यूटर' कैयो जा सकै है; स्यात् 'कम्प्यूटर' री रचना भी मूक-प्रेरणा है।

पण आपणो सरोकार तो साहित्य सूं है। गूंगा लोगां कनै भावां री मोटी सम्पति है। साहित्य रै भाव-व्यापार में गूंगो गांठ रो पूरो है। वाचाल जगत नै देखकर उणरै मन में जिकी प्रतिक्रिया हुवै; संसार री लीला रा अनेक चत्राम जिका अति सूक्ष्म हुवै, वे पैनी दृष्टि धारी गूंगा लेखकां री कलम सूं फूटर साहित्य में सकार हुय सकै। अनेक भांत रा भाव, जिका ईं वाचाल ससार सूं उठगा है, वै ईं मूक-समाज री मंजूषा में सुरक्षित मिल सकै। मूक लोक रै भावां रा चित्राम गूंगा लेखक ई चितार सकै। इणां रै पांण साहित्य में एक क्रान्ति सी आ सकै। मूकता भी मौलिकता रो मापदण्ड बण सकै। 'मूक-भारती' भी मूर्त रूप ले सकै।

घणी खुसी री बात है के अब ईं गूंगी दुनियां कांनी भी समाज रो ध्यान गयो है अर ईं दिसा में प्रयत्न हुय रैया है। अब, वो दिन दूर नीं है, जद विज्ञान रै उपकरणां रै पांण महाकवि पीथल री ईं आशंका नें सार्थक कर दी जावै—

"जाणेवाद मांडियउ जीपण, थाग-हीणि वागेसरी।"

शायद आज रा गूंगा लेखक भी वाणी (सरस्वती) रै वाचाल सपूतां री वाद-विवाद में बोलती बन्द कर देवै।

मिनखपणों

धरती माथै जलम लेवणो उण रो हीज सार्थक है, जिको इण माथै आपरा मगळ-पगलिया मेल'र इणनै ऊजळी करै अर आपरै सत करम अर भलै व्यवहार सूं मानखै रै आगलै-पाछलै किणी कळंकरी काळस धोयर आपरै ज्ञानरी जोत सूं उणरी हियै री हाडी नैं सैचदण करै। का धरती माथै जलम लेवणों उणरो सार्थक है, जिको आपरै जीवण रै एक-एक सांस रो मिजान राखतां-थका परमार्थ में आपरी अखी जिन्दगी रो अखंड असमेध धुधाव्तो राखै अर मानखै री जीवण-पगडंड्यां में जिका वेतरान कांटा खिडचोडा है, उणांमाथै पैलां आप चाल'र उणांरो माथो भानै अर ता पछै लारलै मानखै-सारू सागीड़ै राज-मारग रो एक आलीजो वेल वैठावै। का धरती माथै जलम लेवणो उणरो सार्थक है, जिको वीर आपरी कायारै कलरै-कतरै नै खिडार पण धरती री रखाळी करै अर उण रो धिणाप लियां उणरै एक-एक रावडियै खातर वैरीनै रावड़ियां भेळा रळावै। इसा वीर आण-वाण अर माण रै खातर जीवै अर राग रै तिरगै हेटै सदा पण आजादी रो शंख तुतुड़ता रैवै।

अैडा मिनख हीज आपरै करतव सूं आगै मानखै रै जीवण ढबसारू मुख अर शांति रो एक अैडो फरमाण सैचड़ूड करै, जिण मुजब आदमी उणमाथै चाल'र आपरी सागण मंजल पा लेवै। सांप्रतक आदमी नै ड्ग वात री तैंन पड़ ज्यायां करै कै जीवण रो सालरो चील्हो तो ओ है। सागी चील्हो लाध्यां पछै मिनख जीवणरै उण चीलहै माथै आपरै पगां नै बिना ढाब्या चाल वहीर हुय जावै। अैडा मिनख हीज धरती अर आभै विचाळै एक अैडो सोराई रो वायरो ऊपणै, जको वायरो मिनखनै आपरै मानखै वेई नितोलग जीवतो राखै।

धरती माथै पण अैडा मिनख भी सांप्रतक दीमता रैवै, जिणां सूं इण जगत रो ताइ भलो को हुवै नी। अैडै मिनखां रै पलै नीं तो नीति अर नी हीज

किणी तरै रो धरम-करम। भेंड़ा मिनख खाली-मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति संतूल दीसता रैवै।

पण इण बात सूं उणांरै पल्लै के पडयो ? वै तो कोरा-रा-कोरा ही रैया ! वै सिधडै-सरूप है—

सूखो रैयो सिधडा, सदा तेलरै संग।

सिधडै उथळो दियो—

सूखो रैयो तो हूं रैयो, इण में मीन न मेख।

भौर खाल सा नरम हुवै, मेरी करडाई तो देख॥

जद भेंडा भादमी किणी भाछी बात सूं चीकणा हुवै तो कूंकर हुवै ?

जगत में विचार खोटा मिनखां री को रैवै नी, विचार तो उणांरी हीज रैसी जिका कीणी चोजें मिनखा-खातर कीं करयो। जे कोई किणी खातर कीं नीं करयो तो उणनै लोग चेतै क्यूं करेला ?

भाली कै आछो भर माडो तो इण जगत में कदीमो सूं चालतो भायो है। जगत में जे भलाई री सुमार नीं तो बुराई री सुमार नी। जदही किणी कवि कैयो है— "पाप-धरम रच्या दोय भेळा, तीरथ धाम रच्या जुग मेळा।" भला जे भापरी भलाई नी तजै तो बुरा बुराई कद छडै !

भला मिनख भापरी सुळनाई भर कवळाई सूं चालर जगतरै मानखै सामैं एक सातरी सोरम बखेरै, जिकै सूं मिनख मिनखरै घणो नेड़ो भावै भर भा नेड़ास ही मिनख रो मिनखपणो है। "भाम फळै नीचो लुळै, इरड चढै भाकास।" भला मिनख भाम सैंतूळ भर बुरोगार इरडियै संतूळ पण जाणीजै।

भला मिनख जठै नरमाई भर कवळाई रो भालम रचै, बठै बुरा मिनख पण जाणै क म्हां जिसा म्है ही जलम्या हां। बात साफ साची है। वा जिसा तो धरती मायै खाली वै हीज जलम्या है। वा जिसा वै नी जलमता तो के मालूम पड़ती भलै भर बुरै मिनखरै फरक री ? धरती मायै खाली कचण ही कचण हुवतो तो कंचण भर कथीर रो भन्तर किण तरा जाणीजतो ? इण भन्तर नै जाणन-मारू तो बुरै मिनख रो भी एक योगदान है पण भो कोई योगदानां में योगदान कोनी गिणीजै। जगत तो भलपण रो योग ही योगदान मानै।

पण उपाय कांई किमो जावै ? बुरै भादमीनै भापरी बुराई री ठीक मूं ठाव कोनी पड़ै भर जद ही वो भेंडी बुराया रो सूगलो काम करै। जे बुरै नै भा भोळखाण हुय ज्यावै कै मैं तो बुरो भादमी हूं भर बुरो भादमी हुवणों भोत भेंडी बात है तो पछै वो बुरो कितोक दिन रैवै ? जरूर वो पछै रो नीं रैवै पण भा

सैंन पड़ै जद नीं ! भैंस आपरै मन में जे इयां ज्याणे ज्यावै कै हूं तो एकदम काळी अर कोभी हूं तो पछै वा किताक दिन जीवै ? पण वा तो आपनै 'पूगळ री पदमणी' सूं कमती नीं समझै । पण भैंस किसी पदमणी बण सकै ? भैंस नै चावै कोई कितरी ही सिणगारो पण वा तो आपरो मायो गारै में गरक करसी हीज—

भैंस रे पदमणी नै गैणां रे पैरायो,

पैर कोनी जाणै वा तो ओढ कोनी जाणै, मायो दे दियो गारै में।

कई आदमी बुरा हुंवता-थकां भी घणा चात्रक बणनै री कोशीस करै अर आपरी समझ में आपरी चतुराई सूं आपरी बुराई नै लुकोयर राखणी चावै । पण कैवत में कैयो है के—"दूधां धोयां कोयला, ऊजळा नी होयला ।" मन रा काळा चायै कितरा हीज ऊजळा बणो पण किसा वै ऊजळा बण'र हंसलां बण सकै है ? जे घणा बणै तो बुगला भलाई बण जाओ । पण बुगला किसा खीर नीर रो निरवाळो कर सकै ? खीर-नीर रो निरवाळो तो फकत हंसलां कनै हीज लाधसी ।

बुरा बुराई करता किसा किणी रै पाल्या रैवै ? अर जे कोई उणांनै बुराई सूं बरजै तो वै पाछीका सतवादी रा माकडा पण छांटणनै लागजावै-जद हीज किणी इण कैवत में ओ भाव उतारयो है कै—"झूठा ऊंठ माकडा ही छांटै ।"

आदमी जितरो ओछो हुयसी, वो उतरो हीज मोटो बणनै सारू खसगी पण बिना रैंवतो कोई कद मोटो हुयो है ? खाली "हूं मोटो हूं, मोटो" कैयर थूक भलाई बिलोय लेवो पण इयां करयां किसो मोटो हुवै । मोटो तो मोटा गुणां हुयां हीज हुयसी । विच्छु घणोई आपरो डक मायें पर मेल्यो राखै पण कै वो मिणधारी री बराबरी कर सकै ? बिसलूमै रो फळ मतीरै सूं घणो पण हरयो दीसै अर मतीरै रै भरम सूं उणनै देखर मन घणो ललचाय उठै पण किसी उण सूं किणी री तिस मिटै ? पाखती में मूंडो खारो भलाई करल्यो । नियां तो काला मिनख ही गुणां री गाडी लादयां फिरया करै । घणकरा अंड़ा आदमी हीज इज्जत अर मानखै रै उण अघखंव माळियै में आपरी सुख-साता फरमाया करै, जिकै रै नीं तो पगोथियां है अर नीं हीज जेवड़ो पकड़'र चढणरो बीजो कांई मायन । आ बात सगळा जाणै अर आ आंल्यां लागी दीसै कै रतन बेई नाळा-खाळा कितरा हीज जोवो पण उणां में रतन कठै ? रतन तो रतनागर में हीज पण लाधसी ।

जिको मन सूं हीज टोबली कमेडी अर मन सूं हीज गायडमल बण्यो फिरै, उण सूं किण रो कांई काम सरै ? टक्का तो उण रा दो हीज वटै कोद नी । कैयो है कै नांव कपूररे पण मिलै कोनी मागयो लूण ही । खाली नांव मोटा अथवा दूसरो ९

मू कद किसो काम सरचो । 'नाव नैण सुख पण आंखरो आवो' अर 'नांव धापली पण फिरै टुकड़ा मांगती !' नांव नंसीधर हुवो, का तिलकराम हुवो पर कनै नीं तो बाजो, नीं पुंगी अर नीं माथै पर टीको-टमको ।

मानखै-आळो मिनख हुवणो पण घणो दोरो है अर ओखो काम है । पण जे कोई मिनख बणनै री लगोलग कोशीस करै तो एक दिन वो पकायत मिनख वण जावै । मिनख नै इण संसार में और करणो हीज कांई है ? उणनै फकत मिनख ही तो वणनो है, जिको उण रो निजू अधिकार है । वेद-शास्त्रां में मिनखनें ऊंचो उठावण रा अनेक उपाय बताया है पण जे बन्दो उण उपायां पासी आपरी मीट ही नीं ढोळै तो वै उपाय भी वापड़ा वणर रंय जावै । घड़ो घी सूं भरयोड़ो है पण जे कोई उण में हाथ घालर घी नी काढै तो आदमी री रोटी कूं कर चुपड़ै ? संसार में आछी सीख देवण आळा री भी कई कमी कोनी पण उणा कानी ध्यान देवण आळा री घणी कमी है । स्यात इणी खातर सिद्ध जसनाथ नैं आ बात कैवणी पडी—

दुनिया में समझाऊ आया, कई तारघा गिवारू ।
समझाया समझ्या नहीं, टोटै गया अहंकारू ।।

आपरी कमी नै मिटावणों ही आदमी री साचली सफळता है । मिनख रै अनेक कारणां सूं अणमेधा रा साकडीला मारै लाग्योड़ा है । आ साकडीलां नै बुझावणों ही तो मिनख रो मिनखपणो है । जिको साकड़ीला नै साफ मेट नाखै, वो निस्चै ही एक ऊंचो, घणो ऊंचो मिनख है, नातर तो खाली डोळ रो मिनख है, मिनख पणे रो मिनख नी है ।

वै मिनख तो इण जगत में खोडीला हीज वाजसी, जिका किणी रै दव-ढाळै में नी आवै । जिका मिनख नौ महीणा आपरै पेट में लियां फिरण आळी आपरी मा रा नी । मा आपरो नूर बिगाड'र आपरै हालरियैनै आपरा हाथळ चसड-चसड़ चुंघाया, सूंड मायलो गागियो काढर आपरै बाळकियै नै दियो अर आप आलीड़े में सोय'र आपरै जायोड़ै नै सूकीड़ै में सुवाण्यो । मा रो तो एक रात रो भी वदळो नी चूकै ।

आप रै पेट नै भाटा मारर आपरै लाल नै सीरो-गावूंही जिमायो पण वै आपरै बाप रा नीं, भीड मांय भार-बटावणियै आप रै भाई रा नी अर हजार मिनखां में हाथ भाल'र लायोड़ी आप री लुगाई रा नी । जिका आपरै माथै'रो मगळो भर-भार वोदी धान रै डोका दाई उतार राळयो आतरै, इसा मिनख बुरा अर मूगला नीं कैवीजसी तो के यै आछा कैया जावैला ? अर इगा मिनख जे आपना में आटा अर धरमेला में गूट नाखै तो नाखै हीज । उणा नै पोट बै अर फोट री किसी पण लाज ?

बुरै मिनखां री आ खास ओळखाण हुया करै कै वै घणा करता गुणचोर, नितगुण चावणियां, औगणगारा, मिनखपणै सूं हिडक्योड़ा, कूड़ै माजनै रा धणी बण्योड़ा अर वेअरथा बडायला हुया करै पण किसो आं रो डोळ-माजनो घणा दिन लुक्योड़ो रैय सकै ?

भलै मानखै-आळा मिनख कैया करै कै गुण रा किसा गाडा भरीजै ? गुण तो एकर हुयोड़ो ही घणो। एकर करयोड़ै गुणनै भी मिनख हुवै तो आपरी आखी जिंदगी में भी कद भूलै ? पण सांस-सांस सागै गुण चावणियां इण बात नै कांई समझै ? बुरो मिनख गुण रै बदळै औगण भलाई करो अर औगण जे नीं करै तो गुण तो लाखा ही बाता को करै नी।

नितगुण चावणियै बुरै मिनखां खातर चायै कोई कितरो ही ज कीं कर नाखो, वै उण बात नै मानण नै त्यार नीं हुवै। जे कोई उणां खातर आपरी नस भी उतार मेलै तो भी वै आ कैवता पण लाधसी कै नाड पाथरी को बाढी नीं ! जद उणां रो कोई के करै ? खोडीलो आपरै खोडीलै सुभाव नै कद छोडै ? औगणगारै नै सीख दियोड़ी भी औळी जावै, जियां बानी में होमियोड़ो घी अैळो जावै।

घर-घर डक्का खावती एक कुतडी नै किणी शीशमहल में लेजायर छोड दी पण वा शीशमहल री सोभा नै कांई समझै ? वा तो बठै आपरी ही ज परछांई नै देखर भूसण नै ढूकगी। कागलो च्यारूं वेद भणीज कर भी गुण नै को अगेजै नीं। वो तो आपरी चांच नै माडी वस्तु में देवै ही ज। अैड़ा मिनखां नै जिका लिगती कुतडी अर कागलै संतुल हुवै, मिनखपणै रो पाठ कदेई नी भणावणो। मूरख नै टक्को दे देवणो पण अकल नीं देवणी।

पण मिनख रो ओ भी सुभाव है कै वो अैडै मिनखां नै किणी उपाय सूं रस्तै-सर घालै अर रस्तै-चूक्योड़ै मिनख नै मिनखपणै रो पाठ पढावै। फेर भी मिनख नै सुधरणै खातर खुद त्यार हुया ई काम पार पड़ै। आ सार बात है— "सीख सरीरां नीपजै, दिया लागै दाम।" आपरी कमी नै मिनख खुद मिटावै, जद ही वा मिटै अर जद ही मिनखपणो परगट हुवै।

□

सोनै री धरती

पैली-पैली तो आदमी नें यूं लखावै जाणै जिंदगी में खुसी अर बडाई रा मोका ब्याह-सादी में, लडायां जीतणै में अर ठाठ सूं खावणै-पीवणै में है। सरसरी तौर पर आ ही दीसै, जाणै कैयां भी जादा सूं जादा प्राप्त करणो ई जिंदगी रो लक्ष्य है पण आध्यात्मिक दीठ सूं देखां तो जिंदगी रा ये आणन्द झूठा सा लखावै। सुखी जिंदगी आगै बधतो जावणै में ई है, जद कै आगली खुसी पैलडी सूं लगातार जादा बडी हुवती जावै। आगै बधणिये आदमी रै आगै सदा नई आस बणी रैवै।

जिण धिरती पर आपां रैवां वो एक छोटो सो गिरह है अर आपणी जिंदगी भी थोड़ी सी है। आपा मोत छोटै-छोटै कामां में उळझ्या रैवां पण आपणी परकिरती इसी है कै आपणी आसावा तारा ज्यूं पकड में नीं आवै- अणमाप सदा दूर ई लखावै पण जिंदगी भर बा आस बणी ई रैवै, जीं तांई आपा कदे ई पूग कोनी सका।

सांचो सुख मिलणै में सवाल ओ नी है कै आपां कैयां साध्य तांई पूगां पण प्रश्न ओ है कै कैया आपां सह करां अर्थात् आपणा साधन किसा है? प्रश्न ओ नीं है कै आपणै कनै के है पण प्रश्न ओ है कै आपां चावां के हां। आगै बधणै री आस, कोई ऊँची चीज या गहरी थाग, स्थायी आणन्द है। आ एक इसी धरोड है, जैयां कोई अचळ सम्पत हुवै, इसो खजानो जिको कदे खाली नीं हुवै पण जीं सूं साल दर साल आणन्द देण वाळो हांसल मिलतो रैवै।

आदमी री जित्ती ऊँची आसावां हुसी, बो वित्तोई नैतिक गुणां रो धणी हुसी, आध्यात्मिक रूप सूं भगवान। जद ताणी जिंदगी रै नाटक मे आपणो कोई लगाव नीं हुवै तो औ नाटक नीरस अर घोळमथोळ है। जिकां नें नी तो व्यवहारी ग्यान हुवै अर नीं विचारणै री सगती हुवै, बांरै खातर जिंदगी बदरंग है, इसी ऊबड-खाबड पगडंडी जीं पर चालर बै आपरी नळी फोड़ लेवै अर्थात् बांरै खातर जिंदगी एक भार है, दुगा सूं भरयोडी।

जाणनै अर सीखणै री इच्छावां अर आसा रै वळ पर ई मिनख ध्यावस सूं जिंदगी काट देवै अर जिकी चीजां अर मिनखां नै देखै, वां में रस लेवै। आंरै वळ पर ई काम अर आणंद री नित नई भूख लेयर हर सवेरै उठै। इच्छा अर उत्सुकता इसी दो आख्या है जांरै जरिये वींनै दुनिया रंगीन दीखै। आं रै कारण ई लुगाई तो के, जीवाश्म तक वानै रूपवान दीखै।

आदमी आपरी सम्पत खोयर चाहे भिखारी हुय जावो पण जे वीं कनै ये दो तावीज है तो वो आणद प्राप्त करणै री आसा सूं धनी है। मानल्यो, कोई इसो भारी भोजन कर लियो कै आगै गासियो भी नी चालै, मानल्यो वो दुनिया रो सारो ज्ञान प्राप्त कर लियो अर ओर क्यूं सीखणै री इच्छा ई कोनी, सारी दुनिया रो तजर्बो कर लियो, वींनै जीवण में के रस रह ज्यावै ? वो क्यां ताई जीवै ?

जे किणी पगा चालणिये आदमी रै थेलै मे एक ई किताब है तो बो बीनै ध्यान सूं पढसी, बीच-बीच में किताब नैं नाकै छोडर पढयोडै अस पर विचार करसी, ईं डर सूं कै बा किताब खतम नी हुय जावै, नही तो आपरी जातरा रै बीच में ई बो साथी-बिछूणो हुय जासी। कोई जवान अबार ई कार्लाइल री किताबां पढली अर फ्रेडरिक महान पर १० कापियां भर पढाई पूरी करली। बो ईं डर सूं चिल्ला पड्यो कै के बी नै अब कार्लाइल छोडर दनिक अखबारां सूं काम चलावणो पडसी ! एक खूब प्रसिद्ध उदाहरण सिकन्दर रो है, जद बो आ यांद कर रो पड्यो कै अब बी कनै जीतण नैं कोई देस कोनी रैयो। जद गिब्बन सारी जिंदगी री मेहनत सूं आपरी 'डिक्लाइन एण्ड फाल आफ रोमन एम्पायर' री जिल्दां पूरी करली तो एक बार तो बो संतोस री सांस ली अर खुसी मनाई पण दूजै ई छिण दुखी हुयगो कै वीं री मेहनत री अब आगै कोई मंजल नी रैई।

खुशी री बात है कै आपां चांद पर बिना फळ रै तीरा सूं निसांनो लगावां हां। आपणी आस कदै भी नई पा सका, जिसी सौनेरी धरती पर लगा राखी है अर ईं धरती पर कोई फळ नीं मिलै। जैयां सिरसूं री ढेरी मांय सूं बिखरयोडा बीज और नई पोध उगाय दैवे, जैयां ही एक आस पूरी हुयर दूजी नै जलम देवै।

जद टाबर जलम्यो तो थे सोची कै दुखा रो अन्त हुयगो पण आ तो नई चितावां री सुरुआत है। जद थे ईं टाबर री बचपन री रुखाळी करली ईं रै पढाई करायी है। अर अन्त मे ब्याह भी करे दियो तो भी नया डरं, नई डरावणी चितावां दिन-रात आ घेरै। फेर आप रै टाबरां रै टाबरा री तन्दुरुस्ती री चिन्ता, निज री चिन्ता क्यूं हुय जावै।

थारो ब्याह हुय जावै, जणां सोचो कै सारी दुबंघा मिटंगी अर सुख-शांति री जिन्दगी जीस्या। पण आ तो ब्याह सूं पैलां री प्रेमलीला ई खतम हुई है। प्रेम करणो अर बी नै पावणो किणी तरै रो बन्धन नीं मानै, वो तेज-मिजाज वाळां रै खातर मोत ओखो काम है। पण प्रेम बणायो राखणो भी सीधो काम कोनीं, घणो करडो है। ईं खातर मोटचार अर लुगाई नै दया अर सहन-सीलता बरतणी पडै। ब्याह री वेदी सूं ई प्रेम-कहाणी सरू हुय जावै जद दोन्यां री तरफ सूं समझदारी अर उदारता री होड सी लाग ज्यावै अर कदे न पूग सकै, इसै आदर्स नै पावण खातर जिंदगी भर कोसिस करता रैवै। नी पूगण वाळो आदर्श ईं वास्तै कै अब आदर्श एक री जगा दोवा रा हुयग्या है।

सोलोमन कैयो है— "किताबां री सख्या रो अन्त कोनी।" साहित्य रै धर्म री बो आ सबदा में किती तारीफ कर दी, आ शायद बी रै पूरी ध्यान में नी थाई हुवै। प्रयोगा पर, जात्रावा पर अर धन कमाणै री कळा पर लिखी किताबां रो असल में कोई अन्त नी है।

एक समस्या दूजी नै जलम देवै, जीं सूं आदमी री शोध-खोज रो कदे ई अन्त नी हुय सकै। सदा ई आपा पढवो करा पण चावा जिसा विद्वान तो कदे ई नी हुय सकां। आपणै सुपना रै लायक मूरत आपां कदे ई नी घड सक्या। जद आपां कोई वडो महाद्वीप खोज लेवा अथवा कोई पर्वतमाळा नै पार कर लेवा तो धरती रै दूसरै नाकै कोई ओर महासागर अथवा कोई बडो देस फेर शोध-खोज तांई झाला देवतो नजर आवै।

ई अनत विश्व मे आपणी सगती लगावण री घणी जगां है अर सारी ताकत लगायर भी ओर लगावण री जगां बणी ई रहसी। आ कोई कार्लाइल री किताब कोनी, जिकी पूरी हुय जावै। ईं धरती रै एक कूणै में, कोई प्राइवेट पार्क में अथवा कोई एक ढाणी रै पाडोस मे मौसम इतरी चतराई सूं बदळै है कै चाहे आपां वठीनै सारी जिन्दगी भर फिरता रैवा पण वठै भी क्युं-न-क्युं नई चीज नजर आवै ई, जिण नै देखर आपा चिमक जावा अर बाग-बाग हुय जावां। कुदरत रो कोई थाह नीं है, जैयां ग्यान रो।

धरती पर बस एक ई इच्छा है, जिकी पूरी हुय सकै, जिकी पूरी तरां प्राप्त करी जा सकै, अर बा है मौत। अर कई कारणां सूं इसो कोई भी मिनख कोनी मिल्यो, जिको या कैवै कै आ अंगेजणै लायक है अथवा नीं है।

आपणी मौत ई माडी हालत हुय जावै, जद आपां हवाई-आदर्शा नैं पांवणै री निरंतर, बिना आराम करे, चेस्टा करां, अणथक साहसी अगुवा बणर। आ सांच है कै

लक्ष्य नें कदे ई कोनी पूगां अर आ भी हुय सकै कै कोई इसी जगां ई नीं हुवै। जे आपां सैंकड़ां बरसां जीवां अर देवता सी सगती भी आंपणै में हुवै तो भी आंपां लक्ष्य रै घणा नेड़ा नीं पूग सकां। चांवां सो मिलै कोनी।

ओ रात-दिन काम करणिया मिनख ओ रात-दिन चालणिया पण लक्ष्य नैं नीं जाणनिया मिनख, तनै स्यात् भरम हुयगो कै तूं कोई ऊंचै सिखर पर जरूर हो पूगसी अर्थात् तेरी इच्छा पूरी हुय जासी अर थोड़ों सो आगीनें अस्त हुवतै सूरज रै सांमनें 'एल डोरेडो' री मिनार जरूर खोज ई लेवसी अर्थात् मंजल पर पूग ई जावसी।

आणद रो साचो कारण कठै है, थे नी जाणो। शायद थे थांरी खुद री खुसी नें ई नीं जाणो कै मंजल पर पूगण सूं घणी आछी आसावान हुयर मजल तांई पूगण री चेस्टा है। प्राप्त करणै खातर करी गई मेहनत मे जिसो आणद है, विसो प्राप्ति में नी।

ॐ

जुग-धरम : मित्रता री साधना

आपा रै अठै जीवन-साधना री च्यार भावनावां उत्तम गिणी जावै—मैत्री, करुणा, मुदिता अर उपेक्षा। इणा में मैत्री भावना ई सगळी भावनावां मे श्रेष्ठ ग्रौर स्थायी भावना है। करुणा अर मुदिता, मैत्री भावना रा ई प्रासंगिक रूप है, अर उपेक्षा तो विरोधी परिस्थिति री लाचारी सूं ईज पैदा हुयोड़ी हुवै।

बौद्ध परिभाषा में इण च्यारूं आर्यभावनावां नै ब्रह्म-विहार कैयो है। आपां आपणा ब्रह्मदेव रै च्यार मुखां सार्थ इणां रो संबंध जोड सकां हा।

इण च्यारूं भावनावां नै इण कारण आर्यभावना कैयी है कै इणां में कठै ई हीनता, बेदरकारी, अथवा अनार्यवृत्ति कोनी।

सगळां सार्थ मैत्री तो हुवणी ई चाहीजै। इण में दुखी लोगां सार्थ, अथवा जिका लोग विपन्न अवस्था में पूगग्या है, उणां रै सार्थ तुच्छता ग्रौर तिरस्कार नही पण स्नेहमयी करुणा हुवणी चाहीजै। मैत्री पीघळी-र, करुणा रो रूप धारण करयो।

जिका लोग आपां सूं आछी हालत में है, उणा री समृद्धि देख नै मन मे ईर्ष्या, मत्सर अथवा असूया लावण री जग्या सालो प्रसन्नता अर मुदिता धारण करणी चाहीजै। ओ है मैत्री रो प्रफुल्लित रूप।

अबै जिका लोग आपणी मैत्री अथवा करुणा चावै ई कोनी, जिका आपा रै सार्थ आंट रासै, जिका रै मन में आपणै माथै बिना कारण ई दुसमणी है, अर जिका री सेवा करणै रो आपा नै मौको तक को मिलनी, इसा लोगां सार्थ मानव-सहज तिरस्कार, कठोरता, वैमनस्य अथवा द्रोहभाव राखण रै बदळै 'भगवान इणा रो भलो करै' इण तरै कैय'र उणा नै छोड देवणा। इण तरै रै लोगां नै आपा सूं द्वेष करणै रो मोको नहीं देवणो, आ है उपेक्षा। मैत्रीभावना नैं सामलो आदमी जद ऊभो रैवण री ई जाग्यां को देवै नीं, जद मैत्री-भावना उपेक्षा रो रूप धारण करण रै अलावा ग्रौर काई कर सकै है।

कर्णाई-कर्णाई इण भांत री उपेक्षा असहयोग रो रूप धार अेक शस्त्र रै रूप में काम आय सकै है। इण में खास सरत तो आ है कै ईण में कोई अनार्य-भाव नहीं आवणो चाहीजै।

मैत्रीभावना में प्रेम है, वात्सल्य है, कल्याण-कामना है, भक्ति है। इण सगळां रै हुवतां-थकां ई मैत्रीभावना में इण जुग रो जिको सगळां सूं आछो सबंध अथवा गुण हुवणो चाहीजै, बो भी है, अौर बो है समानता रो। मैत्रीभावना में ना तो कोई मुरब्बीपणो है अौर नां कोई दास्यभाव। समानता री भूमिका माथै ईज मैत्रीभावना आछी तरियां फळै-फूलै है।

मैत्रीभावना में समानता रै पायै-माथै दूसरा रै सुख-दुख सायै सहानुभूति जतावण आळो आत्मौपम्य (दूसरै नै आप जिसो ई समझणै रो) भाव रैवै। आत्मौपम्य भाव ज्यूं-ज्यूं संधतो जावै, उणीज रूप सूं हृदय विशाळ हुवतो जावै। दूसरै री मनोवृत्ति समझणै री आपां री सगती बधै है। मोकळा लोगां रा मोकळा दृष्टिकोण रो अेकै सायै संग्रह हुय सकै है। इण मांय सूं ई आपां नै समन्वय री वातां सूझण लागै है। इण तरै सूं आत्मौपम्य रो समभाव आपानै आत्मैक्य तांई ले जावै।

श्रो विश्वात्म्यैक्य ईज आपा रो आखरी ध्येय है। आपा रै हिरदै में जद आखो ससार समा जावै, जणै ई आपां कैय सकां हां कै आ सचराचर सृष्टि म्हारो अेक 'छोटो-सोक' माळियो है। धर्म, अर्थ, काम अर मोक्ष अै च्यारूं पुरुषार्थ विश्वात्मैक्य में समा जावै। 'विश्वात्मैक्य ईज उपनिषदां में बतायोड़ी भूमा है, आो हीज वृहत्तम' ब्रह्म 'यानी "परब्रह्म है।

मैत्रीसाधना में बाकी सगळी साधनावा आ जावै, समा जावै। इणीज कारण तो वैदिक ऋषि गायो है कै आपां सगळा जीवां री तरफ मित्रता री निजर सूं देखां अर सगळा जीव-आपां-सारू-मैत्रीभाव राखै।

इण-मैत्री रै सरू रै रूप-नै समभावण सारू-अद्रोह शब्द वापरचो जावै है। जीयाजूण मे, सगळा जीवधारिया मांय सूं किणी रै सायै आपा नै द्रोह-नही करणो चाहीजै। आ हुवणी चाहीजै, आपणी पैलड़ी चिंता' का -इ-तजारी। इण-नै-ही आपा अहिंसा री साधना कैया करा हा। आपा रै हाथा किणी रो नुकसाण नही हुवै। आपां मन में किणी रो बुरो नही चावा। इण रो ई नाव है अहिंसा। इण भात री गैरी निगराणी रो नांव है, अहिंसा-साधना।

आपणै हाथ सूं काई नहीं हुवणो चाहीजै, आ बतावण-सारू अद्रोह शब्द वापरीज्यो है। किणी रो भलो, ना हुवो, इण भात री हीन इच्छा नै अौर इण भांत

री वृत्ति अथवा प्रवृत्ति नैं कैवै है द्रोह। ईर्ष्या जद भभक उठै, जणां वा द्रोह रो रूप ले लेवै।

आपणै जमानै मे इण द्रोह रो तत्त्व, असबुद्धि रो तत्त्व, इत्ती सूक्ष्म भांत सूं फैलियोड़ो है कै बो उण में किण रूप में घर कर्‌यां बैठचो है ईण नैं आदमी सहज रूप सूं देख ई कोनी पावै। जठै ई थोडो-घणो मतभेद पैदा हुयो कै दूजै मत-आळै सारू पैली तो मन में पारकोपणो पैदा हुवै, उण मूं द्वेष वधण लागै है। आज जठै देखो, वठै ई मतभेद रै रूप मे तिरस्कार और द्वेष ई प्रगट हुयोडो देखण में आवै है। सामलै आदमी नैं धीरज सूं समझणरी अर समझावण री मेहनत कुण करै? जठै पुरुषार्थ ओछो, वठै गुस्सो वेसी। आ हालत सगळै ई देखण नैं मिलै है। इण कारण अेक-दूजै सार्थ सहयोग करण री प्रवृत्ति ओछी हुवती जावै है। सहयोग तो थोडो अर हाका घणा इण भात री स्थिति उत्पन्न हुवण रै कारण जीवन सहयोग ओछो हुवतो जावै है अर समाज रा टुकडा हुवता जावै है। अै सगळी बातां बतावै है कै मैत्री रो प्रचार अर आचार कोसीसा सूं बधावण रा अै दिन है।

जद गांधीजी प्रजा सूं द्रोह करती विदेसी सत्ता रै सामनैं असहयोग करण रो रस्तो बतायो तो उणा जोर देयर कैयो कै असहयोग अेक तेज दवाई है। आ सख्त चीज है। किणी रै सार्थ आपां जे लाबै काल तांई असहयोग करसा तो ओ शस्त्र सांमलै आदमी नांय मूं आपा नै ई घणा फोडा घालसी। (अस्पृश्यता अेक तरै रो बुरो असहयोग ईज हो। इण सूं आपा हरिजना नै अर हिन्दू-समाज रै आदमी नैं, जिको भारी नुकसाण हुयो, उणरो लेखो लेखण री ई हिम्मत आपा में कोनी रैयी। आपां री कायमी अस्पृश्यता हिंदू लोगां रो जित्तो नास करयो है, बित्तो कोई दुसमण ई कोनी कर सकै हो।)

अबै जद स्वराज्य हुय चुकरी है, तो आपां नैं आखी दुनिया सार्थ सहयोग करण री आपणी ताकत नैं पूरी तरै बधारणी चाहीजै। मतभेद हुवतां थका, जित्तो ई सहयोग आपां मूं हुय सकै, बित्तो करणै रो आपणी त्यारी हुवणी चाहीजै। आपां नै याद राखणो चाहीजै कै सहयोग ई आपणो प्रधान धर्म है। मतभेद हुवतां थकां अेक दूजै-सारू आदर राखण सूं ईज इण कर्तव्य रो पालन हुय सकै है।

आपां रै देस मे मोकळा धर्म चालै है। आपां चला नांख्या। आपां आपणै समाज नैं घणै गिणत न्यात-जात में बांट नाख्यो। इण कारण आपणो सामाजिक जीवन भांत-भांत रै बाडां में बांटीजग्यो। मुसळमान, ईसाई, यहूदी, पारसी अर आर्यसमाज ई आपणै देस में न्यारी-न्यारी न्यात-जात जिसा ई हुयग्या है। हिन्दू न्यातां हिंदू हुवण रै

कारण ग्रेक-दूजी नैं कईक ग्रपणावै है। परस्पर सहयोग ग्रादर्श थोड़ी हद तांई ग्रमल मे भी ग्रावै है। दूजै धर्म रै लोगां साथै ग्रापणो सामाजिक व्यवहार इत्तो ई कोनी। दूजै धर्म रै लोगा में जाति-संगठण रा गुण-दोष ग्रायग्या है, ग्रर ग्रै न्यातां तो ग्रापां री इत्ती स्वतंत्र ग्रौर जुदी हुयगी है कै ग्राखै देस री भावनात्मक ग्रेकता ग्रौर राष्ट्रीयता मजबूत करण रै प्रयत्न में इणां कनैं मूं बहोत थोडी मदत मिलै है।

जातिया रा ग्रर धरमा रा न्यारा-न्यारा बाड़ा बणावणैं सूं ग्रापां ग्रापणैं विसाल राष्ट्रीय जीवन री समर्थ ग्रर समृद्ध ग्रेकता रो ग्रनुभव कोनी कर सकां। ग्राज जिकी थोडी-घणी ग्रेकता दीखण में ग्रावै है, वा राजद्वारी ग्रेकता है। ग्रार्थिक व्यवहार में जिको थोड़ो परस्पर संबंध हुवै है, उण नैं भी ग्रेकता में गिणणो हुवै तो गिण्यो जा सकै है।

भारत रै विशाल समाज रा इण भांत रा टुकड़ा हुयग्या कै जांणे कोई महान सरोवर रा छोटा-छोटा नडा-नाडिया बणग्या हुवै।

ग्रेक मोठी बात तो ग्रबै ग्रापां नै समभणी ई पड़सी।

जिकै ई देश में सामाजिक ग्रेकता ढीलो हुय'र कमजोर ग्रर राजद्वारी ग्रेकता प्रधान बणै तो उण समाज नैं ग्रापरी सरकार रै हेठै दबर रैवणो पड़ै। राष्ट्र खातर ग्रा स्थिति कदेई ग्राछी कोनी।

ग्रापां नैं तो राजनैतिक ग्रेकता री ग्रपेक्षा ग्रापणी सामाजिक ग्रेकता नैं ज्यादा मजबूत बणावणी चाहीजै। इण सारू ग्रापां नैं भारत री सगळी सांस्कृतिक-शक्ति सुधार-बधार नैं वापरणी चाहीजै ग्रौर इण तरां जबरदस्त पुरुषार्थ करणो चाहीजै।

जे ग्रापां हरेक काम सरकार सूं करावण री ग्रादत घाल लेसां, तो सरकार री ई प्रतिष्ठा वधसी। पछै इण भांत री सरकार जे कमजोर हुय जावै तो राष्ट्रीय ग्रेकताई सरकार रै मारफत टिक कोनीं सकै। इण वास्तै ग्रबै ग्रापां नै सामाजिक ग्रेकता स्थापित करण रा ग्रर वधावण रा सब तरां रा गैर सरकारी यानी सामाजिक ग्रर सांस्कृतिक प्रयत्न करणा चाहीजै। ग्रो हीज हुसी ग्रापणी मैत्री-भावना रो सगळां सूं बडो मिशन।

जाति-बहुल ग्रर धर्म-बहुल ग्रापणैं देस में हरेक बाडो, हरेक दायरो ग्रापरै ई स्वार्थ री बात विचारै, दूसरै वाड़ा रै बाबत साफ उदासीन रैवै। ग्रा भयानक स्थिति है। हूं तो दुसमणी सूं जित्तो डरूं हूं, उण सूं ज्यादा डरूं हूं उदासीनता सूं, ग्रापसपरी री उपेक्षा सूं। पूरी कोसीस करयां सूं दुसमणाई दूर हुय सकै है, पण उदा-

मीनता दूर करणो तो कोई नें सूझै ई कोनी। आ ही सगळा सूं बडी मुसकल है। अेक-दूजै रै कल्याण री आ बे परवाही कित्ती घातक हुवै, इण री आपां पूरी कल्पना ई कोनी कर सकां। लोग कैया करै है—"आपां तो आपणै घर नै संभळा हां, दूसरां रै भलैबुरै मे आपा तो माथो मारां कोनी इण सूं बेसी री थे कामनाई क्यूं करो हो?

घणी बरिया इण तरै रा लोगां नै हूं पूछ्या करूं कै जठै हरेक बाडो-आपरी आपरी सुरक्षा करणै नै ई संतोष मानै है, सगळै राष्ट्र री, सृष्टि री भलाई रै विसै विचारणै री जिम्मेवारी किण री?

सरकार री? इण रूप सूं हुवै तो सरकार राष्ट्र सूं ई बडी हुय जासी। पछै उण में प्रजातत्त्व अथवा डेमोक्रेसी तो को रैवैनी। फेर उण भात री सरकार में का तो आसी डिक्टेटरशिप (*नादिरशाही*) अर का आसी पार्टीबाजी री सगळी भात री हीनता। जे आपा ने आं दोना दोनां नै दूर करणो हुवै अर सामाजिक राष्ट्रीय जीवन नै शुद्ध, समर्थ, समृद्ध तथा सक्रिय बणावणो हुवै तो मैत्रीभावना नै वधारया ही पार पड़सी।

इण बाबत कोरै प्रचार सूं ई आपा नै सतोष नई मान लेवणो चाहीजै। जे कोई खाली प्रचार करे है तो उणरी प्रतिष्ठा वधै है पण काम करण री सगती कोनी वधै। मैत्रीभावना रो विकास समृद्ध और सक्रिय जीवन सूं हीज हुय सकै है।

आपणै राष्ट्रीय जीवन में, राष्ट्रीय स्वभाव में अर राष्ट्रीय आदर्श में जिका-जिका तत्त्व मैत्रीभावना सारू बाधक नीवडे, उणां सगळां नैं सोध'र दूर करणा पड़सी। ओ काम आपां रै आश्रमां रो है।

आश्रमां री जिन्दगी जीवण-आळा आपा जे समाज सूं न्यारा-जुदा रैया तो आपां री हालत आपां रा मिदरां सिरखी हुय जासी—प्रतिष्ठा आळा पण निर्वीर्य लोग मिंदर में दरसण सारू जावै, अठै माथो टेकै, दक्षिणा देवै अर धर्म नै सरजीवण तथा प्राणवान बणावण री सगळी जिम्मेदारयां इसा मिंदरां माथै (अथवा आश्रमां माथै) ढोळ'र आपणी जड़ता साथै स्वस्थ चित्त हुयर परै पल्या जावै, जाणै अबै उणां आपरो सगळो फरज पूरो कर लियो, आपरै करण जोगो की कोनी रैयो।

आज सूं आपां रै आश्रमां नैं धन अर सत्ता रै लोभ सूं अलिप्त हुयर अर पराई री दाह सूं आपणै आप नै बचायर सेवा सूं, उत्सवां अर सामाजिक पुरुषार्थ री प्रवृत्तियां सूं आखै समाज साथै बिना पक्षपात रै रळ-मिल जावणो चाहीजै।

मैत्रीभावना नैं इण सूं सिद्ध करणी-ओ अेक महान सामाजिक अर

सांस्कृतिक जुगधरम है। जीवन-शुद्धि रै पायै-माथै जद आपां आपणी विराट सहानुभूति नैं सबसूं ऊंची चोटी ऊपर पूगा देसां तो ही मैत्री भावना सिध हुसी।

हूं देखूं हूं कै स्वभाव रा नैं सामाजिक जीवन रा केई दोस पुरुषवर्ग में घणा दीखैं है, वे स्त्री-जाति मे कम है। स्त्रीजाति हृदयधर्म री घणी वफादार रैयी है। इण कारण मैत्रीभावना वधावण रो ओ जुग धरम स्त्री जाति री मारफत ही ज्यादा हुसी अर उण रै हाथा ही इण रो रूप भी बेसी निखरसी।

या देवी सर्वभूतेषु मैत्रीरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

(मूल—काका कालेलकर)

卐